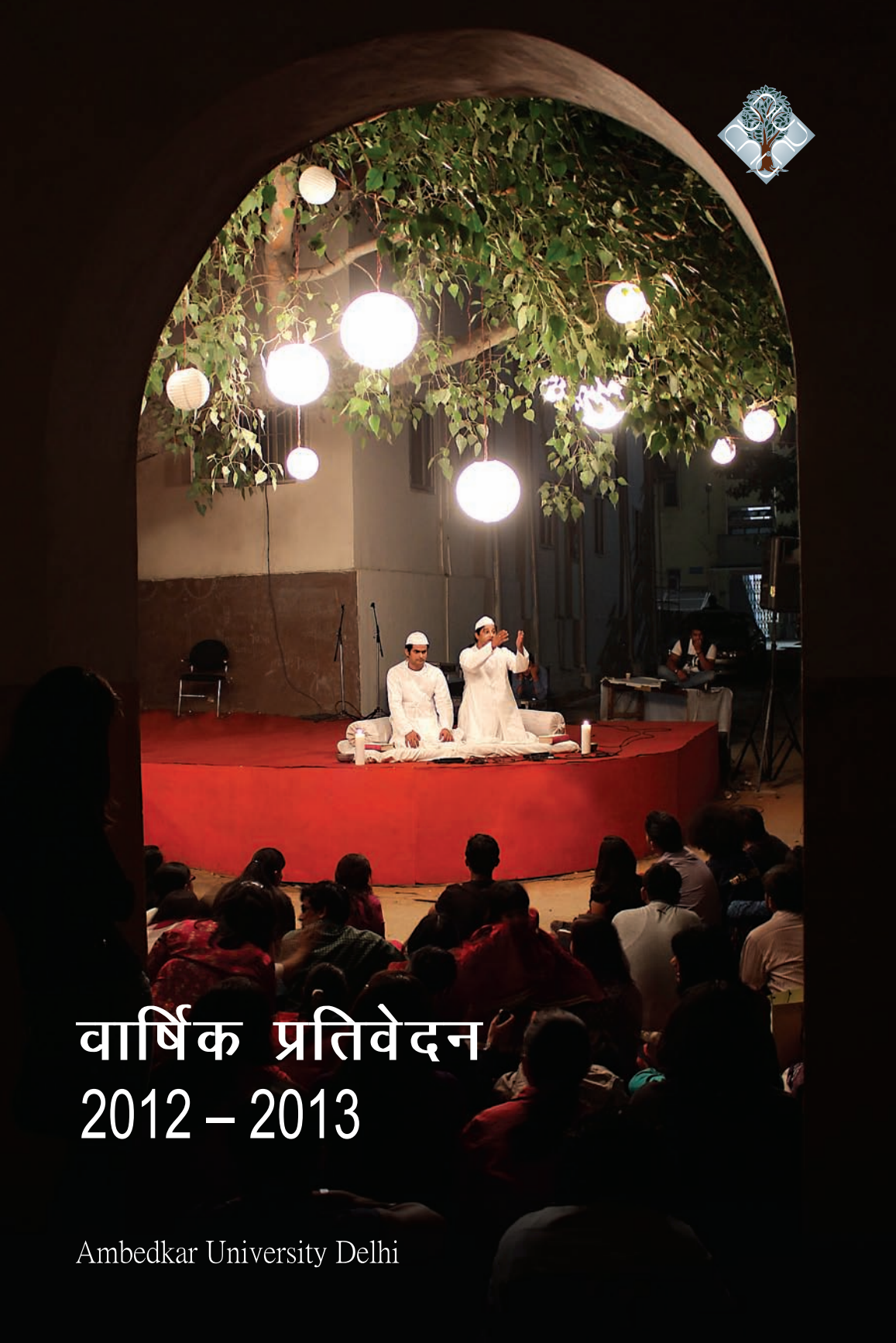

वार्षिक प्रतिवेदन
2012 – 2013

Ambedkar University Delhi

वार्षिक प्रतिवेदन
Annual Report

2012 – 2013

"It is education which is the right weapon to cut the social slavery and it is education which will enlighten the downtrodden masses to come up and gain social status, economic betterment and political freedom"

Dr. BR Ambedkar

Ambedkar University Delhi

Ambedkar University Delhi
अम्बेडकर विश्वविद्यालय दिल्ली

Published by
The Registrar
Ambedkar University Delhi
Lothian Road, Kashmere Gate, New Delhi-110 006

Designed & Printed at
Amar Ujala Publications Limited
C-21, Sector-59, Noida-201301
Website: www.amarujala.com

अंतर्वस्तु

विश्वविद्यालय 5
विश्वविद्यालय निकाय 14
विश्वविद्यालय का विकास 18
संकाय 20
विश्वविद्यालय की अध्ययनशालाएँ 22
विश्वविद्यालय के केन्द्र 52
विश्वविद्यालय की भौतिक परिसम्पत्तियाँ 77
परिशिष्ट–कः 86
परिशिष्ट–खः 90
परिशिष्ट–गः 91
परिशिष्ट–घः 92
परिशिष्ट–ङ.: 93
परिशिष्ट–चः 97
परिशिष्ट–छः 103
परिशिष्ट–जः 159
परिशिष्ट–झः 164
परिशिष्ट–ञः 170

विश्वविद्यालय

भारत रत्न डॉ० भीम राव अम्बेडकर विश्वविद्यालय (अम्बेडकर विश्वविद्यालय, दिल्ली अथवा एयूडी) दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र की सरकार द्वारा 2007 में पारित विधानमंडल के अधिनियम के तहत स्थापित किया गया। इसे जुलाई 2008 में अधिसूचित किया गया। डॉ० अम्बेडकर के विचार समानता और सामाजिक न्याय से निदेशित यह विश्वविद्यालय समाज विज्ञान तथा मानविकी में शोध और अध्यापन पर ध्यान केंद्रित करने के लिये अधिदेशित है। एयूडी उच्च शिक्षा तक पहुँच एवम् सफलता के बीच सतत और प्रभावी संपर्क निर्धारित करने को अपना लक्ष्य समझता है। एयूडी मानवता, गैर–पद्सोपानीकरण, सामूहिक कार्य और सृजनात्मकता को परिपोषित करने के लिये प्रतिबद्ध है। वर्तमान में अंबेडकर विश्वविद्यालय दो अलग–अलग परिसरों से संचालित होता है।

द्वारका परिसर

एयूडी द्वारका परिसर सेक्टर–9 में स्थित है। द्वारका में यह एकीकृत प्रौद्योगिकी संस्थान एवम् राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान के साथ परिसर का सम्मिलित रूप से प्रयोग करता है। इस परिसर में विकास अध्ययन शिक्षालय, मानव पारिस्थितिकी अध्ययन शिक्षालय, व्यवसाय लोक नीति और सामाजिक उद्यमिता अध्ययन शिक्षालय, शैक्षणिक अध्ययन शिक्षालय, आरंभिक बाल शिक्षा और विकास केंद्र, सामाजिक विज्ञान पद्धति केंद्र और साथ ही विश्वविद्यालय की अकादमिक सेवाएँ स्थित हैं। जून 2012 में एयूडी इस परिसर को छोड़कर अपना पूरा कार्य कश्मीरी गेट से संचालित करने लगा है।

कश्मीरी गेट परिसर

एयूडी का कश्मीरी गेट परिसर लोथियन रोड पर स्थित है। इस परिसर में गुरु गोविंद सिंह इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय तथा इंदिरा गाँधी प्रौद्योगिकी संस्थान भी सम्मिलित है। एयूडी का कश्मीरी गेट परिसर अभी अपने विकास के प्रारंभिक चरण में है। विश्वविद्यालय के सभी प्रशासनिक और शैक्षिक अनुभागों को समायोजित करने के लिये इसका व्यापक तौर पर नवीनीकरण कार्य चल रहा है। इस परिसर में फिलहाल संस्कृति और सृजनात्मक अभिव्यक्ति अध्ययन शिक्षालय, मानव विकास अध्ययन शिक्षालय, स्नातक अध्ययन शिक्षालय, ललित अध्ययन शिक्षालय और सामुदायिक ज्ञान केंद्र के साथ–साथ विश्वविद्यालय के एम. फिल और पी. एच. डी. कार्यक्रम मौजूद हैं।

एयूडी का कामकाज

एयूडी अपने विभिन्न संस्थानों और केंद्रों के जरिये कार्य करता है। एयूडी द्वारा अब तक स्थापित संस्थानों में संस्कृति और सृजनात्मक अभिव्यक्ति अध्ययन शिक्षालय, डिजाइन अध्ययन शिक्षालय, विकास अध्ययन शिक्षालय, मानव पारिस्थितिकी अध्ययन शिक्षालय, शैक्षणिक अध्ययन शिक्षालय, मानव अध्ययन शिक्षालय, ललित अध्ययन शिक्षालय और स्नातक अध्ययन शिक्षालय मौजूद हैं। विधि एवम् शासन अध्ययन शिक्षालय शीघ्र स्थापित किये जाने की संभावना है। विद्यमान अध्ययन शिक्षालय स्नातक और स्नातकोत्तर कार्यक्रम संचालित करते हैं। चयनित क्षेत्रों में एम. फिल और पी. एच. डी. कार्यक्रम भी चलाये जाते हैं। स्नातक अध्ययन शिक्षालय सामाजिक विज्ञान, मानविकी, गणितीय विज्ञान और ललित अध्ययन में स्नातक कार्यक्रम का अकादमिक केंद्र है। एयूडी अध्ययन और शोध हेतु कई केंद्र स्थापित करने की प्रक्रिया में है। एयूडी ने पहले से ही आरंभिक बाल शिक्षा और विकास केंद्र, सामुदायिक ज्ञान केंद्र और सामाजिक विज्ञान शोध प्रणाली केंद्र स्थापित किये हैं। भविष्य के लिये नियोजित अन्य केंद्रों में नेतृत्व और परिवर्तन केंद्र, समानता और सामाजिक केंद्र, अभियोजित आध्यात्म और शांति निर्माण, गणित का सामाजिक अनुप्रयोग केंद्र तथा प्रकाशन केंद्र हैं।

वर्तमान में विश्वविद्यालय द्वारा चलाये जा रहे स्नातकोत्तर कार्यक्रम इस प्रकार हैं :–

- एम. ए. विकास अध्ययन (विकास अध्ययन शिक्षालय)
- एम. ए. अर्थशास्त्र (ललित अध्ययन शिक्षालय)
- एम. ए. अंग्रेजी (ललित अध्ययन शिक्षालय)
- एम. ए. पर्यावरण और विकास (पर्यावरण पारिस्थितिकी अध्ययन शिक्षालय)
- एम. ए. इतिहास (ललित अध्ययन शिक्षालय)
- एम. ए. समाज शास्त्र (ललित अध्ययन शिक्षालय)
- एम. ए. मनोसामाजिक नैदानिक अध्ययन (मानविकी अध्ययन शिक्षालय)
- एम. ए. जेंडर अध्ययन (मानविकी अध्ययन शिक्षालय)
- एम. ए. सिनेमाई अध्ययन (संस्कृति और सृजनात्मक अभिव्यक्ति अध्ययन शिक्षालय)
- एम. ए. साहित्यिक कलाः सृजनात्मक लेखन (संस्कृति और सृजनात्मक अभिव्यक्ति अध्ययन शिक्षालय)
- एम. ए. दृश्यकला (संस्कृति और सृजनात्मक अभिव्यक्ति अध्ययन शिक्षालय)
- एम. ए. निष्पादन अध्ययन (संस्कृति और सृजनात्मक अभिव्यक्ति अध्ययन शिक्षालय)

- एम. ए. शिक्षा शास्त्र / एम. एड. (शैक्षिक अध्ययन अध्ययन शिक्षालय)
- एम. ए. व्यवसाय प्रशासन (व्यवसाय लोकनीति एवम् उद्यमिता अध्ययन शिक्षालय)

विश्वविद्यालय ने शैक्षिक सत्र 2012–2013 से निम्न स्नातक कार्यक्रम प्रारंभ किये हैं

- बी. ए. (ऑनर्स) अर्थशास्त्र में मेजर सहित
- बी. ए. (ऑनर्स) अँग्रेजी में मेजर सहित
- बी. ए. (ऑनर्स) इतिहास में मेजर सहित
- बी. ए. (ऑनर्स) मनोविज्ञान में मेजर सहित
- बी. ए. (ऑनर्स) समाजशास्त्र में मेजर सहित
- बी. ए. (ऑनर्स) सामाजिक विज्ञान और मानविकी
- बी. ए. (ऑनर्स) दो मेजर सहित

वर्ष 2011–2012 में एम. फिल. / पी. एच. डी. कार्यक्रमों हेतु 51 छात्रों का नामांकन किया गया था, जबकि वर्ष 2012–13 में यह संख्या बढ़कर 99 हो गयी।

विश्वविद्यालय का दृष्टिकोण

विश्वविद्यालय लिबरल आर्ट्स, मानविकी और सामाजिक विज्ञान पर ध्यान केंद्रित करते हुए उच्च शिक्षा अध्ययनों, अनुसंधान और विस्तार संबंधी कार्यों को प्रोत्साहित करने के लिये प्रतिबद्ध है। यह सामाजिक स्थिरता के साथ–साथ सामाजिक असंतुलन को विश्लेषित करने के लिये प्रयासरत है। साथ ही यह कल्पना करता है कि किस तरह सामाजिक विकास वह परिस्थिति पैदा करे जिसमें हर वर्ग का मनुष्य अपनी क्षमता को पूरी तरह से प्राप्त कर सके।

दर्शन

अम्बेडकर विश्वविद्यालय के दर्शन और विचारों का मूल सिद्धांत समानता, सामाजिक न्याय और उत्कृष्टता निर्माण के लिये प्रतिबद्धता है। एक सार्वजनिक संस्था होने के नाते एयूडी खुद को सामाजिक परिवर्तन के साधन के रूप में देखता है और नागरिक समाज और राज्य के बीच जुड़ाव हेतु सामाजिक कार्यवाही पर ध्यान केंद्रित करता है।

लक्ष्य

विश्वविद्यालय सामाजिक विज्ञान और मानविकी में उत्कृष्ट उच्च शिक्षा का प्रयास करता है। एयूडी का मुख्य लक्ष्य उच्च शिक्षा तक पहुँच एवम् सफलता के बीच सतत और प्रभावी संपर्क निर्धारित करना है। एयूडी मानवता, गैर–पद्सोपानीकरण, सामूहिक कार्य और सृजनात्मकता को परिपोषित करने के लिये प्रतिबद्ध है।

उद्देश्य

विश्वविद्यालय को लिबरल आर्ट्स, मानविकी और सामाजिक विज्ञान पर ध्यान केंद्रित करते हुए उत्कृष्ट व्यापक उच्च शिक्षा के विकास और उसे प्रदान करने का भार सौंपा गया है। यह दूरस्थ और सतत् दोनों ही प्रकार की शिक्षा प्रदान करने के लिये अधिदेशित है। उत्कृष्टता के मानदंडों का अनुसरण करने वाले देश के अन्य विश्वविद्यालयों की तरह इससे विकसित अध्ययनों एवम् अनुसंधान को बढ़ावा देने की अपेक्षा की जाती है, इसके लिये व्याख्यानों, विचारगोष्ठियों, परिसंवादों, कार्यशालाओं और सम्मेलनों का आयोजन करके ज्ञान और प्रक्रिया का प्रसार करने के साथ–साथ भारत और विदेश में मौजूद उच्च शिक्षा संस्थानों के साथ सम्पर्क किये जाने की अपेक्षा है। विश्वविद्यालय से अनुसंधान मोनोग्राफ, शोध प्रबंधों, पुस्तकों, प्रतिवेदनों और पत्रिकाओं को प्रकाशित करने की भी अपेक्षा है। इन सब उद्देश्यों को आगे बढ़ाने के साथ–साथ इससे सांस्कृतिक और नैतिकता संबंधी मान्यताओं को बढ़ावा देने की अपेक्षा की जाती है।

अकादमिक संरचना

एयूडी की संकाय संरचना पूर्णकालिक, नियमित, मुख्य संकाय, अंशकालिक, सहायक और अतिथि संकाय की अनुमति देती है। विस्तार संकाय में वरिष्ठ स्नातकोत्तर और अनुसंधानकर्ता छात्र भी शामिल हैं जो कि अध्यापन सहायक के रूप में कार्यरत हैं। अपने कार्मिकों के बीच संचालन की सहमति को जगाने हेतु ऐसी नई कामकाज की संस्कृति को विकसित किया जाएगा जो कि विश्वविद्यालय के मूल सिद्धांतों और दर्शन को मजबूती दे और उसे सतत बनाये रखने के लिये विश्वविद्यालय यह प्रयत्न करेगा कि इसके सभी कार्य पारदर्शी, व्यवस्थित, उचित एवम् समन्वित ढंग से संचालित किये जाएँ। संविधान द्वारा अधिदेशित आरक्षण प्रावधानों को ईमानदारी से पालन करते हुए विश्वविद्यालय इसके लिये भी प्रयत्न करेगा कि सभी के लिये समान अवसर सुनिश्चित होंगे और विशेष तौर पर भर्ती के समय सक्रिय रूप से जेंडर संवेदनशील नीति को कार्यान्वित किया जा सके।

शिक्षण का माध्यम

एयूडी में शिक्षण का माध्यम अँग्रेजी है तथापि यह योग्यता संबंधी मांग नहीं है कि छात्रों ने एयूडी के ऑनर्स कार्यक्रमों में प्रवेश हेतु अँग्रेजी माध्यम से ही पढ़ाई की हो। एयूडी में आवेदन करने के लिये विभिन्न पृष्ठभूमियों से आये छात्रों को बढ़ावा देने के लिये सर्वोत्तम चार विषयों में प्राप्त अंको की गणना में अँग्रेजी भाषा अनिवार्य नहीं है। अँग्रेजी में विशेष सहायता की अपेक्षा करने वाले छात्रों की पहचान के लिये प्रारम्भ में अँग्रेजी भाषा प्रवीणता परीक्षा आयोजित की जाती है। ऐसे छात्र जो अँग्रेजी भाषा में अनिवार्य क्रेडिट पाठ्यक्रम शुरु करने के लिये सहायता चाहते हैं, उनके लिये अँग्रेजी में एक विशेष संक्षिप्त पाठ्यक्रम और एक प्रारम्भिक वैकल्पिक पाठ्यक्रम चलाया जाता है। इन पाठ्यक्रमों को पढ़ाने के लिये भाषा शिक्षण में विशेष प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों को नियुक्त किया जाता है।

शिक्षण पद्धतियाँ

व्याख्यानों में मुक्त सहचारी तकनीकों को विचार–विमर्शों, अंतः क्रियाओं और संवाद के माध्यम से अनुभव के साथ–साथ ज्ञान की खोज से जोड़ा गया है। कक्षा में प्रत्येक पाठ्यक्रम में सुझाई गई पठन सामग्रियों की शृंखला को व्यापक तौर पर शामिल एवम् विकसित किया जाता है। समेस्टरों एवम् अनुशासनों के सभी विषयों के बीच सेतु स्थापित करने के लिये एक सतत्शील सरोकार और प्रयत्न किया जा रहा है। कक्षाई अनुभव को अधिक सुगम बनाने हेतु विभिन्न माध्यमों जैसे संगीत, फिल्म, कवितायें, कहानियाँ और अनुभव आधारित अभ्यास को शामिल कर उसका प्रयोग किया जाता हैं।

परामर्शदात्री समूह

परामर्शदात्री समूह ऐसा स्थान प्रदान करता है जहाँ छात्र अपनी चिंताओं और आवश्यकताओं को स्पष्ट रूप से कह सकते हैं। यह आनंद और तनाव मुक्ति का ऐसा स्थान है जहाँ छात्र शिक्षकों और सहपाठियों के साथ सामीप्य और मित्रता स्थापित करता है। परामर्शदात्री समूह पीयर अधिगम के साथ–साथ घनिष्ठ, व्यस्त और कार्यशील सामीप्य के आदान–प्रदान का एक प्रभावी स्थान है। इन छोटे समूह व्यवस्था में इन्हें ज्ञान का सह–संरचित स्वरूप और स्वयं की आत्मनिष्ठ समझ दोनों का परिचय मिलता है।

प्रशासन

किसी भी अध्ययन शिक्षालय का प्रशासन उसके रोज़मर्रा का कामकाज देखता है और यह उस अध्ययन शिक्षालय की रीढ़ होता है। एयूडी क प्रशासन इकहरे और स्पष्ट तरीके का अनुसरण करता है। विश्वविद्यालय की स्टाफ संरचना और स्टाफिंग पैमाना पदसोपानीकृत व्यवस्था और सिर्फ हाजिरी देने के स्तर पर कार्य करने की बजाय प्रदर्शन और परिणाम से उपजे अनुभवों के प्रति उत्तरदायी है। विश्वविद्यालय द्वारा लगाये गये अधिकतर कार्मिकों से विविध कार्यों में प्रशिक्षित होने तथा समग्र रूप से सक्षम होने की अपेक्षा है। विश्वविद्यालय अधिकतर वरिष्ठ नियुक्तियों को निर्धारित कार्यकाल पर करने का प्रयत्न करेगा। सभी स्तरों पर संविदा अथवा प्रतिनियुक्ति पर दो तिहाई तथा नियमित नियुक्तियों के रूप में कम से कम एक–तिहाई के अनुपात का सुझाव दिया जा रहा है। विश्वविद्यालय की प्रशासनिक संरचना और पदों से संबंधित नीतियों को हर 3 वर्ष पर समीक्षा किये जाने का प्रावधान है। तथापि प्रारंभिक चरण में संगठन के गतिशील और प्रवाही स्वरूप पर विचार करते हुए प्रशासनिक संरचनाओं और स्थितियों की प्रत्येक 2 वर्ष के बाद समीक्षा की जायेगी।

वित्त

वित्त नियंत्रक की अध्यक्षता में एयूडी का वित्त विभाग विश्वविद्यालय की निधियों का सामान्य पर्यवेक्षण करने तथा इसकी वित्तीय नीतियों के संबन्ध में परामर्श देने के लिये उत्तरदायी है। यह विश्वविद्यालय की संपत्तियों और निवेशों का भी प्रबंधन करता है। यह विश्वविद्यालय के वार्षिक लेखे तथा बजट को तैयार करने और वित्त समिति द्वारा विचार करने के बाद प्रबंधन बोर्ड को प्रस्तुत करने के लिये भी उत्तरदायी है।

विद्यार्थी सेवा

विद्यार्थी सेवा, डीन कार्यालय का गठन विश्वविद्यालय अधिनियम के अंतर्गत प्रावधान 7–A के द्वारा किया गया जो कि ऐसी गतिविधि मुहैया कराती है जिसका सीधा सम्बंध विश्वविद्यालय के विद्यार्थी जीवन से है। इसमें विद्यार्थियों के कल्याण हेतु प्रवेश, छात्रवृत्ति, फीस भुगतान, परामर्श और अन्य गतिविधियाँ शामिल हैं। डीन, विद्यार्थी सेवा इन अधिकारियों के सहयोग द्वारा संचालित है :–

1. डिप्टी रजिस्ट्रार, विद्यार्थी सेवा (रिक्त)
2. सहायक रजिस्ट्रार, विद्यार्थी सेवा

3. कनिष्ठ कार्यपालक
4. कार्यालय सहायक

डीन कार्यालय, विद्यार्थी सेवा मुख्य रूप से निम्न कार्यों को विश्वविद्यालय के विभिन्न संस्थानों के समन्वय द्वारा उपलब्ध करवाता है:

- विभिन्न कार्यक्रमों में छात्रों के नामंकन हेतु प्रवेश प्रक्रिया और कार्यप्रणाली
- प्रवेश इच्छुक छात्रों को सलाह एवम परामर्श देने का प्रावधान
- विद्यार्थी सूचना प्रणाली की देखरेख और संगठन
- छात्रावास में प्रवेश प्रक्रिया
- छात्रों को छात्रवृत्ति, शिक्षावृत्ति और अन्य आर्थिक मदद मुहैया कराना.
- परिसर नौकरियाँ जैसे ट्यूशन और अंशकालिक कार्य उपलब्ध करवाना
- छात्रों को परामर्श, सलाह, जीविका सम्बंधी अवसर एवम् परामर्श देना
- छात्र सम्बंधी संगृहीत अभिलेखों की देखरेख एवम् संगठन
- मूल्यांकन प्रक्रिया के बाद मूल्यांकन को फिर से मूल्यांकित करना
- छात्रों के पहचान पत्र का प्रावधान
- विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह का आयोजन
- छात्रों द्वारा पेश किये गये जाति प्रमाण पत्रों की जाँच करना
- छात्रों के लिये चिकित्सा सुविधाओं का प्रावधान

- चरित्र प्रमाण पत्र / प्रोविजनल / स्थानांतरण प्रमाण सम्बंधी मुद्दे
- अनुसूचित जाति / अनुसूचित जनजाति / अन्य पिछड़ा वर्ग / शारिरिक अक्षम छात्रों के कल्याण के लिये योजना प्रस्ताव लाना
- छात्र नामांकन / उत्तीर्ण छात्र / ड्रॉपआऊट की वार्षिक सांख्यिकी रपट तैयार करना
- उन कार्यों और अभ्यासों तथा शक्तियों का पालन करना जो कि अधिनियम, संविधि और अध्यादेश द्वारा जारी किये गये।

योजना प्रभाग

एयूडी का योजना प्रभाग विश्वविद्यालय के नियोजन और विकास पर ध्यान केंद्रित करता है। योजना प्रभाग फिलहाल कश्मीरी गेट परिसर के विकास का सर्वेक्षण कर रहा है। एयूडी के भावी भवनों के निर्माण की योजना तथा रोहिणी और धीरपुर में आवंटित की जाने वाली भूमि पर परिसर के विकास की भी जिम्मेदारी इसकी होगी। इसके अन्य उत्तरदायित्व हैं :–

- विश्वविद्यालय की संसाधन संबन्धी आवश्यकताओं की योजना बनाना
- वर्तमान में मौजूदा अधिसंरचना को ध्यान में रखते हुए भावी विकास के लिये रोडमैप तैयार करना
- विश्वविद्यालय के प्रकाशनों का पर्यवेक्षण

विश्वविद्यालय निकाय

विश्वविद्यालय के अपने नियामक निकाय है जो कि इसके कार्य संचालन के लिये जिम्मेदार हैं। इन निकायों में विश्वविद्यालय न्यायालय, अकादमिक परिषद, प्रंबधन बोर्ड, वित्तीय समिति और स्थापना समिति शामिल हैं।

न्यायालय

विश्वविद्यालय न्यायालय विश्वविद्यालय का सर्वोच्च प्राधिकरण होता है। यह प्रत्येक वर्ष एक निर्धारित तिथि पर रसीदों और व्यय विवरणों, लेखापरीक्षित तुलना पत्रों और वित्तीय अनुमान के विवरण के साथ पिछले वर्ष के दौरान विश्वविद्यालय के कामकाज की रपट पर विचार करने के लिये एक बैठक करता है। इसे विश्वविद्यालय की समग्र नीतियों और कार्यक्रमों की समीक्षा करने का अधिकार प्राप्त है और विश्वविद्यालय के सुधार और विकास के लिये उपाय सुझाने का अधिकार है।

31 मार्च 2012 की स्थिति के अनुसार न्यायालय के सदस्य हैं :–

श्री तेजेंदर खन्ना (विश्वविद्यालय के कुलाधिपति)
प्रो. श्याम बी. मेनन (विश्वविद्यालय के कुलपति)
प्रो. एस. आर. हाशिम (सरकार द्वारा नामित)
डॉ० किरण कार्णिक (सरकार द्वारा नामित)
प्रो. दीपक नैय्यर (सरकार द्वारा नामित)
प्रो. के. सच्चिदानंद (सरकार द्वारा नामित)
न्यायमूर्ति लीला सेठ (सरकार द्वारा नामित)
प्रमुख सचिव – वित्त (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली)
प्रमुख सचिव – उच्च शिक्षा एवम् टीटीई (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली)
सचिव – कला, संस्कृति और भाषा (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली)
प्रो. नज़ीब जंग (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा नामित)
डॉ० बी. पी. जोशी (रजिस्ट्रारः गुरु गोविंद सिंह इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय)
रजिस्ट्रार – सचिव

प्रबंधन बोर्ड

प्रबंधन बोर्ड विश्वविद्यालय का कार्यकारी प्राधिकरण है और यह विश्वविद्यालय के सामान्य प्रबंधन और प्रशासन का प्रभारी है।

31 मार्च 2012 की स्थिति के अनुसार प्रबंधन बोर्ड के सदस्य हैं :–

प्रो. श्याम बी. मेनन (विश्वविद्यालय के कुलपति)
प्रो. अमृत्य देसाई (सरकार द्वारा नामित)
डॉ० किरण दातार (सरकार द्वारा नामित)
प्रमुख सचिव – वित्त (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली)
प्रमुख सचिव – उच्च शिक्षा एवम् टीटीई (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली)
प्रो. कुरियाकोरस ममकुट्टम (कुलपति द्वारा नामित)
प्रो. अशोक नागपाल (कुलाधिपति द्वारा नामित)
प्रो. चंदन मुखर्जी (कुलाधिपति द्वारा नामित)
रजिस्ट्रार – सचिव

अकादमिक परिषद

अकादमिक परिषद विश्वविद्यालय का प्रधान अकादमिक निकाय होता है। अकादमिक परिषद नियंत्रक और नियामक की भूमिका में होता है और यह विश्वविद्यालय में अनुदेशों, शिक्षा और परीक्षण के मापदंडों की देखरेख के लिये जिम्मेदार है। 31 मार्च 2012 की स्थिति के अनुसार अकादमिक परिषद के सदस्य हैं :–

प्रो. श्याम बी. मेनन (विश्वविद्यालय के कुलपति)
प्रो. ए. के. शर्मा (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा नामित)
प्रो. अशोक चटर्जी (सरकार द्वारा नामित)
प्रो. के. रामचंद्रन (सरकार द्वारा नामित)
डॉ० राजा मोहन (सरकार द्वारा नामित)
डॉ० अनुराधा कपूर (सरकार द्वारा नामित)
डॉ० मैथ्यू वर्गीस (सरकार द्वारा नामित)
प्रो. वनिता कौल (कुलपति द्वारा नामित)

प्रो. हनी ओबरॉय वहाली (कुलपति द्वारा नामित)
प्रो. सलिल मिश्र (कुलपति द्वारा नामित)
प्रो. गीता वेंकटरमण (कुलपति द्वारा नामित)
डीन – ललित अध्ययन शिक्षालय
डीन – मानविकी अध्ययन शिक्षालय
डीन – स्नातक अध्ययन शिक्षालय
डीन – सांस्कृतिक एवम् सृजनात्मक अभिव्यक्ति अध्ययन शिक्षालय
डीन – शैक्षणिक अध्ययन शिक्षालय
डीन – मानव पारिस्थितिकी अध्ययन शिक्षालय
डीन – व्यवसाय, लोकनीति एवम् सामाजिक उद्यमिता अध्ययन शिक्षालय
डीन – विकास अध्ययन शिक्षालय
डॉ० सुमंगला दामोदरन (कुलपति द्वारा नामित)
डॉ० प्रवीण सिंह (कुलपति द्वारा नामित)
रजिस्ट्रार – सचिव

Ambedkar University, Delhi
1st Annual Convocation, 2nd November 2012

विश्वविद्यालय का विकास

2008–2009 के शैक्षिक सत्र में अपना पहला कार्यक्रम विकास अध्ययन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा 13 छात्रों के साथ प्रारंभ किया गया. 2009–10 के सत्र में विश्वविद्यालय ने तीन स्नातकोत्तर कार्यक्रम शुरु किये जिसमें 100 छात्रों को प्रवेश दिया गया। वर्ष 2010–11 में बढ़कर यह संख्या 118 हो गयी। इसके तीन कार्यक्रम निम्न हैं :

- एम. ए. विकास अध्ययन (विकास अध्ययन शिक्षालय)
- एम. ए. पर्यावरण और विकास (मानव पारिस्थितिकी अध्ययन शिक्षालय)
- एम. ए. मनोवैज्ञानिक नैदानिक अध्ययन (मानव अध्ययन शिक्षालय)

शैक्षिक सत्र 2010–11 से विश्वविद्यालय ने अपना पहला स्नातक कार्यक्रम शुरु किया जिसमें 68 छात्रों को नामांकित किया गया। वर्ष 2011–12 में चार और स्नातकोत्तर कार्यक्रम शुरु किये गये। इस प्रकार स्नातकोत्तर स्तर पर 289 छात्रों का नामांकन हो चुका है। वर्ष 2011–12 में शुरु किये गये चार कार्यक्रम निम्न हैं :

- एम. ए. अर्थशास्त्र (ललित अध्ययन शिक्षालय)
- एम. ए. इतिहास (ललित अध्ययन शिक्षालय)
- एम. ए. अँग्रेजी (ललित अध्ययन शिक्षालय)
- एम. ए. समाजशास्त्र (ललित अध्ययन शिक्षालय)

अकादमिक वर्ष 2011–12 में स्नातक अध्ययन शिक्षालय ने मौजूदा पांच कार्यक्रमों में दो अन्य कार्यक्रम बी. ए. (ऑनर्स), गणित और बी. ए. (ऑनर्स) समाजशास्त्र को मुख्य विषय के रूप में शुरु किया गया। इस प्रकार वर्ष 2011–12 में स्नातक कार्यक्रमों में नामांकित छात्रों की संख्या 188 थी।

वर्ष 2012–13 में पांच नये स्नातकोत्तर कार्यक्रम शुरु किये जिसके तहत स्नातकोत्तर स्तर पर 480 छात्रों का नामांकन हुआ।

- एम. बी. ए. (व्यवसाय, लोकनीति एवम् सामाजिक उद्यमिता अध्ययन शिक्षालय)
- एम. ए. सिनेमाई कला (सांस्कृतिक एवम् सृजनात्मक अभिव्यक्ति अध्ययन शिक्षालय)

- एम. ए. निष्पादन आर्ट्स (सांस्कृतिक एवम् सृजनात्मक अभिव्यक्ति अध्ययन शिक्षालय)
- एम. ए. साहित्यिक कला (सांस्कृतिक एवम् सृजनात्मक अभिव्यक्ति अध्ययन शिक्षालय)
- एम. ए. दृश्यकला (सांस्कृतिक एवम् सृजनात्मक अभिव्यक्ति अध्ययन शिक्षालय)

वर्ष 2012–13 में एक पी. एच. डी. कार्यक्रम शुरु किया गया :

- मनोविज्ञान में पी. एच. डी.

वर्ष 2012–13 में दो एम. फिल. अनुसंधान कार्यक्रम शुरु किये गये :

- एम. फिल. महिला एवम् जेंडर अध्ययन
- एम. फिल. विकास आचरण

एयूडी में छात्रों की वृद्धि

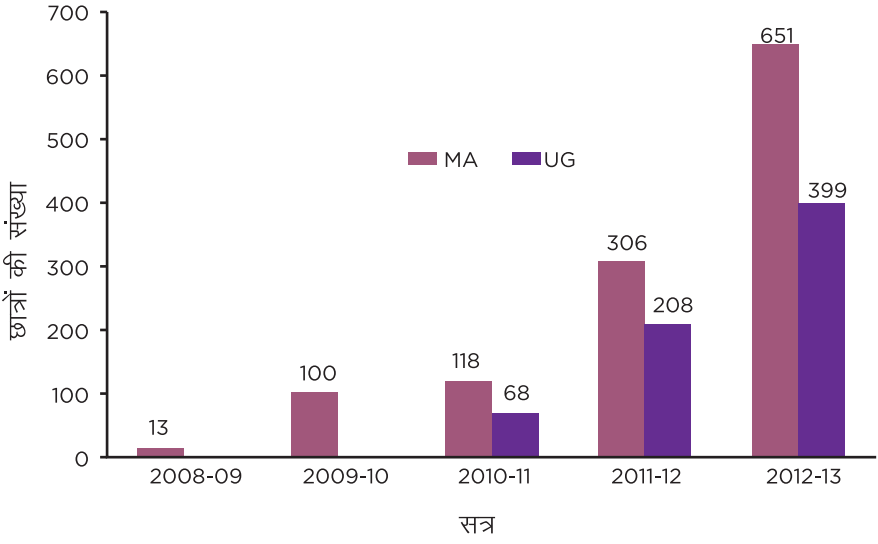

अकादमिक सत्र 2012–13 में 7 स्नातक कार्यक्रम चल रहे थे जिसमें 320 छात्रों का नामांकन हुआ। वर्ष 2008–09 में नामांकित छात्रों की कुल संख्या 13 थी जो कि 2012–13 में बढ़कर 899 तक हो गयी। जिसमें 80 छात्र पी. एच. डी. और 69 छात्र एम. फिल. के भी शामिल हैं।

संकाय

एयूडी में भर्ती नियोजन एक बारगी का कार्य न होकर एक सतत प्रक्रिया है । एयूडी के उच्चस्तरीय अर्हता प्राप्त अध्यापन संकाय को भारत एंव विदेश के सर्वोच्च अकादमिक संस्थानो से लाया गया है। इन्होंने अपने अध्यापन एवम् अनुसंधान उत्कृष्टता के रिकार्डो को साबित किया है और साथ ही विश्वविद्यालय में बहुआयामी अनुशासन की सर्वोच्च संयोजन एंव उर्जा लेकर आए हैं। एक अद्वितीय संस्थानिक व्यवस्था मे संकाय सदस्य विभिन्न संस्थानो मे समवर्ती रुप से पढ़ाते हैं जिससे प्रत्येक अध्ययन कार्यक्रम मे बेहतर गहरी समझ उपलब्ध हो पाती है। अध्यापन और अनुसंधान के क्षेत्र मे हमारा संकाय विश्वविधालय की जरुरतों को पूरा करने मे लगातार विकास कर रहा है । वर्तमान मे एयूडी मे 11 प्रोफेसर, 19 सहायक प्रोफेसर, 62 सहयोगी प्रोफेसर, 21 अतिथि संकाय, 12 अकादमिक फेलो और 8 अनुसंधान सहयोगी हैं।

एयूडी में संकाय सदस्यों में वृद्धि

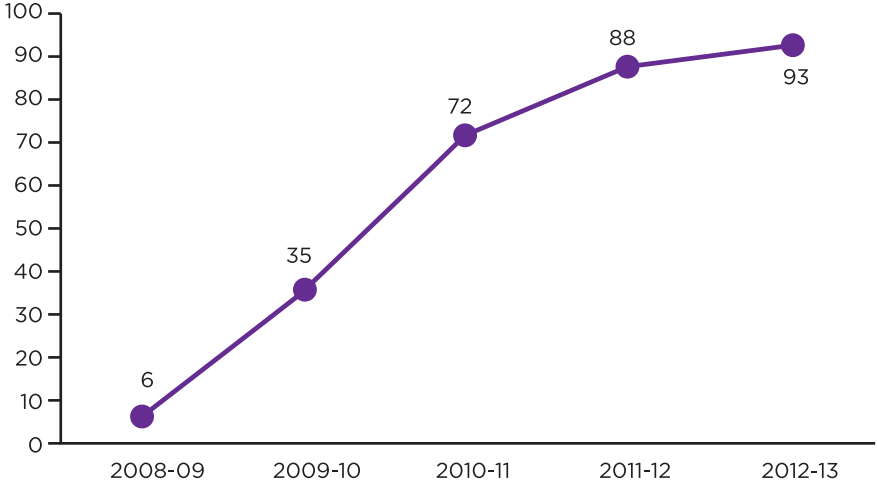

विश्वविद्यालय की अध्ययनशालाएँ

एयूडी अपनी अध्ययनशालाओं और केंद्रों के जरिये कार्य करता है। एयूडी की संस्थापित अध्ययनशालाएँ इस प्रकार हैं :–

- व्यवसाय, लोकनीति एवम् सामाजिक उद्यमिता अध्ययन शिक्षालय (एसबीपीपीएसई)
- संस्कृति एवम् सृजनात्मक अभिव्यक्ति अध्ययन शिक्षालय (एससीसीई)
- डिजाइन अध्ययन शिक्षालय (एसओडी)
- शैक्षणिक अध्ययन शिक्षालय (एसईएस)
- मानव पारिस्थितिकी अध्ययन शिक्षालय (एसएचई)
- मानविकी अध्ययन शिक्षालय (एसएचएस)
- ललित अध्ययन शिक्षालय (एसएलएस)
- स्नातक अध्ययन शिक्षालय (एसयूएस)

अध्ययन के पाठ्यक्रमों में वृद्धि

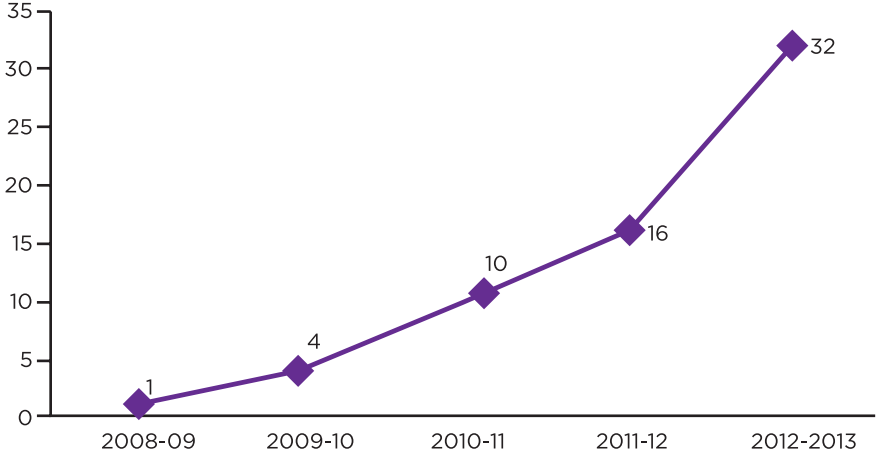

व्यवसाय, लोकनीति एवम् सामाजिक उद्यमिता अध्ययन शिक्षालय (एसबीपीपीएसई):

व्यवसाय, लोकनीति एवम् सामाजिक उद्यमिता अध्ययन शिक्षालय की स्थापना प्रबंधन, लोकनीति और सामाजिक उद्यमिता में अनुसंधान को बढ़ावा देने तथा व्यावसायिक शिक्षा एवम् प्रशिक्षण उपलब्ध कराने हेतु किया गया। एसबीपीपीएसई समाज और अर्थव्यवस्था के व्यापक संदर्भ में व्यापार एवम् लाभ को समग्रता के साथ विकसित करने की एक कोशिश है। जुलाई 2012 से अब तक इस संस्थान ने दो वर्षीय (पूर्णकालिक) व्यवसाय प्रशासन में स्नातकोत्तर (एमबीए) शुरु किया और आने वाले 3 से 5 वर्षों के भीतर लोक प्रशासन में और सामाजिक उद्यमिता में स्नातकोत्तर शुरु किये जाने की योजना है।

अकादमिक कार्यक्रम

दो वर्षीय (पूर्णकालिक) एमबीए :

पूर्णकालिक एमबीए कार्यक्रम का उद्देश्य भावी प्रबंधकों को व्यावसायिक शिक्षा देना तथा पहले से प्रैक्टिस में लगे हुए कार्मिकों के ज्ञान और दक्षता का उन्नयन करना है और खासकर सामाजिक क्षेत्र में नये उद्यमों को शुरु करने के लिये सहभागियों में अभिप्रेरण एवम् कौशलों का विकास करना है। यह कार्यक्रम सामाजिक–आर्थिक मुद्दों पर संवेदना जगाने के साथ–साथ उद्यम सृजन (रोजगार उत्पादन) की महत्ता पर जागरूकता उत्पन्न करने तथा भावी/मौजूदा प्रबंधकों को कार्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी के मुद्दों का ज्ञान व व्यावसायिक कौशल प्रदान करते हुए अर्थ उत्पादन के साथ–साथ अर्थ प्रबंधन पर भी समान रूप से ध्यान केंद्रित करेगा।

दो वर्षीय पूर्णकालिक एमबीए कार्यक्रम की पाठ्यचर्या प्रबंधन में शिक्षा अद्यतन विकासों को शामिल करते हुए नवीन पाठ्यक्रम संरचना पर आधारित है। पाठ्यचर्या पर मुख्य जोर देते हुए वृहत समाज और अर्थव्यवस्था के समग्र परिप्रेक्ष्य के अंतर्गत व्यवसाय और लाभ के लिये इसका दृष्टिकोण इस कार्यक्रम की विशिष्टता है। इस पाठ्यचर्या को इस प्रकार तैयार किया गया है कि छात्र अपने आस–पास के वातावरण के बारे में किस प्रकार सोचते, समझते एवम् महसूस करते हैं उसमें आमूल परिवर्तन लायें।

कार्यक्रम के प्रथम वर्ष में पाठ्यचर्या में समाज, अर्थव्यवस्था, व्यवसाय के वैश्विक संदर्भ, नैतिकता और मूल्य, वैयक्तिक विकास और नेतृत्व, व्यवसाय प्रबंधन के मूल तत्व, लोकनीति

और सामाजिक उद्यमिता आदि विषयों को समेटा जायेगा। ग्रीष्मकालीन अवकाशकाल के दौरान छात्रों को 8–10 हफ्तों के एक प्रशिक्षण से गुजरना होगा। द्वितीय वर्ष के दौरान छात्रों को कार्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी, अंतरवैयक्तिक एवम् समूह प्रक्रियाएँ, अंतरराष्ट्रीय व्यवसाय वातावरण और व्यवसाय नीति एवम् रणनीतिक विश्लेषण से अलग एक इलैक्टिव चुनना होगा। अध्ययन के दौरान एमबीए के सभी छात्रों को एक अतिरिक्त विदेशी भाषा सीखनी होगी।

कार्यक्रम की विषयवस्तु और इसकी पेडागोजी इस बात को सुनिश्चित करेगी कि ज्ञान और कौशलों की कला प्रदान करते समय मूल्यों और नैतिकता पर पर्याप्त जोर दिया जायेगा। सैद्धांतिक संकल्पनाओं और व्यावहारिक कौशलों को सीखने का वातावरण निर्मित करते हुए यह कार्यक्रम सॉफ्ट स्किल्स की महत्ता के विषय में जागरूकता निर्मित करेगा।

प्रकाशन में एक वर्षीय पीजी डिप्लोमा

अध्ययन शिक्षालय ने जुलाई 2013 में एक वर्षीय पीजी डिप्लोमा कार्यक्रम प्रस्तावित किया है। इस कार्यक्रम को "प्रकाशन के विभिन्न आयामों में संक्षिप्त एवम् दीर्घकालिक कार्यक्रम" के तहत क्रियान्वित करने के लिये एयूडी और एनबीटी द्वारा सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किया गया है। प्रकाशन उद्योग में लगातार होते हुए परिवर्तन को देखते हुए यह कार्यक्रम इतना महत्वपूर्ण है कि 21वीं सदी के उभरते प्रकाशकों के साथ–साथ यह 21वीं सदी के मौजूदा प्रकाशक व्यवसायी को भी "पुनः प्रशिक्षित" कर सकेगा। प्रकाशन मे "व्यवसाय" तत्व की महत्ता बढ़ने के साथ यह भी ध्यान योग्य बात है कि यह निरंतर परिवर्तित उद्योग उत्कृष्टता की ओर बढ़ रहा है जैसा कि पहले कभी नही था । इसके अंत मे एयूडी ऐसे प्रोफेशनल्स की जमात रचने का लक्ष्य रखेगा जो कि उतने ही कुशल होंगे जितने कि उद्यमकर्ता होते हैं। ऐसी आशा की जा रही है कि यह कार्यक्रम प्रकाशन मे जीविका क्षमता और नए व्यवसाय अवसर के रुप मे अतिरिक्त मूल्य जनित करेगा ।

प्रकाशन मे एक वर्षीय पीजी डिप्लोमा का उदेश्य है कि यह ऐसे बेहतर दक्ष व्यवसायिकों का सृजन करे जो कि प्रकाशन मे अपना पेशा बनाना चाहते हैं। यह कार्यक्रम इतना संरचित है जिससे प्रकाशन का हर व्यवसायी चाहे वह प्रबंधन, प्रकाशन, बिक्री, पदोन्नित, सम्पादकीय, डिजाइन, उत्पादन, वितरण, तकनीकी सहायक हो या किसी अन्य भूमिका मे हो, इस तरह से यह समझ उत्पन्न करेगा कि हर व्यवसायी यह जान पाए कि वह सभी हिस्सो को कैसे एक साथ जोड़ पाएगा। यह कार्यक्रम एसे छात्र चाहता है जिन्हें वो ऐसे

व्यवसायों में प्रशिक्षित करे जो कि पुस्तक प्रकाशन मे इसलिए कार्य करना चाहते हैं क्योंकि वह समाज मे किसी खास पुस्तक के प्रकाशन के महत्व को समझते हैं तथा यह समझते हैं कि उनका कार्य अन्य लोगो की जिंदगी पर एक यथार्थ प्रभाव डाल सकता है और जो यह पहचान लेते हैं कि उनका हर नई पुस्तक पर किया गया कार्य उन्हें साहित्यिक रुप से अधिक समय तक जीवित रख सकता है।

प्रंबधन विकास कार्यक्रम

एसबीपीपीएसई द्वारा राष्ट्रीय पुस्तक न्याय के वरिष्ठ अधिकारियो के लिए "नेतृत्व कौशल" पर एक दो दिवसीय प्रंबधन विकास कार्यक्रम इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में 9–10 मार्च 2012 को आयोजित किया गया था।

इस कार्यक्रम को प्रो. श्याम बी. मेनन (कुलपति, अम्बेडकर विश्वविद्यालय) और श्री एम. ए. सिकंदर (निदेशक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास) द्वारा उद्घाटित किया गया और आरंभिक टिप्पणी दी गई।

अनुसंधान

एसबीपीपीएसई ने सामुदायिक केंद्र के परामर्श के द्वारा एक अध्ययन "एंटरप्रेन्यूरियल वेंचर्स : इंटरफेस विद लोकल कम्युनिटीजः ए केस स्टडी ऑफ मध्य प्रदेश" को पूरा किया है। यह अध्ययन उस समझ को विकसित करने की कोशिश है जो प्रवासी समुदाय के मनो– सामाजिक चित्रण की समझ और उन सामाजिक– आर्थिक एवम् पर्यावरणीय कारकों को उजागर करेगा जो कि उद्यमिता के जोखिम को सफल बनाते हैं।

सहयोग

संकाय और छात्रों के विनिमय को समर्थ बनाने हेतु एक सहमति पत्र एयूडी और सेनफ्रांसिस्को स्टेट यूनिवर्सिटी के बीच तथा अन्य सहमति पत्र नार्थम्पटन यूनिवर्सिटी, यूके के बीच हस्ताक्षरित किया गया। यह संस्थान अंतरराष्ट्रीय सहयोग के लिए अन्य विश्वविद्यालयों के साथ भी चर्चा कर रहा है ।

संस्कृति एवम् सृजनात्मक अभिव्यक्ति अध्ययन शिक्षालय (एससीसीई):

शैक्षिक वर्ष 2012–13 में संस्कृति एवम् सृजनात्मक अभिव्यक्ति अध्ययन शिक्षालय (एससीसीई) ने (1) फिल्म स्टडीज (2) निष्पादन स्टडीज (3) विजुअल आर्ट्स (4) लिटरेरी

आर्ट, क्रियेटिव राइटिंग जैसी चार विशेषज्ञताओं के साथ स्नातकोत्तर कार्य्रक्रम शुरु किया है। ये कार्यक्रम शोधोन्मुखी एवम् प्रयोगात्मक अभ्यास पर ध्यान केंद्रित करता है जो ऐतिहासिक और सैद्धांतिक ज्ञान से इतर समालोचनात्मक पठन एवम् अभ्यास के लिये आवश्यक है। साथ ही यह कार्यक्रम सृजनात्मकता से संबंधित क्षेत्रों में भी ज्ञान और कौशलों को प्रदान करता है।

साहित्यिक कला :

यद्यपि साहित्य का अध्ययन जिसमें भारतीय क्षेत्रीय साहित्य के विषय भी शामिल हैं, भारत में कई विश्वविद्यालयों में उचित रूप में विकसित हुआ है। फिर भी वर्तमान में किसी भी भारतीय विश्वविद्यालय में एक भी ऐसा एकीकृत पेडागोजिक कार्यक्रम उपलब्ध नहीं है जो उभरते हुए छात्रों को सृजनात्मक लेखन के साथ–साथ अनुवाद और संपादन में भी प्रशिक्षित कर सके। हालांकि कुछ पहलुओं को साथ लेकर आंशिक स्तर पर कहीं कुछ प्रयोग हुए हैं, पर वे सफल नहीं हो पाये। एक ऐसे ही अन्वेषण की कोशिश स्कूल ऑफ लेटर्स, एम.जी. यूनिवर्सिटी, कोटय्यम केरल में की गयी थी। उसके स्नातकोत्तर कार्यक्रम को सही अर्थों में द्विभाषाई पाठ्यक्रम अँग्रेजी एवम् मलयालम के रूप में कल्पित किया गया था और यदि सृजनात्मक लेखक उपलब्ध न करवा पाया जाता तब भी इसे द्विभाषाई स्कॉलर्स एवम् क्रिटिक्स और तुलना सापेक्षता को निर्मित करने के लिये कल्पित किया जाता। फिर भी अनुवाद और सृजनात्मक लेखन आपस में गहरे तौर पर जुड़े हैं जैसे अनुवाद अनुसृजन भी है और ये इन दोनों को आपस में जोड़ने का आधार है। इससे भी आगे सृजनात्मक लेखन या अनुवाद जैसे क्षेत्र सामान्य रूप से भाषा और साहित्य विभाग में ही सम्मिलित होते हैं या फिर कलात्मक और सृजनात्मक रूप से अपने को अभिव्यक्त और विकसित नहीं कर पाते या फिर अन्य कलात्मक अभिव्यक्तियों के साथ अंतर्क्रिया में नहीं होते।

उपरोक्त संदर्भ को देखें तो साहित्यिक कला में स्नातकोत्तर कार्यक्रम को इस प्रकार रचा गया है जो कि छात्रों को न सिर्फ कला के किसी भी एक क्षेत्र में प्रशिक्षित करे बल्कि यह एक ऐसा पाठ्यक्रम हो जो साहित्यिक एवम् इसके विभिन्न सामाजिक–राजनीतिक पहलुओं की गहरी समझ विकसित करने में मदद करे।

निष्पादन स्टडीज :

भारत में निष्पादन शिक्षा और पेडागोजी के अंतर्गत सृजनात्मक अभिव्यक्ति एक गंभीर कमी के रूप में मौजूद है। पहला, निष्पादन आर्ट्स के क्षेत्र में यहाँ एक भी विश्वविद्यालय स्तर का संस्थान मौजूद नहीं है जो निष्पादन के सभी पहलुओं जैसे संगीत, नृत्य, रंगमंच, कठपुतली आदि क्षेत्रों में काम करता हो। उदाहरण के लिये संगीत या नृत्य विभाग जो कि हमारे संदर्भ में परंपरागत शैली में पढ़ाते हैं वे अलगाव झेल रहे हैं और निष्पादन के अन्य पहलुओं से जुड़े अन्य विभागों के साथ अंतर्सम्बंधित नहीं है। ऐसे संस्थान जो कि किसी विशिष्ट क्षेत्र में पारंगत हैं जैसे राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय वो मुख्य रूप से रंगमंच के लिये कार्य करता है और ये निष्पादन के अन्य क्षेत्र जैसे संगीत और नृत्य पर कम ध्यान केंद्रित करता है तथा उनके द्वारा निष्पादन के विषयक्षेत्र को सिर्फ ड्रामा तक सीमित कर दिया जाता है। दूसरा, निष्पादन के विशिष्ट क्षेत्र में अभ्यास सामग्री या संग्रह (उपलब्ध विरासत, उभरते अभ्यास और इसके बहु प्रकार) के बीच एक गंभीर रिक्ति है और यह विश्लेषण की पद्धति, मूल्यांकन और तुलना में अपने मूल रूप से अभ्यास से आगे नहीं बढ़ी है। दूसरे शब्दों में परंपरागत व्याकरण होता गया और जो मौजूद है वह विशिष्ट संदर्भों में पहुंच से बाहर है। उपरोक्त स्थिति के मद्देनजर एक ऐसे स्थान के विकास की जरूरत है जहाँ निष्पादन व्याकरण विश्लेषण की पद्धति को प्रस्तुत किया जा सके साथ ही अकादमिकों, परफोर्मर्स और छात्रों को एक साथ जोड़ते हुए एक पेडागोजी को विकसित किया जा सके। तीसरा, समकालीन समय में निष्पादन अभ्यास को रूपविधान, क्षेत्र, देश और रूढ़ीगत रिवाजों की सीमाओं से परे अपने को प्रतिबिंबित करती है। साथ ही अपनी देशज परंपराओं की जड़ों से भी गहरे तौर पर जुड़ी रहती है जो कि नियमित तौर पर समालोचनात्मक अकादमिक चर्चाओं में चर्चा का विषय बामुश्किल ही बन पाता है। इन्हीं उपरोक्त संदर्भों में संस्थान के अंतर्गत नई निष्पादन आर्ट्स के पेडागोजी की प्रासंगिकता है।

फिल्म स्टडीजः

फिल्म स्टडीज कार्यक्रम भारतीय संदर्भों में फिल्म सिद्धांत, सिनेमा का विकास, सिनेमा का इतिहास और वंशावली तथा क्षेत्रीय सिनेमा पर विशेष रूप से जोर देगा। एक तरफ यह कार्यक्रम क्षेत्रीय मूल्यों और भाषा संस्कृति की विजातीयता के साथ जुड़ेगा तो दूसरी तरफ अधिक बोधगम्य और गैर प्रभुताकारी भारतीय और विश्व सिनेमा के इतिहास को सम्मिलित कर सकेगा। यह रोजमर्रा की जिंदगी पर सिनेमा के प्रभाव और इसके राजनैतिक प्रभावों की छानबीन करने की अनुमति देगा। इसका मुख्य जोर सीमांतकारी क्षेत्रों जैसे लैटिन अमेरिका, अफ्रीका और एशियाई सिनेमा की उभरती हुई परंपराओं के अंतर्गत होगा। छात्रों

को बदलते सिनेमाई कला अभ्यास में निपुण करने के लिये वैश्विक संपर्क सिनेमाई अभ्यास और सैद्धांतीकरण दोनों में ही नये विकास को प्रस्तुत किया जा रहा है।

एयूडी की अतिथि संकाय योजना का हिस्सा होने के नाते यह अध्ययन शिक्षालय सप्ताह में दो बार एक्स्ट्रा करिक्युलर कार्यक्रमों को आयोजित करता है जिसमें फिल्म निर्माता, कलाकार, स्कॉलर्स और सिद्धांतकार शामिल होते हैं, जो कि अपना कार्य प्रस्तुत करते हैं और संकाय के साथ चर्चा करते हैं। इसमें प्रो. मोनेक बिस्वास, शीबा छाछी, अमुधन आर. पी., प्रो. अनुराधा कपूर, सुमेध राजेंद्रन, राहुल रॉय, रिंतू थॉमस, सुश्मित घोष, इश्मुद्दीन खान और अन्य कई लोग शामिल हैं। वर्तमान अकादमिक वर्ष में इस अध्ययन शिक्षालय ने दो फिल्म समारोह "ग्लोबल शॉर्ट फिल्म्स" एवम् "लैटिन अमेरिकन सिनेमा" को आयोजित किया है। अध्ययन शिक्षालय ने एसएलएस के साथ मिलकर सहादत हसन मंटो की जन्मशती के स्मरण उत्सव पर एक समारोह पैनल चर्चा, निष्पादन, रीडिंग्स, फिल्म स्क्रीनिंग, पोस्टर बनाना, कला कार्यशिविर आदि को एक साथ आयोजित किया। अध्ययन शिक्षालय ने लैटिन अमेरिकन संस्कृति का उत्सव मनाने हेतु "अटलांटिक क्रॉसिंग : रूट्स ऑफ लैटिन अमेरिकन कल्चर" के नाम से एक सप्ताह लम्बा समारोह पैनल चर्चा, फिल्म स्क्रीनिंग और कला कार्यशिविर आयोजित किया।

एक अभिनव अकादमिक अभ्यास होने के नाते अध्ययन शिक्षालय समेस्टर के अंत में एक खुली मौखिक परीक्षा संचालित करता है और छात्रों की कलात्मक प्रदर्शनी भी आयोजित करता है। अध्ययन शिक्षालय ने इतिहासकार श्री सोहेल हाश्मी के साथ कश्मीरी गेट, दिल्ली से एक इतिहास ट्रिप का आयोजिन किया और किरण नादर कला संग्रहालय, साकेत दिल्ली के लिये शिक्षा भ्रमण का भी आयोजन किया।

अध्ययन शिक्षालय ने इंडिया फाउंदेशन फॉर दी आर्ट्स के सहयोग के साथ अक्तूबर में एक हफ्ते चलने वाले कार्यशिविर का आयोजन किया था जिसकी थीम "क्यूरेटिंग इंडियन विजुअल कल्चर': थ्योरी एंड प्रैक्टिस" थी और इसका मुख्य केंद्र बिंदु" आर्टिस्टिक प्रोडक्शन एंड क्वेस्चन ऑफ रीजन एंड आईडेन्टिटीः क्यूरेटीयल प्रोपोजिशंस" था। इसमें देश भर से आये 14 छात्रों, मुख्य संग्रहाध्यक्ष और रिसोर्स पर्सन के रूप में कला इतिहास / आलोचक भी थे जिसमें डॉ. चैतन्य सम्बरानी, गीता कपूर, डॉ. दीप्था अचर, प्रो. सूजी थारू, डॉ. मंजीत बरुआ, विद्या शिवदास आदि शामिल थे।

डिजाइन अध्ययन शिक्षालय (एसओडी):

एयूडी का डिजाइन अध्ययन शिक्षालय अपनी संकल्पना में अद्वितीय है। यह भारत में पहली बार है जब डिजाइन शिक्षा को सांस्थानिक रूप में स्थापित किया गया और उसे मानविकी तथा समाज विज्ञानों के साथ जोड़ा गया है। अध्ययन शिक्षालय ने मानविकी और समाज विज्ञान विश्वविद्यालयों के अंतर्गत इसकी अलग अवस्थिति को सामाजिक जटिल मुद्दे, जरूरत और क्षेत्रों के डिजाइन के सहज गुणों के साथ सम्मिलित किया है। वस्तु केंद्रित डिजाइन को "सामाजिकता" की ओर पुनः निर्धारित करने की ओर ध्यान दिया गया है। एसओडी ने नये उत्पादों, सेवाओं, प्रणालियों, संबंध और दृश्यविधान के जरिये बेहतरीन, अवगतपूर्ण, संवेदनशील, सशक्त और संतुलित समुदायों को सृजित करने को प्रस्तावित किया है। यह व्यवस्था डिजाइन अध्ययन और अभ्यास को लगातार परिवर्तनशील बहुआयामी चुनैतियों और गहन रूप से स्थानीय एवम् वैश्विक दृश्यपटल पर अंतःसम्बद्ध होते हुए पुनः स्पष्ट रूप से देखने का अवसर प्रदान करती है। साथ ही साथ ड़िजाइन अध्ययन शिक्षालय डिजाइन के जरिये एयूडी की अनिवार्यताओं को सामाजिक कार्यवाही के तहत समताकारी और सतत् समाज बनाना चाहता है।

हम इसे एक अवसर के रूप में देखते हैं जो कि मौजूदा डिजाइन अध्यापन और अभ्यास विशिष्टीकरण के अंतर्गत प्रश्न उभारे, विश्वभर के प्रचलित पाठ्यक्रम संरचना को परखे और भारतीय संदर्भ में डिजाइन की वृहत भूमिका और संभावना को अवलोकित करे। अध्ययन शिक्षालय राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली पर मुख्य रूप से ध्यान केंद्रित करते हुए ऐसे छात्रों को तैयार करेगा जो नई सेवाओं, व्यवस्थाओं, उत्पादों, अंर्तसम्बंधित और उद्यमिताओ की चुनौतियों के मद्देनजर उन्हें जोड़ सके।

एसओडी को अभ्यास और शोध आधारित ऐसे अध्ययन शिक्षालय के रूप में कल्पित किया गया है जो कि स्नातक स्तर से एम. फिल./पी. एच. डी. तक शिक्षा जारी रखने की अनुमति देता है। इसके अंतर्गत सामाजिक डिजाइन, सेवा डिजाइन, डिजाइन समालोचना, डिजाइन सिद्धांत, डिजाइन इतिहास और अन्य संबंधित क्षेत्रों में स्नातकोत्तर कार्यक्रमों के साथ–साथ स्नातक कार्यक्रम और एम. फिल./पी. एच. डी. को शुरु किया जायेगा।

जुलाई 2013 से डिजाइन अध्ययन शिक्षालय ने अपना पहला कार्यक्रम सामाजिक डिजाइन में एम. ए. शुरु कियाः

इसके कार्यक्रमों, परियोजनाओं और शोध गतिविधियों को मजबूत करने के लिये एसओडी ने दो अलग–अलग पहल की है––

(1) भावी प्रयोगशाला के रूप में प्रोजेक्ट स्टूडियो निर्मित करना
(2) कौशलों, क्राफ्टस, बहुभाषी सामग्री अभिव्यक्ति केंद्र

1. भावी प्रयोगशाला के रूप में परियोजना स्टूडियो वास्तविक जीवन और स्वतः स्फूर्त विभिन्न परियोजनाओं का व्यापक प्रासंगिक दायरे में डिजाइन की क्षमता और मूल्य के निरूपण के लिये जिम्मेवारी लेगा। यह भावी प्रयोगशाला विश्वविद्यालय के अभिसरण गढ़ के रूप में कार्य करती है और उस वैचारिक नेतृत्व और नीति प्रभाविता को उपलब्ध कराती है जो कि समता, सुलभता, भागीदारी, समावेशन और अवसरों के मूल्य के रूप में उभरते और प्राथमिक परिदृश्यों को दर्शाने के लिये एयूडी की विभिन्न अध्ययनशालाओं के बीच शोध सहयोग पर आधारित है।

2. कौशल, क्राफ्टस, बहुभाषी सामग्री अभिव्यक्ति केंद्र भारतीय समुदायों, समाजों और अर्थतंत्रों में कौशल मूल्यों को सम्बोधित करेगा। सही मायनों में ये कौशल समुदाय हमारी सामजिक व्यवस्था की ताकत है, हमारे निकायों, खानपान और भौतिक संस्कृति को आकारित करता है, एक स्वायत्त और स्थानीयता का सृजन करते हुए हमें हमारी पहचान देता है और अक्सर यह हैबीटेट, वस्तुओं और असल में पूर्ण पारिस्थितिकी के उत्पादन की एक सतत् व्यवस्था के रूप में है। शहरी व्यवस्था, सेवाएँ और कार्य नाना–प्रकार के कौशल समूह द्वारा आधिपत्य रूप में पेश किये जाते हैं जो कि उपेक्षित किये गए हाशिये या वंचित क्षेत्रों से लिये गये हैं। अक्सर इन कौशल समूह की जड़ें प्रवासी और परंपरा संग्राहकों और ग्रामीण वातावरण के बीच आत्मसात किये जाने से सांस्कृतिक आनुवंशिकता से बाहर उभर आती हैं। हजारों साल से यही कार्य करने के बावजूद हुनरमंद (कौशल से सम्पन्न) हमारे सर्वव्यापक अर्थतंत्र के केंद्र में नहीं आ पाये हैं, बल्कि हाशिये पर हैं। इसके यहाँ पर समूचे निश्चित कारण हैं। इसकी क्षतिपूर्ति के लिये केंद्र को कौशल के अध्ययन, समझ और अन्वेषण के रास्ते खोजने होंगे। ये दोनों प्रयास डिजाइन अध्ययन शिक्षालय के छात्रों के लिये अनुभव, अधिगम और सहभागिता के लिये एक संतुलित मंच तैयार करेगा जिससे वे उनके कार्यक्रम की पदावधि के दौरान चल रही अंतर्विषयक परियोजनाओं से जुड़ने का अवसर प्राप्त कर सकें। भविष्य में अध्ययन शिक्षालय एक डिजाइन संग्रहालय को बनाने की योजना भी प्रारम्भ कर रहा है। यह अपने आप में भारत का

पहला संग्रहालय होगा और स्थानीय संदर्भों में डिजाइन के इतिहास से लेकर उभरते भविष्य से लेकर डिजाइन की समझ और सुस्पष्टता को साथ जोड़ते हुए अनुसंधान, अध्ययन और उल्लेख करने के लिये एक मुख्य केंद्र बन जायेगा।

विकास अध्ययन शिक्षालय (एसडीएस)

समाजशास्त्र, मानवशास्त्र, राजनीति विज्ञान और अर्थशास्त्र विषयों के सिद्धांत पर आधारित अंतरविषयक दृष्टिकोण के माध्यम से सामाजिक विज्ञान के शिक्षण और शोध को सशक्त बनाना विकास अध्ययन शिक्षालय का लक्ष्य/मिशन है। एसडीएस का अम्बेडकर विश्वविद्यालय के समग्र दृष्टिकोण से एक विशिष्ट संबन्ध है जिसके द्वारा व्यापक और बहुविषयी उच्चतर शिक्षा को प्रोत्साहित किया जाना है और जिसका सामाजिक जरूरतों से खासा जुड़ाव है। यह इस समझदारी पर टिका है कि आज के संदर्भ में विकास के अनुभव, अस्मिता और भेदभाव के मामले, पर्यावरण संबंधी चिंताएँ आदि में गंभीर शोध अंतरविषयक दृष्टिकोण को अपनाकर ही प्रभावी ढंग से किया जा सकता है। अध्ययन शिक्षालय का लक्ष्य है कि अति संवेदनशील, हाशिये पर रह रहे और वंचितों के समूह पर विशेष ध्यान देते हुए राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक मुद्दों, प्रक्रियाओं और वास्तविकताओं के दायरे में यह नवोन्मेषी और अत्याधुनिक शोधों को बढ़ावा दे। एम.ए. कार्यक्रम सन 2009 से शिक्षकों एवम् अकादमिक व व्यावहारिक जगत के विशेषज्ञों के परामर्श द्वारा अंतर्विषयक दृष्टिकोण से विकास संबंधी शिक्षाशास्त्र को उभार रहा है। स्नातकोत्तर स्तर पर अध्ययन शिक्षालय ने ऐसे पाठ्यक्रमों की शुरुआत की है जिसमें महत्वपूर्ण व्यावहारिक अनुभवों समेत सैद्धांतिक व विचारात्मक समझ के योग के साथ–साथ शोध पर ध्यान देते हुए एक प्रबंध लिखने पर बल दिया जाता है। अंतरविषयक दृष्टिकोण पर ध्यान केंद्रित करते हुए अगर छात्र इच्छा करते हैं तो अध्ययन शिक्षालय उन्हें इस बात की अनुमति भी देता है कि वे अन्य विषयों के परिप्रेक्ष्यों को दृष्टि में रखते हुए विषय–विशेष के दृष्टिकोण पर अधिक ध्यान दें।

शैक्षणिक अध्ययन शिक्षालय

शैक्षणिक अध्ययन शिक्षालय को अभिनियोजित छात्रवृत्ति तथा अभ्यास के जरिये अपने ऐतिहासिक और समसामयिक संदर्भों में शिक्षा को समझाने में प्रयासरत व्यवसायिकों और विद्वानों के समुदाय के रूप में विकसित करने के लिये परिकल्पित किया गया है। यह अध्ययन शिक्षालय अपने विविध स्थानों में शिक्षा के सिद्धांत और व्यवहार के बीच अंतराल

को पाटने का प्रस्ताव करता है तथा यह सामाजिक घटना के रूप में शिक्षा के अध्ययन तथा व्यवसायिक शिक्षकों को तैयार करने के बीच अधिक समाभिरूपता को बढ़ावा देगा। यह अध्ययन शिक्षालय शिक्षकों की शिक्षा शिक्षणशास्त्र, पाठ्यचर्या, नीति, नियोजन और प्रशासन पर ध्यान देते हुए विश्लेषण और अनुसंधान हेतु गम्भीर प्रैक्टिस आधारित सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य के विकास के लिये कार्य करता है।

अकादमिक सत्र 2012 के दौरान अध्ययन शिक्षालय का पहला कार्यक्रम शिक्षाशास्त्र में एम. ए. प्रारम्भ किया गया। कार्यक्रमों को शिक्षा में विविध पृष्ठभूमियों (बी. एड. / बी. एल. एड.) से आये छात्रों के साथ, विभिन्न अनुशासनों जैसे साहित्य, इतिहास, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र और विज्ञान आदि के स्नातकों द्वारा पोषित किया गया है। एसईएस छात्रों के लिये विशेषज्ञों और व्यवसायिकों के साथ पारस्परिक क्रिया उत्पन्न करने और उन्हें सुनने के अवसर प्रदान करने के लिये समय–समय पर विभिन्न कार्यशिविरों और विशेष अतिथि व्याख्यानों का आयोजन करता है। नेशनल गैलरी फॉर मॉडर्न आर्ट और आस–पास के संग्रहालयों में जाना आदि नियमित पाठ्यक्रम के हिस्से के रूप में छात्रों के सीखने के अनुभवों को प्रभावित करता है। एसईएस ने 'आह्वान समूह' के सहयोग के साथ मिलकर कॉम्प्रीहेन्सिव कॉन्टीन्युअस इवेलुएशन और शिक्षा का अधिकार अधिनियम जैसी थीम पर विभिन्न कार्य शिविरों का भी आयोजन किया है। छात्र कश्मीरी गेट परिसर में आयोजित विश्वविद्यालय स्तर की गतिविधियों जैसे एयूडी / सिटी, स्पोर्ट्स मीट और एथलेटिक मीट में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं।

एसईएस शोध के क्षेत्रों और अन्य गतिविधियों जैसे फील्ड इंटर्नशिप, अध्यापन, पाठ्यक्रम विकास, कार्यशिविर आदि के द्वारा पारस्परिक संवर्धन को उभारने और विभिन्न शैक्षिक संस्थाओं और संगठनों के साथ क्षमता निर्मित करने के लिये संभावित सहयोगों को खोज रहा है। अध्ययन शिक्षालय की राज्य के विद्यालयों और अभ्यासरत स्कूली शिक्षकों के साथ एक सतत संबन्ध स्थापित करने हेतु शिक्षा विभाग, दिल्ली राज्य सरकार के साथ साझेदारी निर्मित करने की कोशिश की जा रही है।

मानव पारिस्थितिकी अध्ययन शिक्षालय (एसएचई)

एसएचई का प्राथमिक उद्देश्य पर्यावरणीय सरोकार की गहरी और बहुआयामी समझ विकसित करना है जिसमें सामाजिक विज्ञान और प्राकृतिक विज्ञान दोनों के परिप्रेक्ष्य शामिल हैं। एसएचई अपने छात्रों को ऐसे कौशलों और परिप्रेक्ष्यों के जरिये शिक्षित करना

चाहता है जो सामाजिक समता, अकादमिक कठिनाइयों और पारिस्थितिक सततशीलता को ध्यान में रखकर संबोधित और विश्लेषित करे। एसएचई का अम्बेडकर विश्वविद्यालय के समग्र दृष्टिकोण से एक विशिष्ट सम्बंध है जो कि ऐसी वृहत, बहुविषयक उच्चतर शिक्षा को बढ़ावा देता है जिसमें सामाजिक आवश्यकताओं का जुड़ाव हो। अम्बेडकर विश्वविद्यालय के समपर्ण को ध्यान में रखते हुए अध्यापन के नये तरीके इज़ाद करने और ज्ञान निर्माण के लिये अध्ययन शिक्षालय जमीनी आधार पर अध्यापन और जमीनी स्तर के अनुसंधान को बढ़ावा देता है। सक्रिय आचरण के जरिये इसकी पाठ्यचर्या मजबूत तौर पर विश्वविद्यालय और उससे इतर विश्व के साथ संबन्ध को विकसित एवम् प्रोत्साहित करने पर जोर देती है। इन उद्देश्यों को पूरा करने के लिये इंटर्नशिप और लघु शोध–प्रबंधो को भी शामिल किया गया है।

मानव अध्ययन शिक्षालय

मानव अध्ययन शिक्षालय ने सम्भवतः पहली बार अपने अध्यापन में व्यक्ति और व्यक्ति के जीवन के बारे में, उनके वातावरण– परिवार, समुदाय, परिवर्तनशील जीवनशैली, संबंधों, लैंगिकता, कार्यस्थल के परिवर्तनशील स्वरूप, जीवन के चरण (खासकर वृद्धावस्था) आदि से सम्बंधित मामलों का समाधान करने के लिये मनोवैज्ञानिकों, सामाजिक मानव वैज्ञानिकों, समाजशास्त्रियों, दार्शनिकों और समाज कार्यों में लगे हुए व्यावसायिकों के अंतर्विषयक समूह को एक जगह एकत्रित किया है। एसएचएस उन खास वास्तविकताओं जो हमारे काल से संबंधित है और मानव अनुभव, चिंतन और स्वप्न को परिरक्षित करता है, पर विचारविमर्श को बढ़ावा देना चाहता है। शब्द 'मानव' अर्ध चेतन अवस्था में चेतना को खोने के चरण से अतिविनोदप्रियता की अवस्था तक की अपनी संजीदगी को याद करना है। अतः इस क्षमता को अध्ययन द्वारा बहुआयामी बनाया जा सकता है। एसएचएस को अवधारणात्मक शास्त्र और संबंधित प्रयोगों की श्रेणी के रूप में परिकल्पित किया गया है जो अपने कार्यक्रम के अभिबल तथा अध्यापन, मेंटरशिप, मूल्यांकन तथा समाज में व्यवहार के क्षेत्र में अनुसंधान और रोजगार की सूचना प्रदान करता है। फिलहाल यह अध्ययन शिक्षालय विनोदप्रियता, जो सामान्यतः उच्च शिक्षा से संबंधित नहीं है के साथ मानव जीवन के घटनाक्रमों के बारे में महत्वपूर्ण मामलों पर ध्यान आकर्षित करते हुए मनोविज्ञान (मनो–सामाजिक–नैदानिक अध्ययन) और जेंडर अध्ययन में एम. ए. की डिग्री प्रदान करता है। साथ ही एसएचएस विकास अभ्यास केंद्र और एहसास क्लीनिक का भी कार्य देखता है।

महिला और जेंडर अध्ययन में एम. फिल. और पी.एच.डी.

महिला और जेंडर अध्ययन में एम.फिल. और पी.एच.डी. कार्य्रक्रम को 27 अगस्त 2012 को शुरु किया गया। यह कार्यक्रम एयूडी और महिला विकास अध्ययन केंद्र के बीच साझेदारी के बेहतरीन प्रयासों से जन्मा है। यह कार्यक्रम महिला विकास अध्ययन केंद्र के अनुसंधान और प्राथमिक तौर पर एयूडी के अध्यापन अनुभवों को साथ रखते हुए पाठ्यक्रमों और पैडागोजी के साथ नये प्रकार का प्रयोग कर रहा है। यह कार्यक्रम देश में महिला अध्ययन कार्यक्रमों द्वारा किये गये गहन और अग्रणी कार्य द्वारा आकारित किया गया है। इस एम. फिल. और पी.एच.डी. कार्यक्रम की पहचान को इसके अन्तरा–आत्मिक और अंतर्विषयक पहलुओं में लैंगिक विषय की जटिलता पर ध्यान केंद्रित करते हुए मानव अध्ययन शिक्षालय के अंतर्गत चिह्नित किया गया है।

यह कार्यक्रम अन्वेषण के पात्र के रूप में जेंडर संबंधों की महत्ता पर विश्लेषणात्मक समझ और सत्ता के संरूपण के अध्ययन के साथ–साथ महिला के अधीनीकरण के कारणों, संदर्भों और परिणामों को भी समायोजित करता है। एयूडी में स्नातकोत्तर स्तर पर पहले से मौजूद जेंडर अध्ययन के जुड़े होने के कारण एम.फिल. और पी.एच.डी में प्रवेश पाना आवेदक के लिये अनुसंधान डिग्री के लिये एक छलांग की तरह होगा, साथ ही सांस्थानिक अधिसंरचना और यहाँ मौजूद संकाय और प्रशासन का सहयोग मिलेगा। इसके अलावा एम. ए. कार्यक्रम उन छात्रों के लिये एक सेतु का काम करेगा जो कि शोध कार्य शुरु करने के पहले इस क्षेत्र के बारे में जानना चाहते हैं। जैसा कि एयूडी ने अपने महिला और जेंडर के परिप्रेक्ष्यों को स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर पर विस्तारित किया है अतः यह क्षेत्र को विकसित और इसके कर्ताओ को वृहत स्तर पर प्रशिक्षित करेगा। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि जेंडर के परिप्रेक्ष्यों को एयूडी के अधिकतर स्नातक और स्नातकोत्तर कार्यक्रमों के घटक के रूप में शामिल किया जा चुका है और कहीं न कहीं इन विषयों का समायोजन एम. ए. और एम.फिल./पी.एच.डी. के जरिये महिला और जेंडर अध्ययन को मजबूती प्रदान करेगा। यह दो तरह के हस्तक्षेपों से संभव होगा – पहला, महिला और जेंडर अध्ययनों के लिये अलग विषय स्थिति उत्पन्न की जाये और दूसरा, मौजूदा विषयों में महिला और जेंडर अध्ययन विषय के पहलुओं को शामिल किया जाये।

मनोचिकित्सा और नैदानिक चिंतन में एम. फिल.

यह तीन वर्षीय कार्यक्रम मनोगतिकी, मनोचिकित्सक और क्लिनिकल अनुसंधानकर्ताओं को प्रशिक्षित करता है। इसका मुख्य आधार है कि एक ऐसे मानसिक स्वास्थ्य पेशेवर का

निर्माण किया जाये जो कि संवेदनशील हो, खुले विचार वाला हो और जो संस्कृति, इतिहास और राजनीति की समझ रखता हो। यदि उसके परामर्श कक्ष में ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जाये तो वो इन पर खरा उतरना चाहिये। एक व्यक्तिपरक या पारिवारिक जीवन इतिहास से उसके लक्षणों को जोड़कर एक अनुभव जन्य, समानुभूतिक स्थिति के जरिये मानव संघर्षों के उतार–चढ़ावो को समझने पर जोर देना है। सिद्धांत, क्लिनिक सम्बंधी पर्यवेक्षण, वैयक्तिक थेरेपी में उभरते चिकित्सक को गहन प्रशिक्षण के साथ तैयार किया जाता है और क्लिनिकल शोध कार्य के जरिये यह अपेक्षा की जाती है कि वह नैदानिक स्तर पर उस क्षमता को मजबूत करेगा जिसमें मानसिक अवस्थितियों को पहचानने, व्यक्त करने और अभिव्यक्तयों को साझा करना शामिल है। यह गतिशील प्रक्रिया उपचार के प्रति झुकाव को सक्षम बनाती है और बाद में शोध के लिये तैयार करती है। मनोचिकित्सा और नैदानिक चिंतन में एम. फिल. कार्यक्रम सीधे तौर पर पी.एच.डी. कार्यक्रम से जुड़ा है और इसमें सीटें सीमित संख्या में ही हैं।

सेन्टर फॉर डेवलपमेंट प्रैक्टिस / एम.फिल. डेवलपमेंट प्रैक्टिस

सेन्टर फॉर डेवलपमेंट प्रैक्टिस और डेवलपमेंट प्रैक्टिस में एम.फिल. कार्यक्रम को औपचारिक तौर पर 20 अगस्त 2012 को श्री जयराम नरेश (ग्रामीण विकास मंत्री, भारत सरकार) द्वारा तीन मूर्ति भवन में उद्घाटित किया गया। इस केंद्र को देश में विकास के

क्षेत्रों के अंग के रूप में अनुसंधान, प्रलेखन, क्षमता निर्माण और चिन्तन के लिये एक आधार के रूप में देखा गया है। केंद्र डेवलपमेंट प्रैक्टिस में एम.फिल. भी करवाता है। डेवलपमेंट प्रैक्टिस में एम.फिल. कार्यक्रम (एयूडी और प्रतिष्ठित सेक्टर एजेंसी 'प्रदान' द्वारा सह–पोषित) अपरीक्षित 'ग्रामीण क्षेत्रों की विकासशीलता' और समान रूप से अपरीक्षित 'विकास के भव्य मार्गों' के परीक्षण के जरिये ग्रामीण संदर्भों में 10 माह लम्बे तल्लीनता–आधारित–अधिगम के द्वारा ग्रामीण क्षेत्र के साथ संबंध स्थापित करना है और जिसकी इच्छा विकास क्षेत्र के पेशेवरों के 'कोहॉर्ट' को निर्मित करना है जो कि भारत के ग्रामीण क्षेत्र में एक परिवर्तनीय सामाजिक कार्यवाही को प्रारम्भ कर सकें।

मनोविज्ञान में पी.एच.डी.

यह कार्यक्रम स्व विवेचित पहलू के मनोवैज्ञानिक अन्वेषण को मजबूत करने की आशा करता है। ज्ञान और सत्ता पर निरंतर प्रश्न उठाकर एक अंतर्विषयक आधार और स्व चिंतन परिप्रेक्ष्य द्वारा निदेशित यह अनुसंधान की मनोवैज्ञानिक रूपरेखा तैयार करना चाहता है और साथ ही एक ऐसे मनोवैज्ञानिक मानव विज्ञान को उभारना चाहता है जो कि सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील हो, विउपनिवेशिकृत और सामजिक–राजनीतिक पहलूओं का जानकार हो। यह एक अंतर्विषयक शोध की समझ बनाने की कोशिश है जो कि चेतन और अचेतन धाराओं, भावों और जिंदगी की कई प्रघटनाशास्त्रीय संबंधी बहाव को उभार

देती है। जीवन और उसके संघर्षों के साथ–साथ गुणवत्ता आधारित कार्य पर ध्यान केंद्रित किया जाये जहाँ अनुसंधानकर्त्ता और अनुसंधान खुद एक सतत जुड़ाव को तवज्जो दें और परिवर्तनीय क्षमताओं को उभार सकें। यह पाठ्यक्रम भावी अनुसंधानकर्ताओं के लिये मनोगतिकी, आलोचनात्मक, सहयोगी और सवांदोन्मुखी कार्य के विषयों का बीड़ा उठाने के लिये आधारों को तैयार करता है।

एहसास – मनोचिकित्सा और परामर्श क्लीनिक

एहसास मानव अध्ययन शिक्षालय की एक नई पहल है जो कि सामाजिक रूप से संवेदी मानसिक स्वास्थ्य पेशेवर को प्रशिक्षण देने के लिये प्रतिबद्ध है। क्लीनिक में फीस देने वाले लोगों के अलावा अलग–अलग सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमियों से आये लोगों को कम शुल्क एवम् मुफ्त तौर पर परामर्श और मनोचिकित्सा भी उपलब्ध करवाने की कोशिश की जाती है। क्लीनिक को वयस्क, शिशु और परिवार के रूप में समाविष्ट किया गया है और यह मनो–नैदानिक और मनोवैज्ञानिक परीक्षण भी उपलब्ध करवाता है। मनोविश्लेषण के जरिये रोग का पता लगा कर स्वस्थ बनाने के लिये नियमित तौर पर कार्य किया जाता है। एहसास वैयक्तिक–अन्य संबंधों की अर्थपूर्ण वैयक्तिक यात्रा को बढ़ावा दिये जाने की आशा करता है। 2011 से अब तक एहसास में 155 रोगी विभिन्न मानसिक परेशानियों से संबंधित मुद्दों के लिये आ चुके हैं।

एहसास क्लीनिक स्टाफ:

सुश्री नूपूर ढींगरा, मनोचिकित्सक
सुश्री शिफा हक, मनोचिकित्सक
सुश्री एंजलीन कौर, मनोचिकित्सक
आशीष रॉय, मनोचिकित्सक
श्री राजिंदर सिंह, मनोचिकित्सक

डेवलपमेंट प्रैक्टिस केंद्र का स्टाफ:

वर्तमान में केंद्र में एयूडी के संकाय और अतिथि संकाय शामिल हैं और "प्रदान" के विशेषज्ञ हैं जो कि छात्रों को पाठ्यक्रम और निरीक्षण में मदद करते हैं :

डॉ. अनूप कुमार धर (परियोजना निदेशक, एम. फिल् इन डेवलपमेंट प्रैक्टिस)
श्री राजेश के. पी. (अकादमिक फेलो)

सुश्री श्यामोलिमा घोष चौधरी (परियोजना प्रबंधक)
सुश्री गुरप्रीत कौर (परियोजना सहायक)

ललित अध्ययन शिक्षालय

ललित अध्ययन शिक्षालय में सभी परंपरागत सामाजिक विज्ञान के विषय शामिल हैं। इसके अलावा इनमें वे विषय भी शामिल हैं जिन्हें कला अथवा मानविकी संकाय के अंतर्गत परंपरागत तौर पर शामिल किया जाता रहा है। इसमें अर्थशास्त्र, इतिहास, अँग्रेजी, हिंदी और गणित शामिल हैं। शैक्षिक वर्ष 2011–12 के दौरान अध्ययन शिक्षालय ने अर्थशास्त्र, इतिहास, अँग्रेजी और सामाजिक विज्ञान पर आधारित चार विषयों में स्नातकोत्तर कार्यक्रम शुरु किये. प्रत्येक कार्यक्रम में 64 क्रेडिट होंगे जिन्हें 4 समेस्टर में पूरा किया जायेगा। इन कार्यक्रमों में दाखिला प्रवेश परीक्षा और साक्षात्कार के बाद दिया जायेगा।

ललित अध्ययन शिक्षालय के सभी मौजूदा और प्रस्तावित गतिविधियाँ कुछ खास दीर्घकालीन उद्देश्यों के लिये बनायी गयी हैं :

- यह एक ऐसी नयी युवा सामाजिक वैज्ञानिकों की पीढ़ी निर्मित करेगा जो संज्ञानात्मक और विधिसम्मत तरीके द्वारा प्रशिक्षित और सामाजिक रूप से संवेदनशील होंगें। पिछले दो या तीन दशकों से भारत एक ऐसे सामाजिक बदलाव से गुजर रहा है जिसका कोई पूर्व अनुमान नहीं था। इस अनुभव को सुव्यवस्थित करने और इसकी जटिलता को सुलझाने की जरुरत है। हमें जरूरत है प्रशिक्षित सामाजिक वैज्ञानिकों की जो इस परिवर्तन की समझ पैदा करे और इसे दूसरों के लिये बोधगम्य बनाये।
- अध्ययन शिक्षालय एक अंतर्विषयक दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करने की कोशिश करेगा जो कि विशिष्ट अनुशासनो में पहले से ही पैठ बनाये हुए है। यह कहना सतही तौर पर विरोधाभासी होगा कि सामाजिक विज्ञानों का विकास गंभीर रूप से अन्य विशिष्ट विषयों के विकास पर निर्भर करता है। अध्ययन शिक्षालय सामाजिक विज्ञानों के एक विशेष पहलू और दृष्टिकोण को बढ़ावा देगा जिसमें विशेष विषय उस नींव को तैयार करेंगे जो अंतर्विषयक भवन निर्माण में सहायक होगा। गणित के साथ–साथ अर्थशास्त्र, अँग्रेजी, हिन्दी, इतिहास और समाजशास्त्र जैसे विषय इसके मूल दृष्टिकोण का हिस्सा हैं। अंततः अध्ययन शिक्षालय दर्शन, राजनीति, पंजाबी और उर्दू में भी कार्यक्रम शुरु करेगा। हम ऐसे अनुसंधानकर्ता तैयार करना चाहते हैं जो अपने अभिविन्यास में तो अंतर्विषयी हों परंतु अपने विशिष्ट विषय में प्रशिक्षित हों और उसकी

जड़ों से भी जुड़े रहें। अंतर्विषयकता के इस पहलू को विषयों की विधि में 'सामग्री' के रूप में कल्पित नहीं किया गया है बल्कि उन घटकों के रूप में पहचाना गया है जो अपना स्वाद और व्यक्तिपरकता बनाये रखते हैं।

- भारत में सामाजिक विज्ञानों की भाषा अँग्रेजी ही रही है। अध्ययन शिक्षालय एक हिन्दी संकाय को विकसित करने की योजना बना रहा है जो कि हिन्दी को स्थापित करने की कोशिश और बाद में सामाजिक विज्ञानों की भाषा के रूप में उर्दू, पंजाबी और अन्य भाषाओं की विशेषज्ञता को भी विकसित करेगा।
- अंतिम तौर पर एसएलएस का उद्देश्य सामाजिक विज्ञानों की बौद्धिकता और उत्कृष्टता द्वारा खड़े किये गये मानकों से इतर उन्हें सामाजिक रूप से प्रासंगिक और उत्तरदायी बनाने का है। सामाजिक विज्ञान खुद के साथ ही संतुष्ट नहीं रह सकता। इन्हें उन वृहत सामाजिक दुनिया के प्रति झुकाव उत्पन्न करना होगा जिसके अंतर्गत ये संचालित होते हैं। इन अर्थों में हमारे सामाजिक विज्ञान के विषय बौद्धिक स्वतंत्रता के मुख्य विचार और सामाजिक जवाबदेही दोनों को एक साथ ले आते हैं। विश्वविद्यालय नागरिक समाज के साथ जुड़ाव उत्पन्न करने के लिये अधिदेशित है। इस राह में एसएलएस खुद को एक मुख्य और सक्रिय साझेदार के रूप में देखता है।

एम. ए. अर्थशास्त्र

अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर डिग्री को भारत जैसे विकासशील देशों के समक्ष आने वाली चुनौतियों सहित समसामयिक आर्थिक मामलों के बारे में समझने और सोचने की क्षमता प्रदान करने पर विशेष जोर के साथ छात्रों को आर्थिक विश्लेषण में कठिन और गहन उन्नत प्रशिक्षण देने के उद्देश्य से संकल्पित किया गया है । यह कार्यक्रम सम्यक प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए विशेष और सृजनात्मक शिक्षा शास्त्रीय दृष्टिकोणों के अंतर्गत विभिन्न सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्यों और परम्पराओं की ओर ध्यान आकर्षित करता है, जो छात्र को विभिन्न उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल बनाएगा। इसके अंतगर्त अर्थव्यवस्था के संबंध में सामाजिक राजनीतिक और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य का विकास करना; ऐसी मात्रात्मक तकनीकों में निपुण होना जिन्हें विश्लेषण में व्यापक रुप से तैयार किया जाता है; वैश्विक और राष्ट्रीय स्तर पर समसामयिक आर्थिक मामलो का विश्लेषण करने की समझ और शिक्षा; आर्थिक विचारों को समझना और समझाने की दक्षता शामिल है। मुख्य पेपर में समष्टि अर्थशास्त्र, व्यष्टि अर्थशास्त्र, व्यापार और पूंजी, पूंजीवाद और उपनिवेशवाद, भारत की अर्थव्यवस्था के मामलों के अध्ययन तथा अनुसंधान प्रणालियाँ शामिल हैं।

एम. ए. अंग्रेजी

अंग्रेजी में स्नातकोत्तर कार्यक्रम अनुवाद साहित्य के साथ–साथ अंग्रेजी में ब्रिटिश साहित्य और अन्य साहित्यों के पदानुक्रम को तोड़ने के लिये प्रस्तावित किया गया है। यह अज्ञात भाषाओं और क्षेत्रों के साहित्यों के महत्व पर ध्यान केंद्रित करना चाहता है। एयूडी के समग्र दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए यह कार्यक्रम छात्रों को विद्वतापूर्ण चिन्तन की ओर उन्मुख किये जाने की आशा करता है। सामाजिक और साहित्यिक हाशिये से संबंधित सरोकारों के साथ यह कार्यक्रम के समग्र दृष्टिकोण, दर्शन और विषय वस्तु का लगातार मार्गदर्शन करेगा । आशा की जा रही है कि व्यक्तियों और समुदायों के जीवन और संघर्षो को शिक्षा के साथ जोड़ने के कार्यक्रम का नैतिक सरोकार उन्हें साहित्य की समग्र समझ प्रदान करेगा। यह उन्हें गहन मानसिक, सृजनात्मक और सामाजिक समझ विकसित करने में भी मदद करेगा। आगे यह भी परिकल्पित है कि छात्र इस कार्यक्रम के जरिये संस्कृति समाज और राज्य की वृहत राजनीति के प्रति समालोचनात्मक समझ विकसित कर सकें ताकि वे प्रदत्त वर्चस्वशाली राजनीतिक और सांस्कृतिक व्यवस्था में सक्रिय और कलात्मक ढंग से हस्तक्षेप कर सकें। यह कार्यक्रम एक ओर विभिन्न साहित्य, सिद्धांतों और अभ्यासों के बीच और दूसरी ओर संगीत, नृत्य, रंगमंच, सिनेमा, साहित्य और दृश्य कलाओं के बीच वृहत्तर समामेलन को उपलब्ध करवाने हेतु अंतरविषयी पैराडाईम्स को समेकित करता है। छात्रों को व्यापक अंतर्विषयक पाठ्यक्रम प्रदान किये जायेंगे जो कि अन्य अनुशासनो के संदर्भ मे साहित्य को अवस्थित कर पाने में सहायता करेंगे। कुछ ऐच्छिक द्विभाषाई और बहुभाषाई पाठ्यक्रम भी प्रदान किये जाएंगे जिन्हे एयूडी के अंग्रेजी और हिंदी संकाय द्वारा संयुक्त रुप से पढ़ाया जाएगा।

एम. ए. इतिहास

इतिहास में स्नातकोत्तर कार्यक्रम के दो उद्देश्य हैं: (1) इसमे ऐतिहासिक घटनाओं और प्रक्रियाओं का ज्ञान प्रदान करने का प्रस्ताव है (2) यह ऐतिहासिक विश्लेषण के कौशलों को संचरित और ऐतिहासिक कल्पना को प्रोत्साहन देता है। छात्रों से यह आशा की जाती है कि वे ऐतिहासिक आँकड़ों के आधार पर तथा जाँच की तर्क आधारित प्रक्रिया के जरिए स्वतंत्र रुप से विचार करने तथा निर्णय क्षमता प्राप्त करने के लिए इतिहासकारों की कला सीखें। यह कार्यक्रम छात्रों को अंतर्विषयक तरीके से ऐतिहासिक मुद्दों के चिंतन के लिये प्रेरित करेगा तथा समसामयिक सामाजिक प्रश्नो के बारे में समालोचनात्मक चिंतन को बढ़ावा देगा।

एम. ए. समाजशास्त्र

समाजशास्त्र में स्नातकोत्तर कार्यक्रम के दो उद्देश्य हैं पहला, यह अनुसंधान प्रणाली और अनुप्रयोग, लेखन और विश्लेषण में ठोस आधार तैयार करने का प्रयास करता है जो विभिन्न क्षेत्रों जैसे विकासात्मक क्षेत्रों, निगमों, राज्य और मीडिया में छात्रों की उच्च दक्षता और प्रधान पदों पर कार्य सुनिश्चित करेगा। दूसरा, यह समालोचनात्मक चिन्तन की संस्कृति तैयार करना चाहता है जो उदार शिक्षा के संवर्धन के लिये वचनबद्ध होगा जो खासकर वैश्वीकृत विश्व में लोकतांत्रिक और समावेशी समाज में निरंतरता बनाये रखे। कार्यक्रम के मुख्य चिह्न अंतर्विषयक और अंतःक्षेत्रीय ज्ञान और अनुभव को सीखना और साझा करना तथा विश्लेषणात्मक और लेखन क्षमता को विकसित करना है।

एसएलएस के सभी स्नातकोत्तर कार्यक्रमों के लिये सतत विविध मूल्यांकन स्थितियों के लिये एक मूल्यांकन प्रणाली है। इसके अंतर्गत निबंध लेखन, ट्यूटोरियल, लिखित परीक्षा, मौखिक प्रस्तुतिकरण, समूह चर्चा और परियोजना कार्य शामिल हैं। कोई भी मूल्यांकन कुल मूल्याकंन के 40% से अधिक नहीं होगा। मूल्यांकन प्रणाली सिर्फ मूल्यांकन के लिये उपकरण मात्र नहीं है। लगातार सीखना मूल्यांकन प्रणाली का अभिन्न अंग है। मूल्यांकन और सीखना एक साथ–साथ चलने वाली और एक दूसरे को संपोषित करने वाली प्रकिया के रूप में अपेक्षित है। यह सतत मूल्यांकन प्रणाली यह सुनिश्चित करती है कि छात्र खुद अपनी अधिगम क्षमताओं के विकास की निगरानी में समर्थ हों।

स्नातक अध्ययन शिक्षालय (एस.यू.एस)

अम्बेडकर विश्वविद्यालय के स्नातक अध्ययन शिक्षालय में सात ऑनर्स कार्यक्रम अर्थशास्त्र, अँग्रेजी, इतिहास, गणित, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र और समाज विज्ञान एवम् मानविकी में निहित हैं। यह तीन वर्षीय पाठ्यक्रम छात्रों को वृहत्तर विविध प्रकार के पाठ्यक्रमों के जरिये सैद्धांतिक कौशलों, अनुशासन एवम् अंतर्विषयक ज्ञान के साथ समर्थ बनाना चाहता है। एयूडी का स्नातक अध्ययन कार्यक्रम विशिष्ट लिबरल आर्ट्स में ऐसी शिक्षा प्रदान करता है जो कि युवा छात्रों को ज्ञान के विविध उपागमों से अवगत कराता है। चौथे वर्ष का अतिरिक्त अध्ययन छात्रों को दो मेजर के साथ ऑनर्स डिग्री भी देता है। अकादमिक वर्ष 2012–13 में एसयूएस में विभिन्न नवीन कदम उठाये गये। अप्रैल–मई 2012 में सातों कार्यक्रम के लिये बनाई गयी कार्यक्रम समिति के साथ एसयूएस की शासन संरचना को सुदृढ़ किया गया। एसयूएस के डीन की अध्यक्षता के अंतर्गत कार्यक्रम संचालक और सह–संचालक एसयूएस की अकादमिक संचालन समिति का गठन किया

गया है। अकादमिक वर्ष 2012–13 में एसयूएस के डिप्टी डीन (डॉ. चिराश्री दास गुप्ता, सहायक प्रो., अर्थशास्त्र, एस.एल.एस) की भी नियुक्ति की गयी। जिससे भावी प्रशासनिक और अकादमिक गतिविधियों को सरल एवम कारगर बनाने में मदद मिली है।

वर्ष 2012–13 में एसयूएस में 196 छात्रों को प्रवेश दिया गया। वर्तमान में एसयूएस में छात्रों की संख्या 320 है। 2010–11 बैच के 45 छात्र इस समय अंतिम वर्ष में है। ये जून 2013 में स्नातक हो चुके होंगे। ऐसी आशा है कि इनमें से बहुत से छात्र दो मेजर सहित ऑनर्स डिग्री के लिये अतिरिक्त चौथे वर्ष के लिये रुकेंगे।

विशेष रूचि के पाठ्यक्रम छात्रों को अंतिम वर्ष के पाँचवें और छठे समेस्टर में उपलब्ध करवाये जाते हैं। इसमें कम्प्यूटर एप्लिकेशन इन प्रोजेक्ट एप्लिकेशन, लीगल लिटरेसी एप्लिकेशन इन इंडिया, अंडरस्टैंडिंग डिसएबिलिटी थ्रू पॉपुलर मीडिया एंड डिजिटल स्टोरीटेलिंग शामिल हैं जो कि सामुदायिक ज्ञान केंद्र के सहयोग द्वारा प्रदान किये जाते हैं। इस अंतर्विषयक पाठ्यक्रम में राजनीति विज्ञान पाठ्यक्रम को भी जोड़ा गया जिससे छात्र नये क्षेत्र को खोजने में सक्षम होंगे जबकि एस.यू.एस राजनीति विज्ञान में ऑनर्स कार्यक्रम प्रदान नहीं करता है।

अकादमिक वर्ष 2012–13 में पहली बार एसयूएस में क्लाउड बेस्ड ई.आर.पी मॉडल के द्वारा कागजरहित ऑनलाइन प्रणाली के जरिये छात्रों को प्रवेश दिया गया। डॉ. सुरजीत मजूमदार (सहायक प्रो., अर्थशास्त्र, एस.एल.एस, एयूडी प्रवेश समिति के उपाध्यक्ष) और प्रो. गीता वेंकटरमन, डीन एसयूएस (प्रो. गणित, एसएलएस, एयूडी प्रवेश समिति की अध्यक्षा) ने ई.आर.पी द्वारा सांस्थानिक प्रवेश के लिये महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। आइटी सेवा निदेशक डॉ. के. श्रीनिवासन और श्री दीपक बिश्ला इनके सहयोग में अनुकरणीय थे। एक समिति जिसकी अध्यक्षता डॉ. जयति लाल (सहायक प्रो., समाजशास्त्र, एसएलएस) ने की, उनके परामर्श में 2012–13 के लिये एसयूएस सूचना पट्ट को नये सिरे से आकारित किया गया। मानसून सेमेस्टर के अंत तक वरिष्ठ छात्रों के आँकड़ों को ई.आर.पी में दर्ज किया गया तथा ई.आर.पी का प्रयोग करके अंतिम ग्रेड्स और परिणाम भी घोषित किये गये। शरदकालीन सेमेस्टर में छात्रों के हाजिरी संबंधी आँकड़ों को संगृहीत करने के लिये ई. आर.पी सुविधा का प्रयोग किया गया। एसयूएस ई.आर.पी समिति के अध्यक्ष डॉ. ज्योतिर्मय भट्टाचार्य (सहयोगी प्रो., अर्थशास्त्र, एस.एल.एस) ने शरदकालीन समेस्टर में छात्रों के पंजीकरण के लिये ERP के प्रयोग के लिये अत्याधिक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

2013–14 के मानसून समेस्टर के लिये ERP के जरिये हुए ऑनलाइन पाठ्यक्रम पंजीकरण में उत्पन्न हुई परेशानियों के समाधान विकसित किये गये।

2012–13 के मानसून और शरदकालीन सेमेस्टर में छात्रों के लिये स्नातक कार्यक्रम के 48 और 57 पाठ्यक्रम मौजूद थे। इतनी बडी संख्या में मौजूद पाठ्यक्रमों को पढ़ाने के लिये एयूडी के 60–70 से भी अधिक संकाय सदस्यों को नियुक्त किया गया और इसका संचालन करना एक बड़ी समस्या बन गया था। एसीसी और कार्यक्रम समिति ने नियमित बैठकों में इन चुनौतियों को सुलझाने का प्रयास किया। निर्णय क्षमता को प्रतिभागी और ज्ञानप्रद बनाने के क्रम में कार्यक्रम समिति और एसीसी के बीच संप्रेषण माध्यम को खुला रखा गया है। एसीसी बैठकों के प्रावधानों को वृहत तौर पर एयूडी संकाय के साथ साझा किया जाता है। शरदकालीन सेमेस्टर में यह भी निर्णय लिया गया कि एसीसी महीने में कम से कम एक बार पहले बुधवार को बैठक करेगी।

प्रो. डेनिस लेईटन की अध्यक्षता वाली एसयूएस मूल्यांकन और हाजिरी समिति (ईएसी) ने शरदकालीन सेमेस्टर 2011–12 और मानसून समेस्टर 2012–13 के परिणामों को प्रमाणित कर दिया है। भविष्य में यह समिति एयूडी के लिये अकादमिक कैलेंडर का भी निर्माण करेगी प्रत्येक समेस्टर में योग्य छात्रों की सूची घोषित करेगी, अर्ध–वार्षिक और अंतिम समेस्टर परीक्षाओं के लिये परीक्षा समय–सारणी तैयार करेगी और मूल्यांकन एवम् हाजिरी से संबंधित मुद्दों पर चर्चा और निर्णय लेगी।

एसयूएस की सात कार्यक्रम स्तरीय छात्र संकाय समितियों (SFCs) के छात्र सदस्यों को चयनित करने के लिये डॉ. अमितेस मुखोपध्याय (सहयोगी प्रो., समाजशास्त्र, एसएलएस) की अध्यक्षता में एक लघु समिति यह कार्य देखती है। एसयूएस की अध्ययन शिक्षालय स्तर की छात्र संकाय समिति ने शरदकालीन समेस्टर में पहली बार बैठक की थी।

डॉ. तनुजा कोथियाल (सहयोगी प्रो., इतिहास, एसएलएस) की अध्यक्षता में एसयूएस की समय–सारणी समिति ने मानसून और शरदकालीन सेमेस्टर के लिये समय–सारणी निर्मित करने का उत्कृष्ट कार्य किया है। 2012–13 के मानसून सेमेस्टर की समय–सारणी को बनाते समय उत्पन्न हुई कठिनाइयों के मद्देनजर, एसीसी ने सुश्री भूमिका मीलिंग (सहयोगी प्रो., अँग्रेजी) की अध्यक्षता में मार्च 2013 में समय–सारणी समिति का गठन किया जिसे पहले से ही मानसून समेस्टर के 67 पाठ्यक्रम के लिये समय–सारणी बनाने का कार्य सौंपा जा चुका है।

यह भी देखा गया है कि एसयूएस ने कार्यक्रम बोर्ड (बीओएस) को भी अपने अधिकार क्षेत्र में रखा है जो कि शुरुआती तौर पर एसयूएस और एसएलएस दोनों के लिये गठित किया गया था। कार्यक्रम बोर्ड ने 2013 में जनवरी और मार्च में दो बैठक की है। इन बैठकों में अत्यधिक लाभदायक चर्चाएँ और वाद–विवाद हुआ जिसने बोर्ड को प्रस्तुत किये पाठ्यक्रम और चर्चा को पोषित किया।

एसीसी की एक विशेष बैठक में उन विभिन्न योजनाओं और परियोजनाओं की चर्चा की गई जिसमें एसयूएस, यूजीसी के 12वें प्लान फंड के लिये संलग्नक हो सकता है और प्रस्ताव जमा कर सकता है। चर्चा के दौरान बहुत से अन्वेषी विचार उत्पन्न हुए। इन्हें केंद्रीय समिति के समक्ष प्रस्तुत किया गया। बहुत से नये विचार यूजीसी के 12वें प्लान प्रस्तावों के हिस्से के रूप में नये केंद्रों और परियोजनाओं का हिस्सा बन गये। यह आशा की जा रही है कि एसयूएस छात्र इन विभिन्न केंद्रों जैसे सामाजिक उद्यमिता एवम् समुदाय प्रसरण केंद्र और विद्यालयों के साथ समुदाय स्वास्थ्य और पहुँच पर परियोजना में अहम् भूमिका अदा करेंगे। यह आशा की गई है कि एसयूएस का पाठ्यक्रम स्कूल शिक्षकों और आम लोगों के लिये भविष्य में सर्टिफिकेट/डिग्री को ऑनलाइन प्रदान करने में मदद करेगा।

यूजीसी के 12वें प्लान प्रस्ताव के जरिये वित्तीय सहायता पाने वाला एक केंद्र गणित का सामाजिक अनुप्रयोग केंद्र (सीएसएएम) है। सामाजिक विज्ञान और विज्ञानों के बीच की खाई को पाटने का सशक्त माध्यम गणित है। वैसे पारम्परिक तौर पर विज्ञान के साथ इसके संबन्ध को स्थापित किया जा चुका है पर सामाजिक विज्ञानों और मानविकी के साथ इसके जुड़ाव में पिछले दो दशकों से ही वृद्धि हुई। सीएसएएम के जरिये एयूडी प्रशिक्षण और अनुसंधान को प्रोत्साहित करना चाहता है जो कि सामाजिक विज्ञान और मानविकी के दायरे में आने वाले विषयों के साथ गणित की अर्थपूर्ण अंतर्क्रिया को उभारे।

एसयूएस के छात्रों को छात्रवृत्ति और फीस माफी :

2011–12 के शरदकालीन सत्र में एसयूएस के 37 छात्रों को उनके मानसून सत्र के प्रदर्शन के आधार पर मेधावी छात्रवृत्तियाँ प्रदान की गईं। इसी तरह मार्च 2013 में मानसून सत्र 2013 के लिये 67 छात्रों को छात्रवृत्तियाँ प्रदान की गईं।

मानसून सत्र के लिये नवंबर 2012 में 32 छात्रों की फीस माफ की गई। इन 32 छात्रों में 3 छात्रों की आंशिक फीस और 29 छात्रों की पूर्ण फीस माफ की गई। शरदकालीन

सत्र 2012–13 के लिये मार्च 2013 में भी 53 छात्रों की फीस माफ की गई। 53 में से 5 छात्रों की आंशिक फीस और 48 छात्रों की पूर्ण फीस माफ की गई।

एसयूएस संकाय द्वारा योगदान

एसयूएस का अपना स्वतंत्र संकाय नहीं है। एयूडी के सभी संकायों से एसयूएस में योगदान देने की अपेक्षा की गई है। फिर भी अकादमिक फेलो की एक सीमित संख्या प्राथमिक तौर पर एसयूएस से जुड़ी है। एयूडी और एसयूएस के अकादमिक जीवन के लिये इनके योगदान की सूची निम्न है :

सुश्री जूही रितुपर्ण, अकादमिक फेलो (एसयूएस) और अँग्रेजी अध्यापन समूह के एक सदस्य ने लिटरेरी सोसाइटी के लिये कई इवेंट को आयोजित किया है। इनमें डॉ. अल्का सरावगी (साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता) और श्री अमनदीप संधू (उभरते युवा उपन्यासकार) के पाठन और वार्तालाप शामिल हैं तथा डॉ. परमेश रत्नाकर द्वारा यूटोपियन पर एक वार्तालाप भी शामिल है।

एसयूएस की कार्यक्रम समितियाँ (मई 2011– सितंबर 2012)

बी. ए. ऑनर्स अर्थशास्त्र में मेजर के साथ

सुरजीत मजूमदार (कार्यक्रम संचालक)
सुमंगला दामोदरन (सह–संचालक)
अरिंदम बनर्जी
मीनाकेतन बेहेरा
चिराश्री दासगुप्ता
प्रिया भागोवालिया
अस्मिता काब्रा

बी. ए. ऑनर्स अँग्रेजी में मेजर के साथ

उषा मुदिगंती (कार्यक्रम संचालक)
अस्मिता काब्रा (सह–संचालक)
गुंजीत अरोड़ा
सयनदेब चौधरी
नूपुर सेमुअल
संजू थॉमस

बी. ए. ऑनर्स इतिहास में मेजर के साथ

संजय कुमार शर्मा (कार्यक्रम संचालक)
प्रवीन सिंह (सह–संचालक)
धीरेन्द्र डंगवाल
शैलजा मेनन
अपर्णा कपाड़िया
धीरज नाईट
अरिंदम बनर्जी

बी. ए. ऑनर्स गणित में मेजर के साथ

गीता वेंकटरमन (कार्यक्रम संचालक)
राखी बनर्जी (सह–संचालक)
चंदन मुखर्जी
दिव्या भाम्भरी
अंशु गुप्ता

बी. ए. ऑनर्स मनोविज्ञान में मेजर के साथ

रचना जोहरी (कार्यक्रम संचालक)
उरफत मीर (सह–संचालक)
रिक मित्र
नीतू सरीन
थोकचोम बिबिनाज़ देवी
गंगूमुमई केमई
विनोद आर.

बी. ए. ऑनर्स समाज विज्ञान और मानविकी में मेजर के साथ

डेनिस पी. लेईटन (कार्यक्रम संचालक)
मनीष जैन (सह–संचालक)
रचना चौधरी
गोपालजी प्रधान
राधिका गोविंद

बी. ए. ऑनर्स समाजशास्त्र में मेजर के साथ

रुक्मिणी सेन (कार्यक्रम संचालक)
अनिर्बान सेनगुप्ता (सह–संचालक)
जयति लाल
अमितेश मुखोपध्याय
किरणमयी भूशी

बिदान चंद्र दास
लॉवितोलि जीमो (एसएएस)

एसयूएस की कार्यक्रम समितियाँ (अक्तूबर–2012)

बी. ए. ऑनर्स अर्थशास्त्र में मेजर के साथ

ज्योतिर्मय भट्टाचार्य (कार्यक्रम संचालक)
सुमंगला दामोदरन (सह–संचालक)
सुरजीत मजूमदार
चिराश्री दासगुप्ता
प्रिया भागोवालिया
अरिंदम बनर्जी
मीनाकेतन बेहेरा
अस्मिता काब्रा (एसएचई)

बी. ए. ऑनर्स अँग्रेजी में मेजर के साथ

उषा मुदिगंती (कार्यक्रम संचालक)
मौशमी कांडली(सह–संचालक)
संजू थॉमस
नूपुर सेमुअल
सयनदेब चौधरी
भूमिका मैलिंग

बी. ए. ऑनर्स इतिहास में मेजर के साथ

योगेश स्नेही (कार्यक्रम संचालक)
प्रवीण सिंह (सह–संचालक)
संजय कुमार शर्मा
धीरेन्द्र डंगवाल
शैलजा मेनन

अपर्णा कपाडिया
धीरज नीते
अरिंदम बनर्जी

बी. ए. ऑनर्स गणित में मेजर के साथ

गीता वेंकटरमन (कार्यक्रम संचालक)
राखी बनर्जी (सह–संचालक)
दिव्या भाम्भरी
प्रणय गोस्वामी
रमणीक खस्सा
बालचंद प्रजापति
अंशु गुप्ता (एसबीपीपीएसई)

बी. ए. ऑनर्स मनोविज्ञान में मेजर के साथ

रचना जौहरी (कार्यक्रम संचालक, एसएचएस)
अनिल परसौद (सह–संचालक, एसएलएस)
रिक मित्र (एसएचएस)
नीतू सरीन (एसएचएस)
थोकचोम बिबिनाज़ देवी (एसएचएस)
गंगूमुमई केमई (एसएचएस)
विनोद आर. (एसएचएस)

बी. ए. ऑनर्स समाज विज्ञान और मानविकी में मेजर के साथ

डेनिस पी. लेईटन (कार्यक्रम संचालक)
मनीष जैन (सह–संचालक,एसईएस)
गोपालजी प्रधान
आनंद सौरभ
विक्रम ठाकुर
रोहित नेगी (एसएचई)

ममता करोल्लिल (एसएचएस)
राजन कृष्णन (एससीसीई)

बी. ए. ऑनर्स समाजशास्त्र में मेजर के साथ

उरफत मीर (कार्यक्रम संचालक)
अनिर्बान सेनगुप्ता (सह–संचालक, एसडीएस)
रुक्मिणी सेन
जयति लाल
अमितेश मुखोपाध्याय
किरणमयी भूशी
बिधान चंद्र दास
लॉवितोलि जीमो (एसएएस)

विश्वविद्यालय के केंद्र

एयूडी ने अनुसंधान, प्रलेखन और प्रशिक्षण के लिये केंद्र स्थापित करने को प्रस्तावित किया है। ये केंद्र समसामयिक महत्ता के लिये क्षेत्रों पर कार्य करेंगे और विश्वविद्यालय के दृष्टिकोण को अकादमिक एवम् शोध कार्यक्रमों के साथ सूत्रबद्ध करेंगे। यहाँ पर नेतृत्व एवम् परिवर्तन केंद्र, समानता एवम सामाजिक न्याय केंद्र, विनियोजित अध्यात्म एवम् शांति निर्माण केंद्र और गणित के सामाजिक अनुप्रयोग केंद्र को स्थापित किये जाने की योजना है। एक प्रकाशन केंद्र भी स्थापित किये जाने की योजना है। वर्तमान में तीन केंद्र कार्यरत हैं।

सीईसीईडी की गतिविधियों की मुख्य विशिष्टताएँ

एयूडी के अभिन्न अंग प्रारम्भिक बाल शिक्षा और विकास केंद्र (सीईसीईडी) ने 12 अक्तूबर, 2012 को अपने तीन वर्ष पूरे किये हैं। केंद्र ने बहुत ही कम समय में तिगुणी गति से विकास किया है और अपने आप को प्रारम्भिक बाल्यकाल के संसाधन केंद्र के अग्रणी के रूप में स्थापित किया है। इसके विकास को भारत की 12वीं पंचवर्षीय योजना में भी दर्शाया गया था। केंद्र को स्थापित किये जाने का प्राथमिक उद्देश्य एक समग्र और एक संगतता के अंतर्गत अनुसंधान, नीति और अभ्यास को साथ लाकर नये स्थान का निर्माण करना था।

सीईसीईडी 2012–13 में अनुसंधान और समर्थन पर ध्यान देते हुए निम्न गतिविधियों से जुड़ा रहा :

(1) अनुसंधान : इसके अंतर्गत दो अध्ययन चल रहे हैं और बेहतर प्रगति की ओर अग्रसर हैं। इनमें तीन राज्यों में चल रही प्राथमिक स्तर पर परिवर्तनीय गुणवत्ता के प्रभाव का एक अनुसंधान शामिल है जो कि दीर्घकालिक है और ईसीसी में अक्षरा फाउंडेशन के हस्तक्षेप के प्रभाव का मूल्यांकन है। यह अनुसंधान जल्द ही पूरा होने वाला है। सीईसीईडी ने 2012 में दो अन्वेषी अनुसंधान परियोजनाओं को भी शुरु और सम्पन्न किया है। साथ ही प्रारम्भिक बाल विकास अधिकार के लिये रूपरेखा विकसित करने के लिये एक अध्ययन भी किया गया जो कि अपनी विश्लेषणात्मक रिपोर्ट दे चुकी है। दो नीति संक्षिप्त–वृत्त का प्रकाशन हो चुका है और तीन नीति संक्षिप्त–वृत्त प्रकाशन के लिये जा चुके हैं। प्रत्येक परियोजनाओं का विवरण इस प्रकार है :–

पूर्ण अनुसंधान परियोजनाएँ

(अ) अन्वेषी अनुसंधान :

एक्सप्लोरिंग बिलीफ, वेल्यूज एंड प्रैक्टिस ऑन डिसीप्लीन ऑफ यंग चिल्ड्रेन इन कॉन्टेक्स्ट ऑफ राईट टू एजुकेशन एक्ट, 2009 :

शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 ने विद्यालयों में शारीरिक दंड का निषेध कर दिया है। शारिरिक दंड के प्रति विद्यालय प्रबंधन, शिक्षकों, छात्र और उनके माता–पिता का परिप्रेक्ष्य जानने के लिये 3 विद्यालयों में अन्वेषण किया गया। हालांकि तीनों विद्यालयों ने शारीरिक दंड को सुधारने के लिये नीति विकसित की है पर शिक्षकों के लिये उचित तरीके और छात्रों को अनुशासित करने के लिये प्रशासन ने कोई वैकल्पिक रणनीति विकसित नहीं की थी।

एक्सप्लोरिंग चाइल्ड इन प्रिजन सेटिंग :

यह अन्वेषी अध्ययन कारागार में सजा काट रहीं माताओं के साथ रह रहे 3 से 6 वर्ष के बच्चों के अनुभवों को अंतर्दृष्टि प्रदान करने के लिये तैयार किया गया था। भारतीय कानून के अनुसार, यदि बाहर कोई सहयोग उपलब्ध न हो तो जेल में रह रहीं माताएँ 5 वर्ष से छोटे बच्चों को अपने साथ रख सकती हैं। शुरुआती विश्लेषण से यह सामने आया कि अधिकतर मामलों में माता व पिता दोनों ही जेल में थे। दिलचस्प यह रहा कि बच्चे ऐसे भूमिका निभाने में व्यस्त दिखे जिनकी थीम ताला–चाबी, जेल, पुलिस, हत्या, चोरी आदि था। बच्चे अभद्र भाषा का भी प्रयोग करते थे। अवलोकन में यह सामने आया कि जो बच्चे जेल में ही पैदा हुए थे और चूंकि वे जेल परिसर तक ही सीमित थे, सुविधाओं और अनेक अनुभवों से वंचित थे तो उन्हें संकल्पना निर्माण में दिक्कत होती थी। इसके निष्कर्ष में यह भी पाया गया कि ये बच्चे अपने जेल आवास समय के दौरान कई जोखिमों के बीच हैं। फिर भी क्रेच द्वारा दिये जाने वाले सहयोग सेवा और अन्य कार्यक्रम बच्चों में बदलाव लाने के लिये अहम् भूमिका अदा करेगा और उन्हें विद्यालयों के लिये तैयार करेगा।

(ब) प्रारम्भिक बाल देखभाल और शिक्षा पर नीति संक्षिप्त–वृत्त

प्रकाशित नीति संक्षिप्त–वृत्त :

ईसीई इन इंडिया : ए स्नेपशॉट –

प्रारम्भिक बाल शिक्षा के अंतर्गत 3 से 6 वर्ष के बच्चों के नामांकन और भागीदारी की स्थिति और प्रवृत्ति पर उपलब्ध स्त्रोत के द्वारा आँकड़ों को इकट्ठा करने के लिये द्वितीयक

अनुसंधान शुरु किया गया। यह नीति संक्षिप्त–वृत्त मुख्य रूप से देश भर में प्रारम्भिक बाल शिक्षा पर उपलब्ध अपूर्ण आँकड़ों पर प्रकाश डालता है। इस दस्तावेज में प्रारम्भिक बाल शिक्षा की महत्ता के संदर्भ में इसकी संबंधित नीतियों और कार्यक्रमों, देश में मौजूद शिक्षक शिक्षा संस्थानों के अनुचित वितरण, वर्तमान में बाल जनसंख्या और ईसीई में 3 से 6 वर्ष के बच्चों के नामांकन में राज्यवार अंतर पर प्रश्न उठाए गये हैं। इसके द्वारा इस क्षेत्र में मौजूदा आँकड़ों में अंतर पर प्रकाश डाला गया है और नियमित अंतराल पर एक बोधगम्य एवम् नवीनतम आँकड़ों के स्त्रोत की जरूरत की ओर ध्यान इंगित किया गया है। इस नीति संक्षिप्त–वृत्त के निष्कर्षों और सुझावों को सीईसीईडी द्वारा आयोजित संगोष्ठी में और बाद में मार्च 2013 में जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय में एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में साझा किया गया।

'अनपैकिंग केयरः प्रोटेक्टिंग अर्ली चाइल्डहुड' –

यह नीति संक्षिप्त–वृत्त बाल्यकाल (विशेष तौर पर तीन वर्ष से नीचे के बच्चे) के दौरान सतत् देखभाल की जरूरतों की समझ पर ध्यान केंद्रित करता है। यह सुरक्षित, संगत और जिम्मेवार देखभाल की गंभीर महत्ता पर जोर देता है और इस क्षेत्र में मौजूदा आनुभविक तथ्यों के निचोड़ के जरिये बच्चों के लिये जल्दी सीखने के अवसरों को बढ़ाने और देखभाल के लिये रणनीति का सुझाव देता है।

प्रकाशन में नीति संक्षिप्त–वृत्त

रेट ऑफ रिटर्न्स फ्रॉम अर्ली चाइल्डहुडः

यह एक साबित किया जा चुका तथ्य है कि जीवन के शुरुआती वर्ष जीवन भर के विकास के लिये नींव तैयार करते हैं। सरकार द्वारा निवेश के आर्थिक प्रत्यर्पण पर किये गये अध्ययनों ने दर्शाया है कि प्रारम्भिक बाल शिक्षा पर शिक्षा निवेश वयस्क काल में किये गये निवेशों की तुलना में समाज को उच्च प्रत्यर्पण मिलता है। इस प्रकार यह नीति संक्षिप्त–वृत्त प्रारम्भिक बाल कार्यक्रमों में किये गये निवेश के आर्थिक प्रत्यर्पण पर अध्ययन और प्रभाव की समीक्षा पर ध्यान केंद्रित करता है।

मल्टीलिंग्वलिज्म (बहुभाषावाद):

बहुभाषावाद सामाजिक न्याय और सामाजिक व्यवहारके सिद्धांत के अंतर्गत कार्य करता है. शोध दर्शाता है कि जो बच्चे एक से अधिक भाषा बोलते हैं, एक ही भाषा जानने वाले बच्चों के बनिस्वत उनकी अधिभाषा की जानकारी अधिक होती है, समस्या समाधान में बेहतर

होते हैं, वृहत सृजनात्मकता दर्शाते हैं, विद्यालयों में सभी तरह से बेहतर प्रदर्शन करते हैं और दूसरो के प्रति अधिक सहिष्णु होते हैं। यह नीति संक्षिप्त–वृत्त समझाता है कि किस तरह बच्चे भाषा ग्रहण करते हैं और विभिन्न भाषाओं को विभिन्न तरीकों से ग्रहण करते हैं। यह भारत जैसे विजातीय देश में बहुभाषा को बढ़ावा देने के कारण भी देता है। यह अनुसंधान से प्राप्त तथ्यों के जरिये कुछ मिथकों को भी तोड़ता है और बहुभाषा को बढ़ावा देने के सुझाव देता है।

ब्रेन डेवलपमेंट इन द अर्ली ईयर्स : द न्यूरोसाइंस डिबेट –

पिछले दो दशकों में मस्तिष्क विकास और इसकी सुनम्यता में दिलचस्पी बढ़ी है और कई अनुशासनों के बीच पनप रही है। विशेष तौर पर इसका जोर जीवन के पहले तीन वर्ष पर है जो कि प्रतिकूल प्रभावों के लिये अधिक नाजुक माने जाते हैं और उसी समय बच्चों के जीवन के आधार के लिये "अवसरों की खिड़की" के रूप में हस्तक्षेपों को रोकने के लिये भी यह उत्तरदायी होता है। प्रारम्भिक हस्तक्षेपी कार्यक्रम में मौजूदा लहर जीवन के पहले 1000 दिनों को लक्ष्य बनाती है जो कि इस विश्वास पर आधारित है कि इस समय हुई कमी के कारण पूरे जीवन भर परिणामों को भुगतना पड़ता है। इस समय के दौरान लिये गये सुधारात्मक कदम नकारात्मक निष्कर्षों से बचा सकते हैं। इस अवस्था में कोई भी अभाव विकास पर प्रतिकूल असर डाल सकता है। इस अवस्था में अभाव को कैसे पलटा जाये? इस नीति संक्षिप्त–वृत्त ने भारतीय बच्चों के लिये बहस को शामिल करने की कोशिश की और क्रियान्वयन को लागू किया।

(स) प्रारम्भिक बाल विकास अधिकार की रूपरेखा

इस नीति संक्षिप्त–वृत्त ने 6 वर्ष की आयु से नीचे के बच्चों के लिये समर्थ अधिकारिता और बच्चों के लिये प्रावधानों की मौजूदा स्थिति के रूप में प्रारम्भिक बाल विकास अधिकार की संकल्पना को परिभाषित किया है। अधिकारों की रूपरेखा का विकास द्वितीयक स्त्रोत के आँकड़ों की समीक्षा और विशेषज्ञों की सलाह के आधार पर किया गया है। विश्लेषण ने यह दर्शाया है कि बच्चों के लिये नीतिगत पैराडाइम में बदलाव की जरूरत है। समग्र तौर पर इस पेपर में बहुत से गंभीर मुद्दों पर प्रकाश डाला गया है जो कि वृहत्तर नीति क्रियान्वयन के लिये जरूरी है। इसकी प्राप्तियों को शिक्षा के अधिकार मंच पर साझा किया गया है।

(द) जारी अनुसंधान परियोजनाएँ

लॉन्गिट्यूडनल रिसर्च टू स्टडी ट्रेंड इन पार्टीसिपेशन एंड इम्पैक्ट ऑफ क्वालिटी वैरीएशंस इन ईसीई ऑन स्कूल रीडीनेस लेवल्स एंड प्राइमरी स्कूल परफॉरमेंस :

इस अध्ययन का उद्देश्य लोगों के बीच, निजी और इच्छित क्षेत्रों जो कि प्रारम्भिक शिक्षा के लक्ष्यों पर सतत प्रभाव को निश्चित करेंगे और बच्चे के संपूर्ण विकास में योगदान देंगे, इसको भारतीय संदर्भ में किसी भी ईसीई कार्यक्रम के लिये मौलिक और गैर–समझौताकारी तत्वों की आनुभाविक पड़ताल और अन्वेषण करना है।

यह अध्ययन सीईसीईडी और वार्षिक शिक्षा रिपोर्ट केंद्र (एसर) की साझेदारी द्वारा संचालित है। इसको यूनिसेफ, विश्वबैंक, मानव संसाधन विकास मंत्रालय (भारत सरकार), चिल्ड्रेन इन्वेस्टमेंट फंड फाउंडेशन, बर्नार्ड वेन लीयर फाउंडेशन और सोसाइटी फॉर एलिमिनेशन ऑफ रुरल पॉवर्टी (आंध्र प्रदेश सरकार) द्वारा वित्तीय सहायता दी जाती है। इसकी एक कड़ी A ऐसर द्वारा और दूसरी कड़ी B सीईसीईडी द्वारा आंध्र प्रदेश, असम और राजस्थान में संचालित है। वहीं तीसरी कड़ी C (सीईसीईडी द्वारा संचालित) उन राज्यों में चल रही है जहाँ ईसीई का प्रदर्शन अच्छा है जैसे गुजरात, कर्नाटक, महाराष्ट्र और उत्तराखंड। इसके अलावा आंध्रप्रदेश और राजस्थान में मौजूद दूसरी कड़ी B के दो नमूनो को केस स्टडी के रूप में लिया गया है।

- सर्वेक्षण साइट में ईसीई की उपलब्धता का आंकलन और जिला स्तर पर उसे तीन से साढ़े तीन एवम् चार से साढ़े चार वर्ष के बच्चों की ईसीई में सहभागिता को विश्लेषित करने के लिये कड़ी A द्वारा प्री टेस्ट आँकड़ों को इकट्ठा किया गया। इस रिपोर्ट को सीईसीईडी के अनुसंधान सहायक एसर द्वारा तैयार किया गया है।
- गुणवत्ता रूपांतरण रिपोर्ट–बच्चों के एक सैम्पल द्वारा सार्वजनिक, निजी और गैर सरकारी संगठन क्षेत्रों के बीच ईसीई के विभिन्न कार्यक्रमों की गुणवत्ता परिवर्तनीयता के अध्ययन हेतु कड़ी B द्वारा प्री टेस्ट आँकड़ों को विश्लेषित किया गया। इसकी प्राप्तियों को "क्वालिटी एंड डाइवर्सिटी इन अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन" के नाम से रिपोर्ट के रूप में दर्ज किया गया। इस विश्लेषण की प्राप्तियों के विभिन्न पहलुओं को अलग–अलग मंचों पर प्रस्तुत किया गया जिसमें अप्रैल 2012 में प्यूर्टो रीको में सीआइईएस सम्मेलन, सीईसीईडी द्वारा आयोजित एक सेमिनार, नवंबर 2012 में जकार्ता में अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन और बाद में मार्च 2013 में जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली में हुआ अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन शामिल है।
- अक्तूबर 2013 में अध्ययन से उभरती प्राप्तिओं और अध्ययन के लिये परामर्शी पद्धति में विश्लेषण योजना को विकसित करने हेतु सभी सदस्यों के साथ एक अनुसंधान सलाहकार समिति बैठक और संचालन बैठक आयोजित की गई।
- पांच एवम् साढ़े पांच तथा छः एवम् साढ़े छः वर्षीय बच्चों के 2462 सैम्पल के अंतर्गत

और तीनों राज्यों में मौजूद सार्वजनिक, निजी और गैर सरकारी संगठनों के बीच 298 ईसीई केंद्रों द्वारा एक पोस्ट टेस्ट चरण पूरा कर लिया गया है। वर्तमान में आँकड़ों को विश्लेषण के लिये तैयार किया जा रहा है।

- अप्रैल 2012 में तीनों राज्यों से संबंधित पोस्ट टेस्ट के लिये कोहॉर्ट (सहभागिता की नियमितता और उसकी स्थिति के बारे में जानना) के तिमाही चक्र को पूरा कर लिया गया है। बाद में दूसरे चक्र के दौरान बच्चों पर फिर से नजर रखी गई। विभिन्न ईसीई केंद्रों के बीच बच्चों की गतिविधियों को रिकॉर्ड किया गया और संबंधित केंद्रों के द्वारा बच्चों की हाजिरी भी इकट्ठी की गई। यह पाया गया कि ईसीई नीति और पाठ्यचर्या के अभाव के चलते बच्चे विभिन्न मार्गों पर चल रहे थे।
- केस अध्ययन : अध्ययन की तीसरी कड़ी C ने गुणात्मक अनुसंधान पद्धति का प्रयोग करके ईसीसीई में संलग्न अभ्यासों के 9 केस अध्ययनों को तैयार किया है। केस अध्ययन के लिये आँकड़ों का संग्रहण और केस रिपोर्ट का पहला ड्राफ्ट भी तैयार हो चुका है। 8–10 फरवरी 2013 के बीच प्राप्तियों के प्रस्तुतिकरण और साझे सैद्धांतिक आधारों को विकसित करने के प्रत्यक्ष प्रयास के लिये एक तीसरे केस अध्ययन कार्यशिविर को आयोजित किया गया। इसी को ध्यान में रखते हुए मार्च 2013 में सभी 9 केस अध्ययनों को पीयर रिव्यू के लिये भेज दिया गया है। केस अध्ययनों के लिये एक सेमिनार अप्रैल 2013 के लिये प्रस्तावित किया गया जो कि अध्ययनों के संकलन की रिपोर्ट के फाइनल ड्राफ्ट का प्रस्तुतिकरण करेगा।
- इम्पैक्ट असेसमेंट ऑफ द अक्षरा इंगेजमेंट विद द आइसीडीएस सिस्टमः अक्षरा फाउंडेशन के अनुरोध पर वर्तमान में सीईसीईडी बंगलौर में आइसीडीएस में उसके हस्तक्षेपों के मूल्यांकन का संचालन कर रहा है। फाउंडेशन ने ईसीई में चार वर्षों तक आइसीडीएस में हस्तक्षेप किया है और लगभग 1771 आंगनवाड़ी केंद्रों और 100 स्वाधीन बालवाड़ी को समेटा है। अध्ययन के लिये ईसीई केंद्रों के 48 रैंडम सैम्पल द्वारा व्यवस्थित रूप से ग्रहण किये गये आँकड़ों का संग्रहण पूरा हो चुका है और इनका विश्लेषण प्रक्रिया में है। अक्षरा फाउंडेशन इस बात का समर्थन करता है कि फील्ड से मिले अनुभव वृहत स्तर पर ईसीईसी कार्यक्रमों की योजना और उसके प्रभावी क्रियान्वयन को लागू कर सकता है।

समर्थन और प्रचार :

समर्थन और प्रचार हमेशा से सीईसीईडी की मूल कार्यप्रणाली का अभिन्न अंग रहा है। इस वर्ष भी यह महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा परंतु अधिक गहनता और बदलाव के साथ. नियमित तिमाही व्याख्यान/सेमिनारों के साथ–साथ इस वर्ष अप्रैल 2012 में "वर्ल्ड ईसीई डे" का एक दिवसीय कार्यक्रम रखा गया जो बाल्यावस्था के भाव और इस उम्र के समूह की जरूरतों के समर्थन को उत्सव के रूप में मनाने के लिये बच्चों और ईसीई प्रणेताओं को समर्पित किया गया। कार्यक्रम को आयोजित और नियोजित करने के लिये सीईसीईडी को यूनेस्को और यूनिसेफ द्वारा सहयोग प्राप्त हुआ और यह सफल रहा। विश्व बैंक, यूनिसेफ और अन्य संगठनों के सहयोग के साथ सीईसीईडी ने अगस्त 2012 में मेजर दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सम्मेलन का आयोजन किया जिसकी प्रतिभागियों, साझेदारों और प्रणेताओं ने भरपूर प्रशंसा की। समर्थन प्रयासों का हिस्सा होने के नाते सीईसीईडी, ईसीई की स्थिति पर नीति संक्षिप्त–वृत्त का भी समर्थन करता है और इसके अनुसंधान से प्राप्त हुए निष्कर्ष इसके व्याख्यान/सेमिनार सीरिज का हिस्सा बन गये हैं।

दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सम्मेलन 2012 : 27–29 अगस्त, 2012 के बीच विश्व बैंक के सहयोग के साथ सीईसीईडी ने प्रारम्भिक बाल देखभाल और शिक्षा पर दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सम्मेलन का आयोजन, द ऑबरोय, दिल्ली में किया। इस सम्मेलन का उद्देश्य क्षेत्रीय स्तर पर आठ दक्षिणी एशियाई देशों के बीच प्रारम्भिक बाल देखभाल और शिक्षा को नीतिगत स्तर की चर्चा के केंद्र में लाना था और इसके लिये दक्षिण एशिया के लिये क्षेत्रीय रणनीति तैयार करने के लिये सरकारों का सहयोग प्राप्त करना था। सम्मेलन में कुल 232 प्रतिभागियों जिसमें 62 वक्ता भी शामिल थे, ने भाग लिया। आठ देशों में से सात दक्षिणी एशियाई देश अफगानिस्तान, बांग्लादेश, भूटान, भारत, नेपाल, पाकिस्तान और श्रीलंका के प्रतिनिधि शामिल थे। इसमें की गई सहभागिता प्रशंसनीय थी। सम्मेलन का चरम बिंदु क्षेत्रीय रणनीति से संबंधित सुझावों के साथ–साथ राष्ट्रीय लक्ष्य और दिल्ली घोषणा के द्वारा उपजे सरोकार थे।

तिमाही संगोष्ठी : सीईसीईडी ने केयर इंडिया के सहयोग में "क्वालिटी इन अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन–इश्यू एंड इनिश्येटीव इन इंडिया" नाम का सेमिनार आयोजित किया. यह सेमिनार 28 जनवरी 2013 को सीआईईटी, एनसीईआरटी में हुआ। इस सेमिनार को आयोजित करने का विशेष उद्देश्य मौजूदा आँकड़ों और जमीनी यथार्थ के बीच अंतर को प्रकाश में लाना और सिद्धांत, नीति एवम् अभ्यास में एक जुड़ाव को उभारना रहा।

विश्वविद्यालयों और गैर सरकारी संगठनों के इस क्षेत्र के प्रसिद्ध शिक्षाविद् और व्यावसायिकों ने चर्चा में योगदान दिया। सेमिनार में चर्चा के मुख्य बिंदु थे : भारत में ईसीई की वर्तमान स्थिति, सीईसीईडी की इम्पैक्ट स्टडी से प्राप्त निष्कर्षों को साझा करना, भारत सरकार द्वारा गुणवत्ता संबंधित प्रयास, ईसीसीई के क्षेत्र में राज्यों और एनजीओ द्वारा लिये गये प्रयासों के कुछ अनुभव।

वैश्विक कार्यवाही सप्ताह : सीईसीईडी और राष्ट्रीय बाल भवन के साझेदारी में यूनिसेफ और यूनेस्को के सहयोग द्वारा 26 अप्रैल 2012 को बाल भवन में "सेलिब्रेटिंग चाइल्डहुड" कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम 'सबके लिये शिक्षा' के वैश्विक कार्यवाही सप्ताह का हिस्सा था जो कि ऐसे संगठनों पर प्राथमिक तौर पर ध्यान केंद्रित करता है जो छोटे बच्चों और उनके परिवारों को सहयोग देते हैं। यह कार्यक्रम बाल केंद्रित उपकरणों जैसे सबके लिये शिक्षा, मिलेनियम विकास लक्ष्य और शिक्षा के अधिकार के साथ प्रभावी तौर पर ईसीसीई की जरूरत का समर्थन करता है। कार्यक्रम में अलग–अलग गैर–लाभकारी संगठनों से 130 बच्चे पैनल चर्चा, कठपुतली तमाशे के साथ–साथ गतिविधि कक्ष में कहानी सुनाओ सत्र और प्रेरक गतिविधियों (जैसे मिट्टी के बर्तन बनाना और चित्रकारी) में शामिल थे।

वेब पोर्टल लॉन्चः अगस्त 2012 में दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सम्मेलन में सीईसीईडी द्वारा वेब पोर्टल को लॉन्च किया गया। वर्तमान में साइट को संशोधन के लिये स्थगित रखा गया है। पोर्टल को पुनः आरम्भ कर इसको "अर्ली स्कोपः एन अर्ली चाइल्डहुड केयर एंड एजुकेशन पोर्टल" बोला जायेगा। इसका उद्देश्य सभी ईसीसीई के प्रणेताओं के बीच चर्चा और समझ विकसित करने के लिये योगदान की शुरुआत करना तथा विभिन्न परिप्रेक्ष्यों के लिये मंच को तैयार करना है। इस मंच को बच्चों और उनके परिवारों के लिये उच्च गुणवत्ता आधारित सेवा को बढ़ावा देने की नीतियों के समर्थक के रूप में भी प्रयोग किया जा सकता है।

सीईसीईडी की टीम विजिटः सीईसीईडी के सदस्यों ने प्रारम्भिक बाल शिक्षा और विकास में बेहतर अध्ययन को बढ़ावा देने के लिये अपनी विशेषज्ञता को अन्य संगठनों के साथ साझा किया। विवरण इस प्रकार है :–

जकार्ता अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन :

5–7 नवम्बर 2012 को जकार्ता में एक अंतरराष्ट्रीय प्रारम्भिक बाल देखभाल और विकास सम्मेलन को विश्वबैंक, एशिया पेसेफिक रीजनल नेटवर्क फॉर अर्ली चाइल्डहुड और इण्डोनेशिया अर्ली चाइल्डहुड केयर एंड डेवलपमेंट कोएलिशन द्वारा सह आयोजित किया गया। इस सम्मेलन को प्रारम्भिक अधिगम और विकास वर्षों की महत्ता पर प्रकाश डालने के लिये आयोजित किया गया था। सम्मेलन में सीईसीईडी के सात सदस्यों ने भाग लिया और पेपर भी प्रस्तुत किये।

प्रारम्भिक बाल देखभाल और शिक्षा नीति राष्ट्रीय सलाहकारः

29 अक्तूबर 2012 को डॉ. मोनिमलिका डे, सुश्री प्रीति महलवाल और सुश्री देविका शर्मा ने प्रारम्भिक बाल शिक्षा, पाठ्यचर्या एवम् रूपरेखा और ईसीई की गुणवत्ता मानकों पर आधारित एक राष्ट्रीय नीति के दस्तावेज को अंतिम रूप देने के लिये महिला बाल विकास मंत्रालय द्वारा आयोजित एक राष्ट्रीय सलाहकार बैठक में भाग लिया।

विद्यालय पूर्व शिक्षा के लिये शिक्षा अधिकार के विस्तार पर राष्ट्रीय सलाहकार :

प्रो. वनिता कौल (निदेशक, सीईसीईडी) और प्रो. आर. गोविंदा (कुलपति, न्यूपा) ने 7 फरवरी 2013 को न्यूपा, दिल्ली में विद्यालय पूर्व शिक्षा के लिये शिक्षा अधिकार के विस्तार

पर आयोजित बैठक में सह समिति द्वारा विकसित एक ड्राफ्ट दस्तावेज को प्रस्तुत किया. जहाँ देविका शर्मा, डॉ० रीमा कोच्चर, श्री संदीपन पॉल, सुश्री पारुल कोहली और सुश्री अपराजिता बारगढ़ ने भाग लिया।

19 अक्तूबर 2013 को विश्व बैंक द्वारा आयोजित सेमिनार "मेकिंग अर्ली चाइल्डहुड इंटरवेंशंस इफेक्टिव" को एल्डरमैन द्वारा प्रस्तुत किया गया जिसकी अध्यक्षता प्रो. वनिता कौल ने की और इसमें सीईसीईडी के कुछ सदस्यों द्वारा भाग भी लिया गया।

जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय सम्मेलन :

जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय में 21–22 मार्च 2013 को आयोजित 'अर्ली चाइल्डहुड डेवलपमेंट स्मॉल स्टेप्स टू ब्राइट फ्यूचर" पर प्रथम अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में सीईसीईडी की टीम के चार सदस्यों ने भाग लिया। प्रो. वनिता कौल ने 'डिमिस्टीफाइंग अर्ली चाइल्डहुड केयर एंड एजुकेशन इन इंडियन कोन्टैक्टस' पर एक वार्ता प्रस्तुत की. साथ ही सीईसीईडी के तीन सदस्यों ने पेपर भी प्रस्तुत किये।

सुश्री देविका शर्मा ने 9 अक्तूबर 2012 को इंडिया इंटरनेशनल सेन्टर एनेक्स में "आर्ट एंड एजुकेशन" पर एक सेमिनार में भाग लिया जहाँ प्रो. कष्ण कुमार और अन्य वक्ताओं द्वारा कला आधारित शिक्षा पर चर्चा की गई।

शिक्षा का अधिकार मंच :

शिक्षा का अधिकार मंच और प्रारम्भिक बाल देखभाल और विकास अधिकार द्वारा आयोजित बैठक के प्रत्येक चरण के दौरान सीईसीईडी की सुश्री मीनाक्षी डोगरा ने विशेष निर्धारकों के साथ 8 वर्ष से नीचे की आयु वाले बच्चों के लिये अधिकारिता पर रूपरेखा प्रस्तुत की।

- प्रो. वनिता कौल ने लंदन में 29 अक्तूबर 2012 को बाल निवेश फंड की सलाह समिति बैठक में सदस्य के रूप में भाग लिया।
- प्रो. वनिता कौल को दिसम्बर 2012 में नेपाल सरकार द्वारा प्रारम्भिक बाल शिक्षा राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रारम्भिक बाल शिक्षा की महत्ता पर एक मूल भाव प्रस्तुत करने को आमंत्रित किया गया।
- प्रो. वनिता कौल को 8–9 मार्च 2013 को वॉशिंगटन डी. सी. में एक वैश्विक मिलाप

तथा एकीकृत बाल विकास पर उनके शोध कार्य को प्रस्तुत करने के लिये आमंत्रित किया गया।

- प्रो. वनिता कौल एनसीटीई परिषद् की सदस्य थीं और उसकी बैठकों में नियमित भाग लेती रहीं हैं।

भूटान प्रतिनिधिमंडल :

19 दिसम्बर 2012 को भूटान प्रतिनिधिमंडल समूह ने सीईसीईडी, अम्बेडकर विश्वविद्यालय दिल्ली का दौरा किया। प्रतिनिधिमंडल की अगुआई सुश्री श्रेया बरुआ (संचालक, सेव द चिल्ड्रेन, इंडिया) द्वारा की गयी। इसका मुख्य कार्य भारत में प्रारम्भिक बाल देखभाल और विकास हस्तक्षेपों को समझना था।

डॉ० एन्न डी गिरॉलामो (वरिष्ठ सलाहकार, 'केयर' बाल विकास, यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ अमेरिका) ने सीईसीईडी के प्रारम्भिक बाल शिक्षा के क्षेत्र में हुए कार्य को समझने के लिये दौरा किया। जॉर्ज मेसन यूनिवर्सिटी की पूर्व छात्रा सुश्री लाम्या और ग्रेजुएट स्कूल ऑफ एजुकेशन एंड इन्फर्मेशन सिस्टम, यूनिवर्सिटी ऑफ केलिफोर्निया की पी.एच.डी. की छात्रा सुश्री मेलिसा गुडनाइट ने भारतीय प्रारम्भिक बाल शिक्षा प्रणाली को समझने के लिये सीईसीईडी का दौरा किया।

गुणवत्ता प्रोत्साहन, समर्थता निर्माण और नीतिगत स्तर पर सहायता :

सीईसीईडी प्रशिक्षण औए तकनीकी सहायता के क्रम में बच्चों के लिये गुणवत्ता आधारित सेवाओं के लिये वचनबद्ध है।

पश्चिम बंगाल की ईसीई पाठ्यचर्या :

यूनिसेफ, पश्चिम बंगाल महिला एवम् बाल विकास मंत्रालय के साथ राज्य में विभिन्न सरकारी और गैर सरकारी एजेंसियों में प्रारम्भिक बाल शिक्षा की महत्ता की जागरूकता को बढ़ाने हेतु भागीदार है। संवाद की पहल करने के लिये बहुत से कार्यशिविरों का आयोजन किया गया और इसमें बहुत से राष्ट्रीय संगठनों जैसे एनआइपीसीसीडी, एनसीईआरटी और सीईसीईडी को आमंत्रित किया गया। राज्य की आंगनवाड़ी के लिये एक प्रतिभागी प्रक्रिया को प्रारम्भ करने हेतु नई पाठ्यचर्या को विकसित किया गया। सीईसीईडी ने नई पाठ्यचर्या विकास, क्षेत्र परीक्षण पद्धति की समीक्षा के लिये तकनीकी विशेषज्ञता उपलब्ध

करवाया और पाठ्यचर्या के दस्तावेजों एवम् क्रियान्वयन के लिये कुछ साधन उपलब्ध करवाये हैं। एक सीईसीईडी सदस्य ने पायलट कार्यक्रम के निरीक्षण के लिये क्षेत्र में दौरा किया और उन 12 आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं जो कि पायलट कार्यक्रम में भागीदार थे, उनके साथ एक गहन समूह चर्चा को भी आगे बढ़ाने में मदद की।

मोबाइल क्रेच :

सीईसीईडी ने "प्रारम्भिक बाल देखभाल और विकास पर अनुकूलन और संवेदनशीलता" के लिये तकनीकी सहायता उपलब्ध करवाई है। सीईसीईडी अपेक्षानुसार मोबाइल क्रेचो के द्वारा प्रथा को स्थापित करने हेतु प्रशिक्षण संचालन का निरीक्षण करता है।

प्रारम्भिक अधिगम मानक :

प्रारम्भिक बाल एशिया क्षेत्रीय नेटवर्क ने ईएलएस को "बच्चे क्या जानना चाहते हैं और क्या कर सकते हैं के मानक समूह" के रूप में परिभाषित किया है। यह एक कौशलों का या ज्ञान का समूह है जो एक विशेष आयु तक बच्चे को ग्रहण कर लेने चाहिये। ईएलएस पाठ्यचर्या, मूल्यांकन साधन और अध्यापन रणनीतियों की तैयारी करने में मदद करता है। विकासीय उपयुक्त अभ्यास के आधार पर भारतीय संदर्भ के लिये ईएलएस को सीईसीईडी द्वारा विकसित किया गया है। ईएलएस द्वारा भाषा और साक्षरता, भौतिक और संवेदी विकास, संज्ञानात्मक विकास, सामाजिक और भाव विकास एवम् सृजनकारी और सौन्दर्यीकरण को बढ़ावा देने के विकास को मुख्य रूप से चिह्नित किया गया है।

सीईसीईडी की सलाहकार समिति की चौथी बैठक:

सीईसीईडी की सलाहकार समिति की चौथी बैठक इंटरनेशनल गेस्ट हाउस, दिल्ली विश्वविद्यालय में 25 मार्च 2013 को हुई। इस बैठक का एजेंडा जनवरी 2012 से मार्च 2013 तक सीईसीईडी की प्रगति की समीक्षा और 2013 के लिये गतिविधि योजना के प्रस्ताव की चर्चा करना था। बैठक में सलाहकार समिति को नये चेयरपर्सन प्रो. ए. के. शर्मा (पूर्व निदेशक, एनसीईआरटी और एयूडी अकादमिक परिषद् सदस्य) के साथ पुनः संगठित किया गया।

सामुदायिक ज्ञान केंद्र, एयूडी

सामुदायिक ज्ञान केंद्र ने नेबरहुड रिकॉर्डिंग वर्कशॉप और अस्थायी नेबरहुड म्युजियम की श्रृंखला के साथ दिल्ली नागरिक मेमोरी प्रोजेक्ट शुरु किया। परंपरागत तौर के कृषि

तरीकों और ज्ञान जो कि सतपुड़ा (नर्मदा नदी के दक्षिण में स्थित) के सूखा कृषि क्षेत्रों में अभी भी प्रयोग में है, उसको मध्य प्रदेश परियोजना में दर्ज किये जाने का कार्य चल रहा है। उत्तर–पूर्व परियोजना मोन, नागालैंड का एक केंद्र है जहाँ एक समुदाय सांस्कृतिक संसाधनों के ह्रास की नृजातीय अन्वेषण की अगुआई कर रहा है। इसका एक अन्य पहलू भौतिक संस्कृतियों का एक आंतरिक अध्ययन करना है – जिसमें नागालैंड, मणिपुर और असम के समुदायों के अधिक पारम्परिक समुदायों में समसामयिक निर्मितियों और इसका प्रयोग होगा।

सामुदायिक ज्ञान केंद्र की गतिविधियों का अन्य पहलू संग्रहालयों के साथ इसका जुड़ाव है, जहाँ दुर्लभ, अनदेखे और ऐतिहासिक सामग्री की सुलभता और डिजिटलाइजेशन को अग्रणी संग्रहालयों द्वारा ऐतिहासिक सामुदायिक ज्ञान का पुनः निर्धारण किया जायेगा। भारतीय संग्रहालय, कोलकाता के साथ मिलकर नागालैंड के ऐतिहासिक सामग्री शिल्पतथ्यों को पुनः निर्धारित करने के लिये एक कार्यक्रम शुरु किया गया है। राष्ट्रीय संग्रहालय और राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली के साथ मिलकर ऐतिहासिक क्राफ्टस और शिल्पतथ्यों के अंतर्विषयक पुनः मूल्यांकन के लिये ऐसा ही एक और समान कार्यक्रम शुरु किया गया है। समीक्षा और टिप्पणी के लिये स्त्रोत समुदाय के लिये शिल्प तथ्यों और फोटो का डिजिटल प्रत्यावर्तन करना समुदाय पुनः निर्धारण का एक और पहलू है जिसमें सामुदायिक ज्ञान केंद्र ने सहयोगी के रूप में प्रवेश किया है।

सामुदायिक ज्ञान केंद्र ने दिल्ली विश्वविद्यालय के संकाय के साथ सामाजिक विज्ञान शोध में डिजिटल दृश्य–ध्वनि पद्धति पर आधारित क्रेडिट पाठ्यक्रम विकसित किया है। यह चयनित छात्रों के लिये फील्ड शिक्षावृत्ति कार्यक्रम, अंतरराष्ट्रीय अतिथि संकाय और इंटर्नशिप कार्यक्रम को क्रियान्वित करेगा।

विश्वविद्यालय आईटी सेवा द्वारा डिजिटल प्रत्यावर्तन को विकसित किये जाने वाले कार्य के अलावा डॉ० लोतिका वरदराजन के नृजातीय अनुसंधान आँकड़ों के आधार पर सामुदायिक ज्ञान केंद्र देश का पहला मल्टीमीडिया एथ्नोग्राफिक आर्काइव भी निर्मित करेगा। आने वाले महीनों में एयूडी इन्सटीट्यूश्नल आर्काइव को सृजित करने के लिये सामुदायिक ज्ञान केंद्र क्रियान्वयन एजेंसी के रूप में कार्य कर रहा है।

रिपोर्ट :

केंद्र द्वारा सम्पन्न विभिन्न गतिविधियों की अवस्थिति का ब्यौरा निम्न रिपोर्ट में उल्लिखित है :

1. दिल्ली नागरिक मेमोरी परियोजना :

दिल्ली नेबरहुड मेमोरी परियोजना नागरिकों की कहानियों, निजी और वैयक्तिक जुबानी इतिहास और संग्रहण जो अभिलेख रिकॉर्ड को पूरित करें, को दर्ज करने और अनावरण करने का प्रयास है। इस परियोजना में नेबरहुड केंद्रित दस्तावेज कार्यशिविरों की एक श्रृंखला को संचालित किया जायेगा जिसकी पराकाष्ठा उन समसामयिक नेबरहुड संग्रहालयों में है जिनको दिल्ली की विविधता को अनावृत करने के लिये चयनित किया गया है। प्रदर्शनी/नेबरहुड संग्रहालय निजी कहानियों और विशेष स्थानीय वस्तुओं को दर्ज और प्रदर्शित कर यह उजागर करने का प्रयास करेगा कि लोग क्यों अपनी जड़ों को छोड़ कर यहाँ रहने लगे और इस शहर को अपना घर बना लिया।

पश्चिम में 'शादी खामपुर' क्षेत्र में पहला नेबरहुड संग्रहालय 26 दिसम्बर 2012 से लेकर 28 फरवरी 2013 तक आम लोगों के लिये खोला गया। यह शोध परियोजना वर्तमान में

एयूडी के सहयोग से चल रही है और राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान, आईसीएचआर और अन्य संस्थानों के साथ सहयोग और दिल्ली के अन्य क्षेत्रों में इस परियोजना को बनाये रखने के लिये चर्चा में है।

2. मध्य प्रदेश—सतपुड़ा क्षेत्र :

वर्तमान में सामुदायिक ज्ञान केंद्र ने राष्ट्रीय अन्वेषण फाउंडेशन फेलोशिप कार्यक्रम, पिपरिया, होशंगाबाद, मध्य प्रदेश के अंतर्गत एक फील्ड फेलो को जोड़ा है। एक स्थानीय संगठन के साथ काम करते हुए जतन ट्रस्ट (फेलो) मौखिक इतिहास और पारम्परिक कृषि अभ्यासों और क्षेत्र में इसका कितना प्रयोग है, को दर्ज करने में व्यस्त है। मई 2013 से कुछ मौलिक अन्वेषण और बीज एवम् कृषि अभ्यास आधारित पारंपरिक ज्ञान को 8वें नेशनल रिव्यू ऑफ नेशनल इनोवेशन फाउंडेशन में समीक्षा के लिये लिया गया है। इस क्षेत्र की बाकी जाँच सतपुड़ा क्षेत्र में अनधिकृत जनजाति स्मारकों के नृ–पुरातात्विक क्षेत्रों में और सांस्कृतिक परिदृश्यों के मौखिक इतिहासों, गांव एवम् समुदायों, स्थानों को व्याख्यायित करने में, तथा कृषि, जंगल, क्राफ्टस कौशल एवम् ज्ञान आधारित परंपरा और परिदृश्यों के सतत् अन्वेषण की ओर नियोजित है।

3. उत्तर–पूर्व क्षेत्र

(क) इसका उद्देश्य मोन नागालैंड के सहयोग से चल रही परियोजना "डॉक्यूमेंटेशन ऑफ कोन्यक कम्युनिटी कल्चरल रिसोर्स" के कार्य को संगठित करना है। यह परियोजना मोन नागालैंड जिले में और उसके आसपास समुदाय आधारित पारम्परिक ज्ञान की वृहत श्रेणी, कार्य प्रक्रियाओं और मौखिक ज्ञान को डिजिटल रूप में दर्ज करेगी. कोन्यक के लगभग 100 गाँवों के दायरे में पूछताछ और प्रश्नावलियों के जरिये पहचान किये गये मूर्त एवम् अमूर्त दोनों तरह के ज्ञानधारकों की पहचान करने का पहले चरण का कार्य पूरा कर लिया गया है। इस चरण में सामुदायिक ज्ञान केंद्र और एंथ्रोपोलोजिकल सर्वे ऑफ इंडिया परियोजना में सहायक थे। दूसरे चरण के लिये एक स्थानीय पार्टनर 'वालो संगठन, मोन (स्टेट प्लानिंग बोर्ड) नागालैंड' द्वारा वित्तीय सहायता दी जा रही है। इस परियोजना को राज्य मंत्रीमंडल द्वारा पास कराने के लिये गवर्नर कार्यालय, नागालैंड की बहुत मदद मिली।

वर्तमान में सीसीके–एनआईएफ फील्ड डॉक्युमेंटेशन फेलो इस अध्ययन को पूरा करने, सामुदायिक ज्ञान को दर्ज करने और जिले के तीन अलग–अलग क्षेत्रों में उपस्थित

जंगलों के प्रयोग को दर्ज करने हेतु मोन जिले में स्थित हैं। इस संगृहीत आँकड़ों को मौखिक ज्ञान अनुसंधान और प्रलेखन हेतु एयूडी के साथ साझा किया जायेगा। ये आँकड़े मोन शहर में विकास और शिक्षा हेतु जनजातीय विरासत केंद्र के सामुदायिक डिजिटल आर्काइव पर भी उपलब्ध होंगे।

(ख) उत्तर–पूर्व मंच (एनईएफ)–सीसीके की साझेदारी में चलने वाली परियोजना श्रृंखला "मटीरियल कल्चर, क्रिएशन एंड यूजः पर्सपेक्टिव फ्रॉम इनसाइड द कम्युनिटी" की थीम के साथ इसकी फील्ड विजिट को पूरा किया गया। सामुदायिक ज्ञान केंद्र ने एयूडी में बहुविषयक उत्तर–पूर्व मंच के संकाय सदस्यों द्वारा सामुदायिक ज्ञान पर 7 अनुसंधान परियोजनाओं का संचालन किया।

"कन्टेम्प्रेरी मटीरियल कल्चर एंड कल्चरल चेंज इन नॉर्थ ईस्ट इंडिया" विषय पर आमंत्रित किये गये पेपर के संकलन के हिस्से के रूप में शोध परियोजनाओं के लिये उत्तर–पूर्व मंच संकाय के सदस्यों द्वारा लिखे गये पेपर को प्रकाशन के लिये भेजा गया है। वस्तुओं के सांस्कृतिक 'अमूर्त रूप' को संबोधित करते हुए, ये अध्ययन भौतिक संस्कृति के अंतर्गत समुदाय के 'अंतरंगी' द्वारा ये उजागर करते हैं कि कैसे एक मूल्यवान सामाजिक शब्द कोश की गतिशील सुस्पष्टता प्रतिस्थापित होती है और यह एक स्थिर वस्तु से कहीं अधिक एक ऐसे शिल्पतथ्य की ओर देखना है जो उन समाजों से विविध तौर पर जुड़ी है जो उन्हें उत्पादित करते हैं।

4. संग्रहालयों में सामुदायिक ज्ञान :

ऐतिहासिक सामुदायिक ज्ञान के पुनः निर्धारण की प्रक्रिया का हिस्सा होने के नाते सामुदायिक ज्ञान केंद्र देश भर के अग्रणी संग्रहालयों के साथ परियोजनाओं में साझेदार हैं।

राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान, दिल्ली के साथ हुए एक कार्यशिविर के आधार पर स्कॉलर और पेशेवरों ने मिलकर एक बहुविषयक अध्ययन की रूपरेखा तैयार की है। यह अध्ययन मुख्य रूप से प्राचीन औपनिवेशिक टैक्सटाइल्स जिसमें विशिष्ट तौर पर एक छापा टैक्सटाइल पीस "तपिस मोघोल" पर ध्यान केंद्रित करेगा, साथ ही वर्तमान में म्यूजियम ऑफ प्रिंटेड टैक्सटाइल्स, मलहाऊस, फ्रांस में स्थित उसी पदार्थ के परम्परागत फूल–पत्तियों और सौंदर्य तत्वों को भी ध्यान में रखा जायेगा। यह राष्ट्रीय संग्रहालय, दिल्ली की प्रदर्शनी में उच्च स्तरीय डिजिटल दृश्य के साथ मिलकर कार्य करेगा, यह कार्यशिविर कई

अकादमिक क्षेत्रों जैसे कला, इतिहास, वास्तुकला और पुरातत्व, वनस्पतिशास्त्र, प्राणीविज्ञान, टैक्सटाइल्स और प्राकृतिक प्रिंटिंग क्राफ्ट परम्परा, सामुदायिक ज्ञान और अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के विशेषज्ञों को साथ लायेगा। प्रदर्शनी और कार्यशिविर "सफरनामा : जर्नी ऑफ ए कलमकारी हैंगिंग" 30 मार्च से 21 अप्रैल 2013 के बीच राष्ट्रीय संग्रहालय में हुआ। कार्यशिविर के लिये दिये गये शीर्षक के आधार पर पत्रों को समय अंतराल में प्रकाशित किया जायेगा।

ii. देशभर में संग्रहालय के विस्तारण का हिस्सा होने के नाते सामुदायिक ज्ञान केंद्र ने इंडियन म्यूजियम कोलकाता के सहयोग से डिजिटल प्रत्यावर्तन सहयोग को शुरु किया। 26–27 नवम्बर 2012 में कार्यशिविर ने डिजिटलीकरण और टिप्पणी के द्वारा सामुदायिक ज्ञान धारकों के सहयोग के साथ, दो शताब्दी पूर्व नागा जनजाति के विरल ऐतिहासिक शिल्पतथ्यों को पहली बार औपनिवेशिक दौर के नागा जनजाति के बीच भौतिक संस्कृति की रूपरेखा खींची गई। यूनिवर्सिटी ऑफ कैंब्रिज, म्यूजियम ऑफ एंथ्रोपोलोजि एंड आर्कयालॉजी, नागा वीडियो डिस्क के स्त्रोत से प्राप्त फोटो और फिल्म को चिंतन हेतु प्रेरित करने के लिये सफलतापूर्वक प्रदर्शित किया गया और मोन जिले के विभिन्न क्षेत्रों में सदस्यों के साथ परंपरागत ज्ञान और अभ्यासों की स्मृतियों को शुरु किया गया। यह परियोजना सामुदायिक सांस्कृतिक ज्ञान धारकों को स्कॉलर एवम् अन्य लोगों के साथ जोड़ पाई है।

5. अध्यापन पाठ्यक्रम / कार्यशिविर :

I. सामुदायिक ज्ञान केंद्र ने बी.ए. तृतीय वर्ष के 2012 के ग्रीष्मकालीन सत्र के लिये "डेल्ही इन हिस्ट्री" पर फील्ड कार्य को संचालित किया। छात्रों के लिये शहर के कुछ खास क्षेत्रों के नागरिकों की मेमोरी पर आधारित मौखिक साक्षात्कार रिकॉर्ड करना फील्ड वर्क का विषय था।

ii- सामुदायिक ज्ञान केंद्र 2013 के शरदकालीन सत्र के लिये फील्ड वर्क में दृश्य श्रवण पद्धति पर आधारित एक विशिष्ट रुचि पाठ्यक्रम "डिजिटल स्टोरीटेलिंग" को विकसित कर रहा है। इसको हिंदू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय के उत्कृष्ट मौखिक इतिहासकार प्रो. सुरूपा मुखर्जी के साथ मिलकर विकसित किया गया है।

6. छात्रवृत्तियाँ / अतिथि संकाय / इंटर्नशिपः

I. एयूडी–एनआईएफ फील्ड फेलोशिप कार्यक्रम को राष्ट्रीय अन्वेषण फाउंडेशन के साथ करार के अंतर्गत समुदाय आधारित पारम्परिक ज्ञान को दर्ज करने और जमीनी स्तर के अन्वेषण को संचालित करने के लिये शुरु किया गया है। इस कार्यक्रम में दो फील्ड डॉक्युमेन्टेशन फेलो का चयन किया गया है जो कि दो स्थानों मोन (नागालैंड) और पिपरिया (मध्यप्रदेश) में 15 मई 2012 से अपना कार्य शुरु कर चुके हैं।

ii. अगस्त 2012 में अमेरिकन यूनिवर्सिटी ऑफ पेरिस के डॉ० स्टीफन मॉनटेरियो ने सामुदायिक ज्ञान केंद्र में अतिथि संकाय के रूप में शिरकत की। मॉनटेरियो ने एन.ई. भौतिक संस्कृति परियोजना के परिणामों को दर्शाया और संबंधित संकाय सदस्यों के साथ विश्लेषण हेतु चर्चा की। इसके अलावा मॉनटेरियो ने एयूडी में नृजातीय परिप्रेक्ष्य से भौतिक संस्कृति अध्ययन के भावी पाठ्यक्रम के प्रारम्भिक कोर्स के नतीजों पर भी कार्य शुरु किया।

iii. डॉ० मॉनटेरियो वर्तमान में "फाउंडेशन दे ला मैसन देस साइंसेज दे होम्मे" (FMSH) पेरिस, साउथ एशिया प्रोग्राम के निदेशक डॉ० मैक्स जिंस के साथ कार्यरत हैं जिन्होंने 21 मार्च 2012 में सामुदायिक ज्ञान केंद्र, एयूडी में शिरकत की थी। इसका उद्देश्य सामुदायिक ज्ञान केंद्र में फ्रांस के नृजाति विज्ञान क्षेत्र के दो छात्रों के साथ एक पोस्ट डॉक्टोरल विजिटिंग फेलो कार्यक्रम को शुरु करना और परियोजनाओं पर पारस्परिक निर्णय द्वारा सीसीके टीम के साथ काम करना है।

iv. इंडियन आर्ट एंड कल्चर की ऑनलाइन इनसाइक्लोपीडिया ने मई–अगस्त 2012 तक चलने वाले दो से चार महीने की इंटर्नशिप के लिये तीन पूर्वस्नातक छात्रों का चयन किया हैं।

7. ज्ञान कोष और डिजिटल आर्काईविंग कार्यक्रमः

I. सामुदायिक ज्ञान केंद्र एयूडी डिजिटल मल्टीमीडिया रिपोजीटरी के क्रियान्वयन के लिये एयूडी के लिये आईटी सेवा के साथ साझेदारी कर रहा है। हार्डवेयर की माँग को निर्धारित कर लिया गया है और सॉफ्टवेयर एवम् ओपरेटिंग सिस्टम को प्रमाण के आधार पर स्थापित कर दिया गया है। साथ ही विश्वविद्यालय स्तर पर एक डिजिटल मल्टीमीडिया रिपोजीटरी का विकास, निर्माण, पोषण, देखरेख और प्रबंधन के लिये आईटी सेवा स्टाफ को प्रशिक्षित किया गया है। सामुदायिक ज्ञान केंद्र के मौजूदा और प्रस्तावित कार्यक्रम एयूडी के अन्य अध्ययनशालाओं के छात्रों और संकाय अनुसंधान परियोजनाओं के साथ मिलकर आर्काइव के लिये सहयोग देंगे।

ii. सामुदायिक ज्ञान केंद्र को दो साप्ताहिक और सामाजिक इतिहास आर्काइव का निर्माण करने हेतु दो अग्रणी साहित्यकार हस्तियों श्री अमृतलाल नागर और श्री सज़्ज़ाद ज़हीर के निर्वाहकों द्वारा प्रस्ताव दिया गया है जिसमें मूल पाठ, फोटोग्राफिक, श्रव्य और फिल्म सामग्री शामिल होगा। वर्तमान में विषयवस्तु का मूल्यांकन और चर्चा चल रही है और वित्तीय माँगों पर कार्य किया जा रहा है। विश्वविद्यालय द्वारा दी जाने वाली मूल वित्तीय सहायता के साथ–साथ डिजिटाईजेशन के लिये अन्य वित्तीय स्त्रोतों को भी खोजा जा रहा है।

iii. सामुदायिक ज्ञान केंद्र को पारम्परिक बुनकर और नाविक परम्परा पर एथ्नोग्राफिक एंड कम्युनिटी नोलेज रिसर्च आर्काइव निर्मित करने के लिये संस्कृति मंत्रालय द्वारा अनुदान प्राप्त हुआ है। डॉ० लतिका वरदराजन द्वारा 1960 से 2010 तक के समय को समेटते हुए प्रारम्भिक शोध आँकड़े और विषयवस्तु को सामुदायिक ज्ञान केंद्र को सौंपा गया। सामुदायिक ज्ञान केंद्र व्यापक विषयवस्तु को वर्गीकृत, प्रलेखित और डिजिटाईज करेगा और एयूडी के डिजिटल आर्काइव पर आम लोगों और स्कॉलर्स के लिये उपलब्ध करवायेगा। शिल्पतथ्यों, दृश्यों और मूलपाठों का भौतिक मालिकाना हक़ एयूडी के सामुदायिक ज्ञान केंद्र के पास रहेगा। यह परियोजना बदलती सांस्कृतिक परंपराओं, सामुदायिक ज्ञान और कौशलों की अपूर्व झलक को उपलब्ध कराने हेतु पहला नृजातीय आर्काइव निर्मित करेगी। मार्च 2013 में इस पर कार्य शुरु हो चुका है।

iv. एयूडी सांस्थानिक स्मृति परियोजनाः एयूडी की यह आंतरिक परियोजना उस औपचारिक ढाँचे का निर्माण करेगी जो कि मौजूदा विश्वविद्यालय स्तरीय आर्काइव के साथ–साथ परिप्रेक्ष्य दस्तावेजीकरण को भी निर्मित करेगा। यह परियोजना सांस्थानिक विकास के विभिन्न आयामों के चिह्नित दस्तावेजों और रिकॉर्डिंग्स एवम् चिह्नित सूचनादाता के चिंतन को निर्धारित करेगी और संग्रहण के लिये डेटाबेस निर्मित करेगी तथा डिजिटल आँकड़ों को पुनः प्राप्त करेगी। इस परियोजना पर दिसम्बर 2012 से कार्य शुरु हो चुका है।

8. सम्मेलन / सेमिनार / कार्यशिविर / लेखः

I. सुरजीत सरकार 23–25 अप्रैल 2012 को ''द ओरल हिस्ट्री एंड ईको–कल्चरल मैपिंग प्रोजेक्ट" पर हुए कार्यशिविर के लिये इंडियन इन्सटिट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज में उपस्थित हुए। इसके बाद 31 अक्तूबर–1 नवम्बर 2012 को सुरजीत सरकार ने दीमापुर नागालैंड में आई.आई.ए.एस , शिमला द्वारा आयोजित 'रिकवरिंग द ओरल हिस्ट्रीज ऑफ नॉर्थ इस्टर्न इंडिया" पर दो दिवसीय सेमिनार में एक सत्र की अध्यक्षता भी की।

ii. सुरजीत सरकार जून 2012 में बंगलौर में ओरल हिस्टोरियन एसोसियेशन ऑफ इंडिया की पहली बैठक में अंतरिम समिति के कार्यवाहक सदस्य के रूप में चुने गये। बाद में 2013 में लखनऊ विश्वविद्यालय में प्रथम राष्ट्रीय सम्मेलन की योजना की गई।

iii. 5–8 अक्तूबर 2012 को अलोर सेतार केदाह, मलेशिया में सुरजीत सरकार और संजय शर्मा ने ''यूनिवर्सिटी लीडरशिप फॉर इन्टीग्रेटिंग नोलेज डायवर्सिटी फॉर ससटैनिब्लिटी'' पर हुए एक सम्मेलन में सामुदायिक ज्ञान पर प्रस्तुतिकरण दिया और पेपर भी पस्तुत किये। सम्मेलन अल्बुखारी इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी एंड मल्टीवर्सिटी द्वारा आयोजित किया गया था। "ओरल नरेटिव्स एंड अदर कम्युनिटी नॉलेज स्टडीज – इनिशयेटीव विद कम्युनिटी नॉलेज सिस्टम इन ए सोशलसाइंस यूनिवर्सिटी" नामक पेपर को भी वहाँ पेश किया गया।

iv. सुरजीत सरकार ने इंटरनेशनल एसोसियेशन ऑफ साउंड एंड ऑडियो विजुअल आर्काइव, नई दिल्ली के 43वें वार्षिक सम्मेलन में ''एक्सेस एंड कम्युनिटी यूसेज पर प्रस्तुतिकरण दिया और एक्सेस एंड इंटेलक्चुअल प्रॉपर्टी राईट पर एक सत्र की अध्यक्षता की।

v. सुरजीत सरकार ने म्यूजियम एंथ्रोपोलॉजी रिव्यू के आगामी अंक 6(3) के लिये ''आर्ट्स, एक्टीविज्म एंड एथ्नोग्राफी'' पर एक पेपर लिखा है। यह भौतिक संस्कृति और संग्रहालय अध्ययन के क्षेत्र में पीयर रिव्यू ओपन एक्सेस जर्नल है।

9. स्टाफ :

वर्तमान में केंद्र के स्टाफ पदस्थिति इस प्रकार हैं —
डॉ० संजय कुमार शर्मा – निदेशक, सामुदायिक ज्ञान केंद्र
श्री सुरजीत सरकार – अतिथि सहायक प्रो. और वरिष्ठ सलाहकार
सुश्री अनुष्का मैथ्यू – शोध सहायक
सुश्री रंजनी एम. प्रसाद – शोध सहायक

विश्वविद्यालय के छात्र :—

01.09.2012 तक के प्रत्येक पाठ्‌क्रम में विद्यार्थियों का वितरण इस प्रकार है :—

पाठयक्रम का नाम	छात्रों की कुल संख्या	लड़के	लड़कियां	अनु. जाति	अनु.जनजाति	अन्य पिछड़ा वर्ग	शारीरिक अक्षम	पी.डब्ल्यू.ए.पी. / रक्षा	विदेशी छात्र	सामान्य
स्नातक अध्ययन शिक्षालय										
बी.ए. अर्थशास्त्र	104	55	49	08	02	15	——	——	02	77
बी.ए. अंग्रेजी	79	18	61	07	07	10	——	01	01	53
बी.ए.इतिहास	36	26	10	06	03	——	——	——	——	27
बी.ए. गणित	33	19	14	03	——	01	01	——	——	28
बी.ए. मनोविज्ञान	60	21	39	05	——	05	01	——	01	48
बी.ए. समाजशास्त्र	42	20	22	02	06	02	0	01	——	31
बी.ए. सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी	45	26	19	05	03	02	0	——	02	33
कुल संख्या (बी.ए)	**399**	**185**	**214**	**36**	**21**	**35**	**02**	**02**	**06**	**297**
विकास अध्ययन शिक्षालय										
एम.ए विकास अध्ययन	74	29	45	06	06	05	02	——	——	51405
मानव पारिस्थितिकी अध्ययन शिक्षालय										
एम.ए.पर्यावरण और विकास	52	20	32	08	05	04	——	——	——	35
ललित अध्ययन शिक्षालय										
एम.ए. अंग्रेजी	86	15	71	08	13	15	——	——	——	50
एम.ए.अर्थशास्त्र	98	23	75	05	03	20	——	——	——	70
एम.ए. इतिहास	63	17	46	03	11	05	——	——	——	44
एम.ए.समाजशास्त्र	78	16	62	08	14	02	——	——	——	54
मानव अध्ययन शिक्षालय										
एम.ए.मनोविज्ञान	84	04	80	03	04	09	02	——	——	66
एम.ए. जेंडर अध्ययन	44	04	40	——	01	02	——	——	——	41

संस्कृति एवं रचनात्मक अभिव्यक्ति अध्ययन शिक्षालय										
एम.ए. सिनेमा अध्ययन	06	03	03	01	—	—	01	—	—	04
एम.ए. साहित्यिक कलाः	04	02	02	01	—	—	—	—	—	03
रचनात्मक लेखन										
एम.ए. दृश्य कला	07	04	03	01	—	01	—	—	—	05
एम.ए. निष्पादन कला	07	03	04	—	—	01	—	—	—	06
शैक्षिक अध्ययन शिक्षालय										
एम.ए. शिक्षा	19	02	17	01	02	01	—	—	—	15
व्यापार, लोक नीति एवं सामाजिक उद्यमिता अध्ययन शिक्षालय										
एम.बी.ए	29	15	14	07	01	02	01	—	—	18
कुल संख्या (एम.ए)	**651**	**157**	**494**	**52**	**60**	**67**	**06**	—	—	**466**
एम.फिल										
हिंदी	09	03	06	03	—	03	—	—	—	03
इतिहास	09	04	05	01	—	02	—	—	—	06
मनोचिकित्सा,	17	02	15	01	—	—	—	—	—	16
नैदानिक चिंतन										
महिला एवं जेंडर अध्ययन	13	—	13	02	—	01	—	—	—	10
डेवलपमेंट प्रैक्टिस	25	10	15	05	04	02	—	—	01	13
कुल सं.(एम.फिल)	73	19	54	12	04	08	—	—	01	48
पी.एच.डी										
हिंदी	05	01	04	01	—	—	—	—	—	04
इतिहास	04	01	03	—	—	—	—	—	01	03
मनोविज्ञान	14	05	09	02	01	02	—	—	—	09
विकास अध्ययन	04	03	01	01	01	—	—	—	—	02
मानव पारिस्थितिकी	06	03	03	—	—	—	—	—	—	06
कुल सं. (पीएच.डी)	**33**	**13**	**20**	**04**	**02**	**02**	—	—	**01**	**24**
कुल योग	**1156**	**374**	**782**	**104**	**87**	**112**	**08**	**02**	**08**	**835**

एयूडी में एम.फिल. और पी.एच.डी.

एम.फिल.और पी.एच.डी. की डिग्रियाँ स्नातक अध्ययन शिक्षालय को छोड़कर विश्वविद्यालय के किसी भी अध्ययन शिक्षालय द्वारा दी जा सकती हैं। एम.फिल और पी. एच.डी. डिग्रियों से सम्बंधित सभी विश्वविद्यालय स्तर के अकादमिक मामलों का निरीक्षण शैक्षिक परिषद् की स्थायी समिति (अनुसंधान) द्वारा किया जायेगा।

एम.फिल और पी.एच.डी. डिग्रियों से सम्बंधित सभी अध्ययन शिक्षालय स्तर के अकादमिक मामलों का निरीक्षण अनुसंधान अध्ययन समिति (आरएससी) द्वारा किया जायेगा। आरएससी अध्ययनशालाओं के अध्ययन बोर्ड की उपसमिति होगी। प्रत्येक आरएससी संबंधित अध्ययन शिक्षालय के क्षेत्राधिकार में अनुसंधान विषयों/क्षेत्रों के एम.फिल. और पी.एच.डी. कार्यक्रमों का विनियमन करेगी (हर अध्ययन शिक्षालय के लिये आरएससी एक से अधिक भी हो सकती है)। आरएससी का गठन अकादमिक परिषद् द्वारा निर्धारित किया जाता है। अंतरिम तौर पर प्रत्येक आरएससी का गठन निम्न रूप से होता है ।

अध्ययन शिक्षालय के डीन (अधिष्ठाता)

अध्ययन शिक्षालय के चार सदस्य को जो डॉक्टोरल पर्यवेक्षक के रूप में मान्य होने के लिये पात्र हों और जिन्हें अध्ययन शिक्षालय में नियुक्त किया गया हो उन्हें फिलहाल बोर्ड द्वारा नामित किया जाना है।

अध्ययन शिक्षालय के बाहर का एक सदस्य जिन्हें कुलपति द्वारा नामित किया गया हो।

प्रवेश के लिये मानदंडः

- वे छात्र जिनके पास एम. फिल डिग्री नहीं है, एम.फिल. और पी.एच.डी. के लिये प्रत्येक वर्ष जून–जुलाई में प्रवेश होगा।
- जिनके पास एम. फिल. डिग्री है उनके लिए पी. एच. डी. प्रवेश पूरे वर्ष चलेगा।
- प्रत्येक अध्ययन शिक्षालय में एम. फिल् की सीटों का निर्धारण आरएससी की सिफारिशों के आधार पर स्थायी समिति (अनुसंधान) द्वारा किया जायेगा और इसे प्रवेश प्रक्रिया शुरु होने के पहले घोषित/प्रकाशित किया जायेगा।
- प्रत्येक अध्ययन शिक्षालय में पी.एच.डी. कार्यक्रम में सीटों की संख्या संकाय में मान्यता प्राप्त पर्यवेक्षकों की संख्या पर निर्भर करते हुए, वर्ष दर वर्ष अलग–अलग हो सकती है

और डॉक्टोरल छात्र की अधिकतम संख्या जिन्हें किसी निश्चित समय पर्यवेक्षण करने की अनुमति दी जाती है।

- यह संख्या आरएससी द्वारा निर्धारित की जायेगी और पूरे वर्ष आवधिक रूप से घोषित की जायेगी।

अकादमिक वर्ष 2011–12 के लिये नामांकित एम.फिल् और पी.एच.डी. छात्र :

वर्ष 2011–12 के अकादमिक सत्र में एम.फिल् और पी.एच.डी. कार्यक्रमों में कुल 51 छात्रों का नामांकन किया गया था, जबकि सत्र 2012–13 में इसकी संख्या बढ़कर 61 हो गयी। फिलहाल विकास अध्ययनशाला, मानव पारिस्थितिकी अध्ययनशाला, मानव अध्ययन शिक्षालय और लिबरल स्टडीज अध्ययन शिक्षालय एम.फिल् और पी.एच.डी. की डिग्रियाँ प्रदान कर रहे हैं।

अनुसंधान कार्यक्रमों (2011–12 और 2012–13) के लिये कुल 99 छात्रों का नामांकन किया गया है जिसमें से पी.एच.डी. में 30 छात्र और एम.फिल् में 69 छात्र है

एम.फिल् पी.एच.डी पाठ्यक्रम में छात्रों की वृद्धि

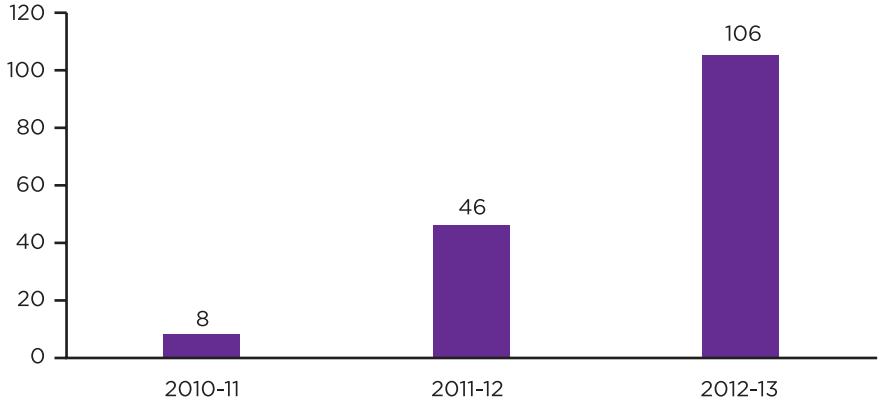

कुल छात्रों की संख्या में वृद्धि

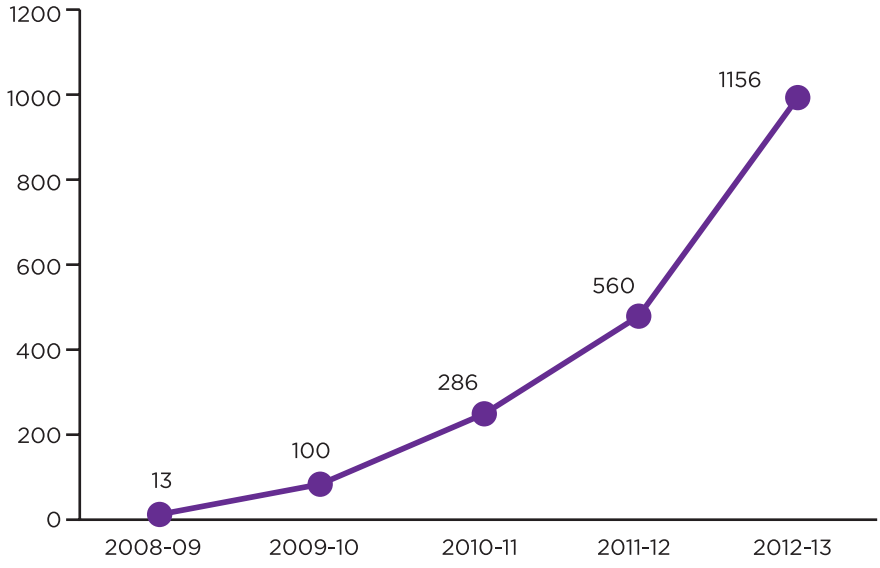

विश्वविद्यालय की भौतिक परिसम्पत्तियाँ

पुस्तकालय

एयूडी के पुस्तकालय के अपने विशिष्ट संग्रह में मानविकी और समाज विज्ञानों के क्षेत्र में 20000 से अधिक पुस्तकें, 100 से अधिक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय जर्नल्स, पत्रिकाएँ और 23 अग्रणी ऑनलाइन प्रकाशकों के जर्नल डेटाबेस (आर्काइव के साथ 15000 से अधिक ई–जर्नल सुविधा) मौजूद हैं। एयूडी का पुस्तकालय दो परिसरों में कार्यरत है और दोनों में वातानुकूलित रीडिंग कक्ष हैं। सभी ऑनलाइन साधन परिसर के बाहर भी सुलभ हैं। तीन राष्ट्रीय अवकाशों को छोड़कर पुस्तकालय सभी दिन खुला रहता है। पुस्तकालय में पुस्तकालय दस्तावेजों और प्रयोक्ताओं का अपना कम्प्यूट्रीकृत डेटाबेस है। पुस्तकालय के चार सेक्शन हैं: सामान्य सेक्शन, पाठ्यपुस्तक सेक्शन, संदर्भ सेक्शन और पत्रिका सेक्शन। पुस्तकालय के पास पुस्तकों और जर्नल्स का भी डेटाबेस है। पुस्तकालय एक फिल्म सेक्शन को विकसित करने की प्रक्रिया में है, फिलहाल पुस्तकालय के पास 200 से अधिक डीवीडी कलेक्शन हैं।

एयूडी के पुस्तकालय का लगातार विकास हो रहा है। वर्ष 2012–13 में पुस्तकालय नए पुस्तकों और पत्रिकाओं (प्रिंटेड और ऑनलाइन) डेटाबेस और पुस्तकालय नेटवर्क की सदस्यता में वृद्धि की है। वित्तीय वर्ष 2012–13 के दौरान पुस्तकालय की यात्रा पर एक सरसरी दृष्टि :

- वर्तमान में पुस्तकालय में 20,310 पुस्तकें हैं जिसमें 8,893 पुस्तकों की खरीद इसी वित्तीय वर्ष में की गई। सभी पुस्तकों की प्राप्ति, वर्गीकरण, सूचीबद्ध, बारकोड द्वारा उन्हें प्रयोक्ताओं के लिये सुलभ बनाया गया है।
- एयूडी पुस्तकालय दो परिसरों से कार्य कर रहा है।
- एयूडी पुस्तकालय ने एक वर्ष के लिये पुस्तकों की खरीद और जर्नल के खरीददार बनने के लिये 49 पुस्तक प्रकाशकों को सूचीबद्ध किया है।
- पुस्तकालय के लिये बनाये गये सॉफ्टवेयर लिबसिस को दोनों परिसरों में संस्थापित कर दिया गया है और यह ठीक से कार्य कर रहा है।
- कलेक्शन को विकसित करने की प्रक्रिया में पुस्तकालय विश्व पुस्तक मेला और दिल्ली पुस्तक मेले में भ्रमण करता है।

- पुस्तकालय ने 95 प्रिंटेड जर्नल्स में से उन पत्रिकाओं का पुनर्नवीकरण किया है जो ऑनलाइन उपलब्ध नहीं हैं।
- पुस्तकालय में 9 समाचार पत्रों को सब्सक्राइब किया गया है।

वर्ष 2012 के लिये इन्फ्लिबेट के जरिये 4 ई–रिसोर्स को पुनर्नवीकरण किया गया है। विवरण इस प्रकार है:

I- जस्टर (खंड 1 और संस्करण 1 से लेकर कुल 1681 पात्रिकाएँ)

II- कैंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस (सन 1997 से कुल 224 पत्रिकाएँ)

III- नेचर–वीकली 1997 के बाद से अब तक

IV- MathSciNetMathSciNet– इसमें 2 मिलियन मदों से भी अधिक मदें तथा मूल लेख के लिये 700,000 प्रत्यक्ष लिंक शामिल हैं। 80,000 से अधिक कई मदों को प्रत्येक वर्ष जोड़ा जाता है, जिनमें से अधिकतर को गणित विषय आधारित वर्गीकरण के अनुसार वर्गीकृत किया जाता है।

12b यूनिवर्सिटी कॉनसोर्टिया के अंग के रूप में पुस्तकालय ने वर्ष 2013 के लिये इन्फ्लिबेट के जरिये 5 ई–रिसोर्स प्राप्त किये हैं. इनका विवरण इस प्रकार है :

I- विली ब्लेकवोल (सन 1997 से आर्काइव के साथ कुल 908 जर्नल्स).

ii- ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस (सन 1997 आर्काइव के साथ कुल 198 जर्नल्स)

iii- स्प्रिंगर (सन 1997 से आर्काइव के साथ 1400 से भी अधिक जर्नल्स)

iv- प्रोजेक्ट म्यूज (100 प्रकाशकों के 400 जर्नल्स)

पुस्तकालय ने कुछ अन्य ई–रिसोर्स को भी सब्सक्राइब किया है, विवरण इस प्रकार है :

I- ए.ए.ए.ए – साइंस (सन 1997 से आर्काइव के साथ एक डेटाबेस)

II- एब्स्को – अकेडमिक सर्च कम्पलीट (8500 पूर्ण टेक्स्ट जर्नल्स)

III- एब्स्को होस्ट – बिजनेस सोर्स कम्पलीट (1300 पूर्ण टेक्स्ट जर्नल्स)

IV- एमराल्ड मेनेजमेंट (कुल 200 जर्नल्स)

V- कैपिटलाइन.कॉम (एक डेटाबेस)

VI- सेज रिसर्च मैथड्स ऑनलाइन

VII- साइंस डाइरेक्ट (6 जर्नल्स)

VIII- टोरंटो यूनिवर्सिटी प्रेस (एक जर्नल)
IX- इंडियास्टेट.कॉम
X- पेल्ग्रेव डिक्शनरी ऑफ इकोनोमिक्स ऑनलाइन
XI- एच बी आर केसेस
XII- अमेरिकन इकोनोमिक्स एसोसियेशन
XIII- आई एस बी केसेस

एयूडी पुस्तकालय का कुल खर्च 23,446,971.00 रुपये था जिसमें 16,799,499.00 रुपये पुस्तकों पर खर्च किये गये तथा 6647545.00 रुपये राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रिंटेड और इलेक्ट्रॉनिक रिसोर्सेज पर खर्च किया गया जिसमें 100 फिल्म्स भी शामिल थीं।

वर्तमान में 1200 से भी अधिक प्रयोक्ता इश्यू–रिटर्न, रेफरेंस सर्विस, ई–रिसोर्स एक्सेस और आवधिक पत्रिकाओं जैसी सुविधाओं का प्रयोग कर रहे हैं।

वर्ष के दौरान पुस्तकालय स्टाफ द्वारा किये गये सम्मेलन / कार्यशिविरः

अ) राष्ट्रीय विरासत के संरक्षण और प्रचार के लिये भारत सरकार द्वारा अनुमोदित एक वार्ता 'डिजिटल लाइब्रेरी ऑफ इंडिया' 28–31 मई 2012 को कोन्सल 2012, बाली में एक सत्र रखा गया। जिसे देबाल सी. कार द्वारा अटेंड किया गया।

इ) सुश्री अलका राय और श्री रविंदर रावत ने लिबसिस (LIBSYS) पर 25 फरवरी से 8 मार्च 2013 तक चले दो हफ्ते के प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।

ब) सुश्री अलका राय ने 12–15 फरवरी 2012 को हुए अकादमिक लाइब्रेरी पर द्वितीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया. सम्मेलन की थीम 'अकेडमिक लाइब्रेरी सर्विसेज F: क्लाउड कम्प्यूटिंग' थी।

क) डॉ० देबर सी. कार ने 12–15 फरवरी 2012 को हुए अकादमिक लाइब्रेरी पर द्वितीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में एक सत्र की अध्यक्षता की। सम्मेलन की थीम 'अकेडमिक लाइब्रेरी सर्विसेज F: क्लाउड कम्प्यूटिंग' थी।

पुस्तकालय की भावी योजना में विभिन्न अंतरराष्ट्रीय लाइब्रेरी नेटवर्क की सदस्यता पाना, 'कोन्सोर्ट' और आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों के लिये एक पुस्तक बैंक बनाना शामिल है। एक स्वचालित लाइब्रेरी संचालन के लिये आरएफआईडी सिस्टम को संस्थापित किया गया है और आने वाले वर्ष में सुरक्षा का प्रस्ताव दिया गया है।

आईटी सेवाएँ

एयूडी का आईटी सेवा प्रभाग कश्मीरी गेट और द्वारका परिसर दोनों में आईटी सम्बंधित गतिविधियों के रीढ़ के रूप में सेवा प्रदान करता है। आईटी सेवा प्रभाग क्लाउड आधारित ईआरपी प्रणाली के कार्यान्वयन द्वारा एयूडी के निर्माण में काफी अहम् भूमिका अदा करता है। छात्रों के ऑनलाइन एवम् ऑफलाइन प्रवेश से लेकर कक्षा के संचालन, स्टाफ की भर्ती से लेकर सेवा निवृत्ति तक की प्रक्रिया तथा वेतन आदि से संबंधित विश्वविद्यालय की सभी कार्यात्मक अपेक्षाओं को सम्पादन सहयोग उपलब्ध करवाता है। 2012 में एयूडी ईआरपी के क्रियान्वित होने से अब तक, आईटी सेवा प्रभाग ने व्यवस्था में पारदर्शिता एवम् प्रभाविता को बढ़ाने हेतु नई विशिष्टताओं के विकास द्वारा व्यवस्था को लगातार विकसित किये जाने के लिये कार्य किया है। 2012–13 के सभी प्रवेश ऑनलाइन माध्यम से पूर्ण हुए और छात्र पाठ्यक्रम पंजीकरण से पाठ्यक्रम फीस भुगतान भी ऑनलाइन माध्यम से हुए। यह प्रभाग एक वेब पोर्टल और इंटरानेट की भी देखरेख करता है। यह विशिष्टता पूर्ण पोर्टल वेब 2.0 तकनीकियों पर आधारित है और विश्वविद्यालय के आंतरिक यूजर्स के साथ–साथ बाहरी यूजर्स को भी नवीनतम जानकारियाँ उपलब्ध करवाता है। प्रभाग एयूडी नेटवर्क से बाहर भी संकाय को एक सुरक्षित वीपीएन आधारित ई–जर्नल और इंट्रानेट की सुलभता को उपलब्ध करवाता है।

अकादमिक और प्रशासनिक स्टाफ के बीच सहयोग बढ़ाने हेतु आईटी सेवा प्रभाग ने गूगल एप्प फॉर एजुकेशन को लागू किया है। एयूडी में अध्यापन, प्रशासन, तकनीकी स्टाफ और छात्रों के लिये इस सुविधा के लिये 1000 से भी अधिक अकाउंट बनाये जा चुके हैं। साथ ही एयूडी मेल सर्विस द्वारा यूजर्स गूगल डॉक्युमेंट, कैलेंडर और ग्रुप्स आदि को भी एक्सेस कर सकते हैं। प्रत्येक यूजर को हर अकाउंट के लिये 25 जीबी का एक मेल बॉक्स दिया गया है।

प्रभाग ने नियमित तौर पर ईआरपी मोड्युल्स और इसके प्रयोग पर प्रशिक्षण देकर संकाय सदस्यों, छात्रों और विश्वविद्यालय स्टाफ के आईसीटी क्षमता विकास का भी उत्तरदायित्व लिया है।

कार्य :

प्रभाग इंटरनेट एक्सेस, ईमेल, एयूडी ईआरपी, आई टी सुरक्षा, वाई–फाई, विश्वविद्यालय की वेबसाइट और जॉब पोर्टल की देखभाल, इंट्रानेट, वर्चुअल प्राइवेट नेटवर्क, प्रॉब्लम डायग्नोस्टिक एंड ट्रबलशूट जैसी मूलभूत आईसीटी सेवाएँ 450 नोड्स से भी अधिक नेटवर्क द्वारा प्रदान करता है। यह फायरवॉल सिक्योरिटी, प्रॉक्सी, डीएचसीपी, वीपीएन, ईमेल चला रहा है और विश्वविद्यालय के नेटवर्क को दो अलग–अलग स्थानों से संभाल रहा है. आईटी सेवा प्रभाग के अन्य मुख्य कार्यों में आईटी नीति, नेटवर्क डिजाइन, कपैसिटी प्लानिंग एंड मेनेजमेंट फॉर मल्टी–कैम्पस एक्सेस, आधारभूत संरचना प्रबंधन, इन्सटॉलेशन और आई टी आधारित सेवाओं का प्रबंधन करना है। प्रभाग द्वारा दी जा रही आईसीटी सेवाएँ विश्वविद्यालय में 24x7 कार्यरत है। ऑनलाइन टीचिंग सामग्री की सुविधा को उपलब्ध करवाने के लिये प्रभाग नेशनल नॉलेज नेटवर्क के 1–जीडीपीएस लिंक को लागू करता है. साथ ही प्रभाग ई आर एन ई टी इंडिया के जरिये 8एम बी पी एस की अतिरिक्त इंटरनेट ब्रैंडविद्थ को भी लागू करता है।

आईटी सेवा प्रभाग ने फायरवॉल के इंस्टॉल द्वारा, एक्सेस नियंत्रण और वायरस रोकथाम और विषयवस्तु को फिल्टर करने वाले सॉफ्टवेयर के जरिये नेटवर्क को सुरक्षित रखा है। प्रभाग ने विंडोज एक्टिव डायरेक्टरी सिक्योर्ड ऑथेंटिकेशन को लागू किया और एयूडी से बाहर नेटवर्क के एक्सेस के लिये संकाय और छात्रों को वीपीएन आधारित ई–जर्नल उपलब्ध करवाया है।

उत्तरदायित्वः

आईटी सेवा प्रभाग क्लाउड आधारित ईआरपी प्रणाली के कार्यान्वयन द्वारा एयूडी के निर्माण में काफी अहम् भूमिका अदा करता है। छात्रों के ऑनलाइन एवम् ऑफलाइन प्रवेश से लेकर कक्षा के संचालन, स्टाफ की भर्ती से लेकर सेवा निवृत्ति तक की प्रक्रिया तथा वेतन आदि से संबंधित विश्वविद्यालय की सभी कार्यात्मक अपेक्षाओं को सम्पादन सहयोग उपलब्ध करवाता है। 2012 में एयूडी ईआरपी के क्रियान्वित होने से अब तक, आईटी सेवा प्रभाग ने व्यवस्था में पारदर्शिता एवम प्रभाविता को बनाने हेतु नई विशिष्टताओं के विकास द्वारा व्यवस्था को लगातार विकसित किये जाने के लिये कार्य किया है। 2012–13 के सभी प्रवेश ऑनलाइन माध्यम से पूर्ण हुए और छात्र पाठ्यक्रम पंजीकरण से पाठ्यक्रम फीस भुगतान भी ऑनलाइन माध्यम से हुए। यह प्रभाग एक वेब पोर्टल और इंट्रानेट की भी देखरेख करता है। यह विशिष्टता पूर्ण पोर्टल वेब 2.0 तकनीकियों पर आधारित है और

विश्वविद्यालय के आंतरिक यूजर्स के साथ–साथ बाहरी यूजर्स को भी नवीनतम जानकारियाँ उपलब्ध करवाता है।

अकादमिक और प्रशासनिक स्टाफ के बीच सहयोग बढ़ाने हेतु आईटी सेवा प्रभाग ने गूगल एप्प फॉर एजुकेशन को लागू किया है. एयूडी में अध्यापन, प्रशासन, तकनीकी स्टाफ और छात्रों के लिये इस सुविधा के लिये 1500 से भी अधिक अकाउंट बनाये जा चुके हैं. साथ ही एयूडी मेल सर्विस द्वारा यूजर्स गूगल डॉक्युमेंट, कैलेंडर और ग्रुप्स आदि को भी एक्सेस कर सकते है। प्रत्येक यूजर को हर अकाउंट के लिये 25 जीबी का एक मेल बॉक्स दिया गया है।

क्रम संख्या.	उपकरण	संख्या
1	सर्वर	03
2	डेस्कटॉप	225
3	लैपटॉप्स	103
4	स्विचिस (संचालनीय एवं असंचालनीय)	43
5	रॉयटर्स / एक्सेस पॉइंट	29
6	प्रिंटर्स / स्कैनर्स / फोटोकॉपिएर्स (डेस्कटॉप / बहु–निष्पादकीय)	53
7	यू.पी.एस (ऑनलाइन / ऑफलाइन)	120
8	प्रोजेक्टर्स	58

छात्रावास :

तकनीकी शिक्षा निदेशालय उच्च शिक्षा निदेशालय के निर्णय के अनुसार एयूडी सन् 2010–11 से इन्टीग्रेटेड इन्सटीट्यूट ऑफ टेकनॉलोजी कैम्पस में स्थित छात्रावास को आईटीआई, अम्बेडकर विश्वविद्यालय और गवर्नमेंट इंजीनियरिंग कोलेज, जाफरपुर के छात्रों (लड़के एवम् लड़की दोनों) के लिये छात्रावास की सुविधा का प्रबंध करता है। छात्रावास की कुल क्षमता 144 (लड़कों के लिये 72 और लड़कियों के लिये 72) की है। 2011–12 से छात्रावास में हर संस्थान के लिये तीन बिस्तर वाले 48 सीट साझा की जाती हैं जिसमें 24 लड़कों के लिये और 24 लड़कियों के लिये है।

अकादमिक वर्ष 2012–13 के दौरान एन आई टी (दिल्ली) के साथ यह निर्णय लिया गया कि छात्रावास को चार संस्थानों द्वारा साझा किया जायेगा और हरेक संस्थान के लिये तीन

बिस्तर वाले हॉस्टल में आनुपातिक कोटा 36 सीट का होगा जिसमें 18 सीट लड़के और 18 सीट लड़कियों के लिये होगी। 25 नवम्बर 2012 को "इंटरनेशनल डे फॉर एलिमिनेशन ऑफ वायलेंस अगेंस्ट वुमन" की संध्या को छात्रावास में एक मेल–मिलाप का आयोजन किया गया। इसमें छात्रावास के सभी कर्मचारियों के साथ रह रहे छात्रों द्वारा भाग लिया गया। सभी भागीदारों ने इसकी भूरि–भूरि प्रशंसा की।

आरक्षण कोटे के नियम के अनुसार सीट का निर्धारण किया जाता है और यदि उस समय उस विशेष कोटे से संबंधित छात्र मौजूद न हो तो सीट को सामान्य कोटे के लिये हस्तांतरित कर दिया जाता है। जुलाई–अगस्त 2012 के समेस्टर से अब तक संस्थान श्रेणी के आधार पर नीचे दिये गये संख्या में छात्रों को प्रवेश दिया गया है :

श्रेणी	एयूडी		एन.आई.टी		सी.बी.पी.जी.ई.सी.जे		आई.आई.टी	
	लड़के	लड़कियां	लड़के	लड़कियां	लड़के	लड़कियां	लड़के	लड़कियां
सामान्य	7	12	13	9	13	6	7	1
अनु. जाति	3	2	–	4	2	2	2	–
अनु. जनजाति	4	4	–	1	–	–	–	–
अन्य पिछड़ा वग	4	1	–	5	3	1	6	–
शारीरिक अक्षम	1	–	2 (1 अन्य पिछड़ा वर्ग)	1 (विदेशी छात्र)	–	–	–	–
विदेशी छात्र	–	–	1	–	–	–	–	–
कुल	19	19	16	20	18	9	15	1

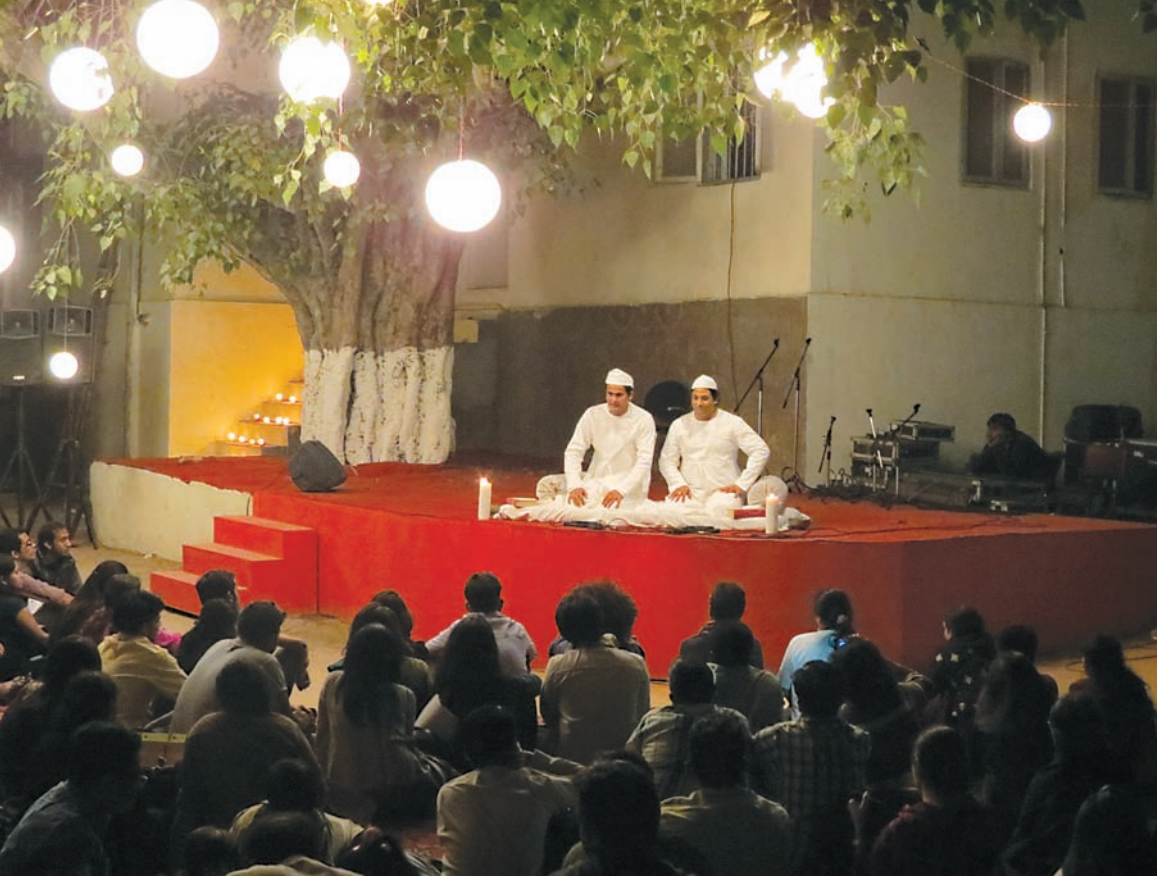

विश्वविद्यालय के प्राधिकारियों के संगठन

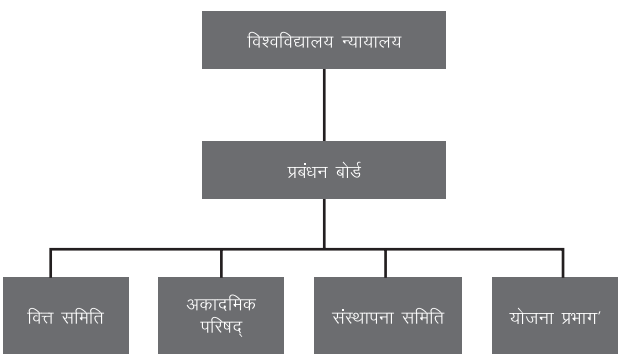

*प्रस्तावित

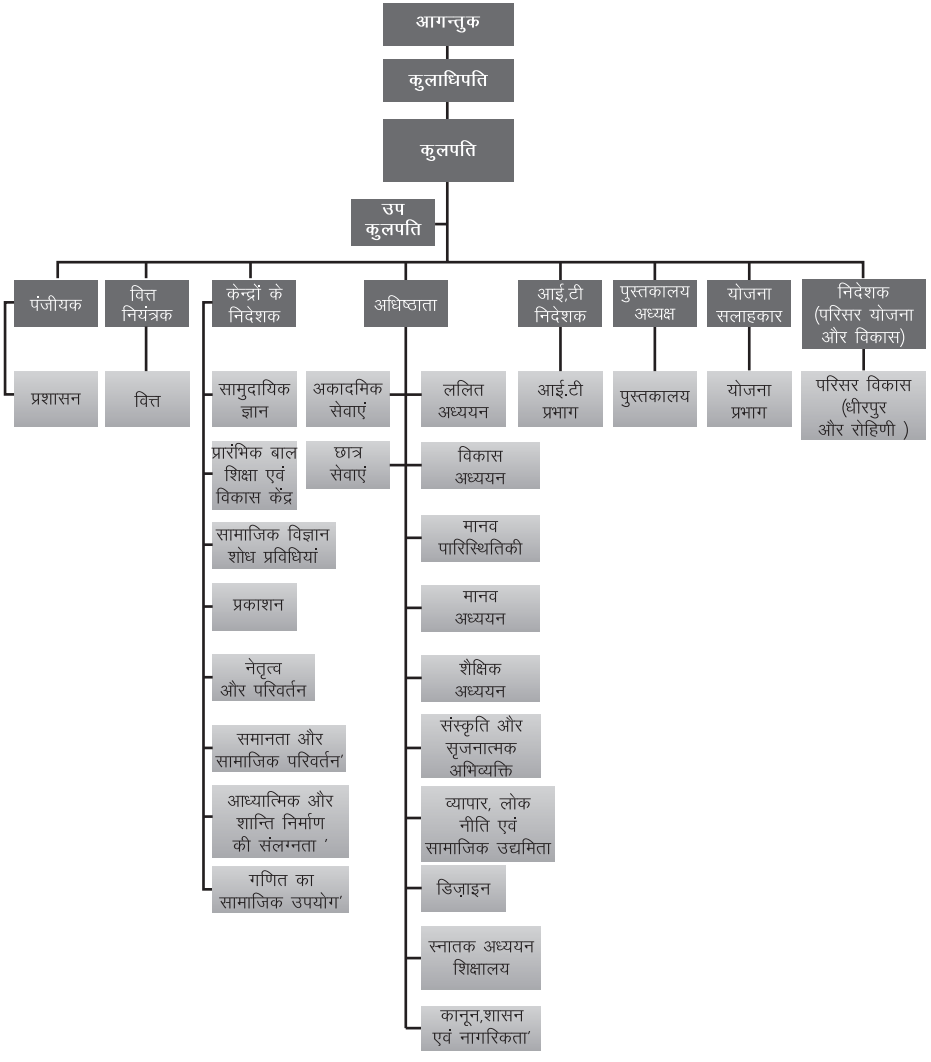
आगन्तुक
कुलाधिपति
कुलपति
उप कुलपति
पंजीयक
वित्त नियंत्रक
केन्द्रों के निदेशक
अधिष्ठाता
आई.टी निदेशक
पुस्तकालय अध्यक्ष
योजना सलाहकार
निदेशक (परिसर योजना और विकास)
प्रशासन
वित्त
सामुदायिक ज्ञान
अकादमिक सेवाएं
प्रारंभिक बाल शिक्षा एवं विकास केंद्र
छात्र सेवाएं
सामाजिक विज्ञान शोध प्रविधियां
प्रकाशन
नेतृत्व और परिवर्तन
समानता और सामाजिक परिवर्तन'
आध्यात्मिक और शान्ति निर्माण की संलग्नता '
गणित का सामाजिक उपयोग'
ललित अध्ययन
विकास अध्ययन
मानव पारिस्थितिकी
मानव अध्ययन
शैक्षिक अध्ययन
संस्कृति और सृजनात्मक अभिव्यक्ति
व्यापार, लोक नीति एवं सामाजिक उद्यमिता
डिज़ाइन
स्नातक अध्ययन शिक्षालय
कानून,शासन एवं नागरिकता'
आई.टी प्रभाग
पुस्तकालय
योजना प्रभाग
परिसर विकास (धीरपुर और रोहिणी)

*प्रस्तावित

परिशिष्ट–क

प्रवेश प्रक्रिया

प्रवेश सूचना–

दाखिले में प्रवेश सूचना के लिए चयनित समाचार पत्रों एवं विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर विज्ञापन प्रकाशित किये जाते हैं।

शैक्षणिक सत्र 2012–2013 में दाखिले हेतु बी.ए, एम.ए /एम बी ए, एम.फिल् एवं पीएचडी कार्यक्रमों के लिए प्रवेश परीक्षा तथा साक्षात्कार का आयोजन किया गया और छात्रों को विश्वविद्यालय के निर्धारित नियमों और विनियमों के अनुसार भर्ती किया गया। साक्षात्कार के लिए केवल उन्हीं विद्यार्थियों को सूचीबद्ध किया गया जो लिखित प्रवेश परीक्षा में सफल हुए।

आरक्षित सीटें :–

यहाँ पर दाखिले राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार की आरक्षण नीतियों के अनुसार उच्च शिक्षा संस्थानों में लागू विभिन्न सामाजिक समूहों और अन्य श्रेणियों के संबंध में किये जाते हैं।

विदेशी छात्रों को प्रवेशः–

हर कार्यक्रम में कुछ सीटें विदेशी छात्रों के लिए अलग रखी गयी हैं। विदेशी छात्रों को विभिन्न अध्ययन विभागों द्वारा तय की गयी एक प्रक्रिया के माध्यम से दाखिला दिया जाता है। विदेशी छात्रों के लिए शैक्षणिक योग्यता के मामले में पात्रता बिलकुल भारतीय विद्यार्थियों जैसी ही है। हालाँकि ,विदेशी छात्रों को अंग्रेजी भाषा में दक्षता का प्रमाण प्रस्तुत करना आवश्यक है।

फीस, शुल्क छूट, छात्रवृत्ति और छात्र कल्याण निधि–

एयूडी इस लक्ष्य की ओर वचनबद्ध है कि भावी छात्र सामाजिक विशेषाधिकार एवं भारतीय मूल्यों की सराहना तथा उनसे आनंद प्राप्त करना सीखें। क्योंकि भारत में रियायत का एक

बड़ा हिस्सा सार्वजनिक संस्थानों की उच्च शिक्षा में जाता है। वास्तव में लागत का एक न्यूनतम अनुपात विश्वविद्यालय द्वारा अपने प्रत्येक छात्र के लिए रखा जाता है, जो कि शुल्क रूप में होता है। इसलिए विद्यार्थियों की फीस प्रति सेमेस्टर के रूप में निर्धारित की गयी है। इस आधार पर एयूडी में विभिन्न कार्यक्रमों के लिए एक विशेष प्रकार की शुल्क (फीस) संरचना का गठन किया गया है। विश्वविद्यालय में शुल्क (फीस) संरचना इस समझ के साथ बनायी गयी है कि समाज का एक विशेष वर्ग ही बड़ी रकम के रूप में फीस दे सकता है। छात्रों के प्रति विश्वविद्यालय को अपनी ज़िम्मेदारी का एहसास है कि कोई विद्यार्थी केवल पैसों के आधार पर अपने उज्ज्वल भविष्य को खो न दे। इसलिए एयूडी में फीस संरचना न तो बहुत उच्च स्तर की है और न ही बहुत निम्न स्तर की ताकि विद्यार्थियों के बीच ज़िम्मेदारी की भावना बनी रहे। इस विशेष प्रकार की शुल्क संरचना की सीमा रु. 1,000/– से लेकर रु. 2,000/– के बीच में ही है वो भी लौटाए जाने वाले प्रतिदेय (रुपए) जमा के रूप में। ये भी ध्यान देने योग्य बात है कि वर्तमान समय में शुल्क का गठन परिचालन लागत का 10% से अधिक नहीं है। यानि एक विद्यार्थी पर अगर 10 हज़ार रुपए विश्वविद्यालय की तरफ से खर्च हो रहे हैं तो वापसी के रूप में विश्वविद्यालय को केवल 1000 रुपए ही प्राप्त हो रहे हैं।

इसी के साथ विश्वविद्यालय की एक घोषित नीति यह है कि कोई भी भावी योग्य विद्यार्थी पढ़ाई से केवल इसलिए वंचित न रह जाए क्योंकि वह अपनी फीस नहीं दे सकता/दे सकती। विश्वविद्यालय उन छात्रों को पूर्ण व आंशिक रूप से शुल्क (फीस) छूट प्रदान करता है जिनकी आर्थिक पृष्ठभूमि को सहायता की ज़रूरत है। दरअसल, 25% फीस जो विद्यार्थियों से एकत्रित की जाती है वो फीस आर्थिक रूप से असहाय विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति एवं शुल्क छूट के रूप में वापिस कर दी जाती है। पिछले 3 सालों में 229 विद्यार्थियों को शुल्क (फीस माफी) छूट दी गयी है। इनमें से ज्यादातर छात्रों का शुल्क (फीस) पूर्ण रूप से माफ कर दिया गया है। विश्वविद्यालय में एक 'छात्र कल्याण निधि' की भी स्थापना की गयी है जिसके द्वारा ज़रूरतमंद छात्रों को मदद दी जा सके और उन्हें अध्ययन सामग्री ,फोटोकॉपी ,किताबें तथा अन्य ज़रूरी शैक्षिक सामग्री उपलब्ध करायी जा सके। शुल्क संरचना के द्वारा जो रियायतें छात्रों को दी जा रही हैं, इसके बदले में एयूडी विद्यार्थियों से यह उम्मीद करता है कि उनके अंदर एक सामाजिक संवेदनशीलता का विकास हो। जिसके द्वारा वह उन सुविधाओं का सम्मान कर सकें जिनका वह लाभ उठा रहे हैं एवं भविष्य में अपनी पेशेवर क्षमताओं के द्वारा समाज के लिए कुछ अच्छा कर सकें।

नोट :–

(1) विश्वविद्यालय में दाखिले के दौरान ही विद्यार्थी फीस माफी के लिए आवेदन कर सकते हैं। अगर कोई विद्यार्थी किसी कार्यक्रम में अंनतिम रूप से प्रविष्ट होता है तो उसे ये छूट मिलती है कि वह फीस जमा कराये बिना दाखिला ले सकता है। जिन छात्रों की संयुक्त परिवार की आय रु.4,00000 प्रति वर्ष से कम है ऐसे विद्यार्थी फीस माफी के लिए आवेदन करने योग्य हैं। विद्यार्थियों को शुल्क छूट तब तक मिलता रहेगा जब तक वह नियमित तौर पर कक्षाएँ लेंगें तथा पढ़ाई में अपने प्रदर्शन का एक स्वीकार्य स्तर बनाये रखेंगे।

एयूडी के अंतर्गत 'छात्र कल्याण निधि' बनाने का मुख्य उद्देश्य यह था कि ज़रूरतमन्द छात्रों को उनकी रोज़मर्रा की आवश्यकताओं के लिए आर्थिक सहायता प्रदान की जा सके। आपातकालीन चिकित्सा सहायता, किताबों की खरीद, विभिन्न प्रकार की शैक्षिक सामग्री, बोर्डिंग में रहने के खर्चे इत्यादि उस लागत (मूल्य) के बराबर होता है जो विश्वविद्यालय की छात्रावास सुविधाओं को प्राप्त करने के लिए आवश्यक होता है। एयूडी के छात्रावास में रहने के लिए या किसी अन्य प्रकार की ज़रूरतों के लिए भी 'छात्र कल्याण निधि' सहायता करती है। हर सेमेस्टर में प्रत्येक विद्यार्थी से 'छात्र कल्याण निधि' के लिए रु. 500/– लिए जाते हैं। जो रकम 'छात्र कल्याण निधि' के लिए छात्रों से एकत्रित की जाती है , उसी के बराबर की रकम विश्वविद्यालय इस निधि को प्रदान करता है। 'छात्र कल्याण निधि' की निगरानी और प्रबंधन एक समिति द्वारा किया जाता है जिसमें छात्र संघ का एक नामित प्रतिनिधि भी शामिल होता है।

उम्मीदवारों (कैंडिडेट्स) का चयन –

बी.ए ऑनर्स पाठ्यक्रम के दाखिले 10+2 बोर्ड के परीक्षा परिणाम पर आधारित होते हैं। अलग–अलग पाठ्यक्रम में दाखिले के लिए विद्यार्थियों का चयन एक लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार के बाद किया जाता है।

प्रवेश परीक्षा में शामिल होने के लिए योग्यताएं व आवश्यकताएँ :–

प्रवेश परीक्षा में शामिल होने के लिए पात्रता के मानदंड (सामान्य एवं आरक्षित वर्ग दोनों के लिए) विश्वविद्यालय के नियमों के अनुसार बनाये जाते हैं। कोई विद्यार्थी या प्रत्याशी क्वालीफाइंग (अर्हता) परीक्षा देने वाला हो तो उनको ये छूट है कि वो किसी भी पाठ्यक्रम की प्रवेश परीक्षा दे सकते हैं। किसी भी पाठ्यक्रम में दाखिले के लिए प्रवेश परीक्षा और

क्वालीफाइंग परीक्षा में एक न्यूनतम अंक प्राप्त करने पर ही विद्यार्थी का चयन किया जाता है। इसके साथ ही दाखिले के समय विद्यार्थी को अपने सभी शैक्षणिक दस्तावेजों के साथ क्वालीफाइंग (अर्हता) परीक्षा की अंक तालिका को भी देना होता है, जिसके आधार पर छात्र ने कार्यक्रम के लिए आवेदन किया था।

पंजीकरण :–

जितने भी विद्यार्थियों (प्रत्याशी) का चयन दाखिले के लिए किया जाता है। उनको विश्वविद्यालय द्वारा नियमित समय सीमा में सारी औपचारिकताओं को पूरा करना होता है।

बी.ए पाठ्यक्रम के लिए शैक्षिक योग्यता :–

किसी भी मान्यता प्राप्त बोर्ड से 12वीं कक्षा में न्यूनतम 55% अंक अनिवार्य हैं। 5% अंक की छूट अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और शारीरिक रूप से विकलांग (पीडी) श्रेणियों से संबंधित उम्मीदवारों को दी जाती है। ऐसे बोर्ड जहाँ पर विद्यार्थियों को अंकों के बजाय ग्रेड्स दिए जाते हैं, उन छात्रों के लिए एक ऐसी प्रक्रिया बनायी जाएगी जिनसे उनके द्वारा प्राप्त ग्रेड्स को अंकों या प्रतिशत में बदला जा सके। जिन विद्यार्थियों को अर्थशास्त्र या गणित के विशेष पाठ्यक्रम में प्रवेश लेना है उनके पास 10+2 में गणित विषय होना अनिवार्य है।

एम.ए पाठ्क्रम के लिए शैक्षिक योग्यता :–

सभी पाठ्यक्रमों के लिए न्यूनतम पात्रता मानदंड है– किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से 45% अंकों के साथ (या इसके बराबर ग्रेड) किसी भी विषय में स्नातक की डिग्री। 5% अंक की छूट अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और शारीरिक रूप से विकलांग (पीडब्ल्यूडी) श्रेणियों से संबंधित उम्मीदवारों को दी जाती है।

परिशिष्ट–ख

एयूडी के वरिष्ठ अधिकारियों की सूची

क्रम संख्या.	अधिकारी का नाम	पद
1.	प्रोफेसर श्याम बी. मेनन	कुलपति
2.	प्रोफेसर चन्दन मुखर्जी	उपकुलपति
3.	प्रोफेसर विजया एस. वर्मा	योजना सलाहकार
4.	मिस. सुमति कुमार	रजिस्ट्रार (पंजीयक)
5.	मिस. आशा रूंगटा	वित्त नियंत्रक
6.	डॉ. के. श्रीनिवास	निर्देशक (आई.टी सर्विसेज)
7.	श्री पी. के. कटारमल	डिप्टी रजिस्ट्रार (पंजीयक)

परिशिष्ट–ग

वित्तीय वर्ष 2012–2013 में आयोजित वैधानिक निकायों की बैठकें

क्र. सं.	बैठक का नाम	दिनाँक
	कोर्ट	
1.	दूसरी (2nd) कोर्ट	26.10.2012
	प्रबंधन बोर्ड (बोर्ड ऑफ मैनेजमेंट)	
2.	12वीं बीओएम	31.07.2012
3.	13वीं बीओएम	11.02.2013
	वित्त समिति (फाइनेंस कमिटी)	
4.	छठी (6th) एफ सी	16.07.2012
5.	सातवीं (7th) एफ सी	15.10.2012
6.	आठवीं (8th) एफ सी	8.12.2012
	कार्यकारिणी परिषद (एग्जीक्यूटिव कॉउंसिल)	
7.	सातवीं (7th) इ सी	18.07.2012
8.	आठवीं (8th) इ सी	11.10.2012 और 21.11.2012
	अकादमिक परिषद (एकेडेमिक कॉउंसिल)	
9.	दूसरी (2nd) ए सी	23.08.2012
10.	तीसरी (3rd) ए सी	10.12.2012

परिशिष्ट–घ

पाठ्य समिति:–

विश्वविद्यालय ने निम्नलिखित अध्ययन शिक्षालयओं के लिए पाठ्य समिति का गठन किया है –

1. व्यापार लोक नीति और सामाजिक उद्यमिता अध्ययन शिक्षालय
2. संस्कृति और रचनात्मक अभिव्यक्ति अध्ययन शिक्षालय
3. डिजाइन अध्ययन शिक्षालय
4. विकास अध्ययन शिक्षालय
5. शिक्षा अध्ययन शिक्षालय
6. मानव पारिस्थितिकी अध्ययन शिक्षालय
7. मानव अध्ययन शिक्षालय
8. ललित अध्ययन शिक्षालय (स्कूल ऑफ लिबरल स्टडीज)
9. स्नातक अध्ययन शिक्षालय

परिशिष्ट–ङ

सूचना अधिकार अधिनियम (आर टी आई)

सूचना अधिकार अधिनियम 2005 की धारा 4 (1) (बी) के तहत आवश्यकताओं के अनुपालन के लिए, अम्बेडकर विश्वविद्यालय,दिल्ली ने 17 नियमावलियाँ तैयार की हैं, जो विश्वविद्यालय की वेबसाइट – www.aud.ac.in पर उपलब्ध हैं।

नियमावलियाँः–

1. एयूडी के संगठनों, कार्यों और कर्तव्य का विवरण।
2. अपने अधिकारियों और कर्मचारियों की शक्तियां और कर्तव्यों का विवरण।
3. निर्णय लेने के लिए जिस प्रक्रिया का प्रयोग किया जाता है उसमें पर्यवेक्षण के माध्यम और उनके दायित्व शामिल हैं।
4. विश्वविद्यालय ने अपने कार्यों के निर्वहन के लिए मापदंड निर्धारित किये हुए हैं।
5. नियम, विनियम, निर्देश ,नियमावली एवं अभिलेख विश्वविद्यालय द्वारा ही बनाये जाते हैं या इनके अपने नियंत्रण में रहते हैं या इनका उपयोग विश्वविद्यालय कर्मचारियों के द्वारा कार्यों के निर्वाह के लिए किया जाता है।
6. दस्तावेजों की श्रेणियों का विवरण विश्वविद्यालय के द्वारा ही बनाया जाता है या उनके अपने नियंत्रण में रहता है।
7. किसी भी नीति को बनाने या उसके कार्यान्वयन के लिए, उसके प्रतिनिधित्व के लिए, किसी भी व्यवस्था के विवरण के लिए जनता के सदस्यों के परामर्शों को शामिल करना।
8. सलाहकार समितियों,परिषदों ,कमेटियों और अन्य निकायों का गठन किया जाए जिसमें दो या दो से अधिक व्यक्ति सलाह देने के लिए हों। इन समितियों, परिषदों, कमेटियों तथा अन्य निकायों में होने वाली बैठकों की जानकारी जनता के लिए सार्वजनिक हो । ऐसी बैठकों के कार्यवृत्त जनता के लिए उपलब्ध हों।
9. अपने अधिकारियों और कर्मचारियों की निर्देशिका।
10. अपने विनियमों में अधिकारियों और कर्मचारियों के द्वारा प्राप्त मासिक पारिश्रमिक सहित मुआवजे की प्रणाली को भी बताया जाए।

11. ऐसी रिपोर्ट जिसमें हर एजेंसी को निर्धारित किये गए बजट की जानकारी हो। इस रिपोर्ट में सभी एजेंसियों की योजनाओं एवं प्रत्येक योजना के लिए प्रस्तावित व्यय तथा उसके संवितरण की जानकारी भी हो।
12. ऐसा विवरण जिसमें रियायत (सब्सिडी) कार्यक्रमों के निष्पादन की नीति और आबंटित राशि सहित ऐसे कार्यक्रमों के लाभार्थियों की भी जानकारी हो।
13. ऐसे ब्यौरे जिसमें उन प्राप्तकर्ताओं की जानकारी हो जिनको रियायतें , परमिट या प्राधिकार प्रदान किये गए हैं।
14. ऐसी जानकारी के सम्बन्ध में विवरण जो इलेक्ट्रॉनिक रूप को कम करने के लिए उपलब्ध हों या उसके द्वारा धारित हों।
15. सूचना प्राप्त करने के लिए नागरिकों को दी गयी सुविधाओं का विवरण, जिसमें पुस्तकालय या वाचनालय के काम के घंटे भी शामिल हों , अगर उन्हें सार्वजनिक उपयोग के लिए बनाया गया है।
16. जन सूचना अधिकारियों के नाम, पद तथा उनसे सम्बंधित अन्य जानकारी का विवरण।
17. ऐसी कोई भी जानकारी जिसे समय–समय पर छापा एवं निर्धारित किया जा सके। इसके बाद प्रकाशित सामग्री को नवीन रूप में बदला जा सके।

'सूचना के अधिकार' (आरटीआई) की जानकारी के लिए अधिकारीः–

प्रथम अपीलीय प्राधिकारी और जन सूचना अधिकारीः–

क्र. सं.	नाम	पद
1.	प्रथम अपीलीय प्राधिकारी	प्रोफेसर चन्दन मुखर्जी, रजिस्ट्रार, (पंजीयक)
2.	जन–सूचनाअधिकारी (पीआईओ)	श्री पी. के. कटारमल, डिप्टी रजिस्ट्रार (पंजीयक)
3.	नोडल अधिकारी	श्री सुचा सिंह, सहायक रजिस्ट्रार, (प्रशासन)

लोक सहायक सूचना अधिकारीः–

क्र. सं.	नाम	पद	कार्य क्षेत्र की जानकारी
1.	श्री सुचा सिंह	सहायक रजिस्ट्रार (पंजीयक)	प्रशासन प्रभाग से संबंधित सभी जानकारी
2.	श्री संथानम आइयंगर	सहायक रजिस्ट्रार (पंजीयक)	शैक्षिक सेवाओं से सम्बंधित सभी जानकारी
3.	डॉ. आर. डी. शर्मा	सहायक रजिस्ट्रार (पंजीयक)	वित्त प्रभाग से सम्बंधित सभी जानकारी
4.	श्री नरेंद्र मिश्रा	सहायक (पंजीयक)	रजिस्ट्रार आई.टी सेवाओं से सम्बंधित सभी जानकारी
5.	मिस अर्चना शर्मा	सहायक रजिस्ट्रार (पंजीयक)	योजना विभाग से सम्बंधित सभी जानकारी
6.	श्री राजीव कुमार	सहायक रजिस्ट्रार (पंजीयक)	विद्यार्थी सेवाओं से सम्बंधित सभी जानकारी

अनुसूचित जाति / जनजाति के लिए संपर्क अधिकारीः–

विश्वविद्यालय में भर्ती और दाखिले में अनुसूचित जाति / जनजाति के पक्ष में आरक्षण नीति के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए, विकासात्मक अध्ययन केंद्र के, सहायक प्राध्यापक, डॉ. अरुण कुमार मोन्डिटोका को संपर्क अधिकारी के रूप में नामित किया गया है।

संपर्क अधिकारी के कर्तव्य इस प्रकार हैंः–

1. अनुसूचित जाति /जनजाति के लिए आरक्षण के आदेश के साथ विश्वविद्यालय द्वारा इसके अनुपालन तथा अन्य स्वीकार्य लाभों को सुनिश्चित करना।
2. ये सुनिश्चित करना कि नियुक्त प्राधिकारी द्वारा वार्षिक विवरणों को मंत्रालय / विभाग के समक्ष शीघ्र प्रस्तुत किया जाए। इसके साथ ही ये जांचना कि वार्षिक विवरण का एकत्रीकरण और इस तरह के समेकित विवरण को क्रमिक और प्रशिक्षण विभाग (डीओपीटी) के पास भेजा जाए।
3. आरक्षण प्रस्तावों की ठीक से जांच करना और पूरी संतुष्टि के बाद ये प्रमाणित करना कि इस तरह के आरक्षण अपरिहार्य हैं। इस सम्बन्ध में जो भी कदम उठाये जा सकते थे उन्हें पूरी निष्ठा के साथ उठाया गया है।
4. मंत्रालयों /विभागों के बीच संबंध स्थापित करने के लिए आवश्यक सूचना प्रदान करना , प्रश्नों का जवाब देना एवं संदेह को दूर करना।

5. नामावली /तालिका का वार्षिक निरीक्षण कराना, इन निरीक्षणों के रिकॉर्ड को बनाये रखना।
6. अनुसूचित जाति /जनजाति की समिति को जरूरी सहायता प्रदान करना ताकि वह अपने कर्तव्यों और कार्यों का निर्वाह सही ढंग से कर सकें।

परिशिष्ट–च

समितियों की सूचीः–

कार्य समूह

निम्नलिखित कार्य समूह का निर्माण इसलिए किया गया है जिससे विश्वविद्यालय की विभिन्न संस्थागत प्रक्रिया को नियंत्रित करने के लिए नियमों को बनाया जा सके जैसे– शैक्षिक नियम , वित्तीय नियम एवं सेवा नियम।

प्रोफेसर चन्दन मुखर्जी सभापति
प्रोफेसर ए.आर.खान, इग्नू
श्री सी.आर. पिल्लई वित्त नियंत्रक, एयूडी
प्रोफेसर कुरियाकोस मंकुट्टम रजिस्ट्रार (पंजीयक), एयूडी

स्थायी समिति (शैक्षिक कार्यक्रम)

यह समिति अपनी निगरानी में विभिन्न शैक्षणिक कार्यक्रमों का विकास एवं मार्गदर्शन, विभिन्न चरणों के माध्यम से शिक्षालय के अध्ययन मंडल द्वारा परिकल्पित रूप में करती है ।

कुलपति या उसके द्वारा नामांकित व्यक्ति सभापति
प्रोफेसर अशोक नागपाल, एस.एच.एस
प्रोफेसर चन्दन मुखर्जी, एस.डी.एस / एस.एच.ई
प्रोफेसर शिवाजी पणिक्कर, एस.सी.सी.ई
प्रोफेसर गीता वेंकटरमन, एस.यू.एस
प्रोफेसर सलिल मिश्र, एस.एल.एस सदस्य सचिव

स्थायी समिति (विद्यार्थी सेवाएं):–

यह समिति छात्र सेवाओं से संबंधित सभी मामलों में जाँच –पड़ताल के लिए उत्तरदायी होगी।

प्रोफेसर के. मंकुट्टम, निर्देशक, एस.बी.पी.पी.एस.ई सभापति
प्रोफेसर विनीता कौल, एस.ई.एस

प्रोफेसर हनी ओबेरॉय वहाली, एस.एच.एस
डॉ.सुमंगला दामोदरन, एस.डी.एस
डॉ.प्रवीण सिंह, एस.एच.ई
डॉ. आभा वरमानी,डिप्टी रजिस्ट्रार (विद्यार्थी सेवाएँ) सदस्य सचिव

अनुसूचित जाति और जनजाति के संपर्क अधिकारीः–

डॉ. अरुण कुमार मोन्डिटोका , सहायक प्राध्यापक , एस.डी.एस ,विश्वविद्यालय में नीति के कार्यान्वयन के लिए अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के लिए आरक्षण और रियायतों की जाँच –पड़ताल करेंगे ।

एयूडी के लिए कार्य समूह
(एयूडी की एक नई वेबसाइट विकसित करने के लिए)

डॉ. अस्मिता काबरा, एस.एच.एस (सभापति और संयोजक)
डॉ. रोहित नेगी, एस.एच.एस
डॉ. राधिका गोविन्द, एस.एच.एस
डॉ. प्रीति मान, एस.डी.एस
मिस. संजू थॉमस, एस.यू.एस / एस.एल.एस
डॉ.उषा मुदिगंति, एस.यू.एस / एस.एल.एस
डॉ. तनुजा कोठियाल, एस.यू.एस / एस.एल.एस

रैगिंग –विरोधी कमेटी और रैगिंग –विरोधी दस्ताः–

रजिस्ट्रार सभापति
प्रोफेसर सलिल मिश्र, डीन(अधिष्ठाता), एस.एल.एस
डॉ. सुरजीत मजूमदार, एसोसिएट प्रोफेसर
प्रोफेसर अशोक नागपाल, डीन (एस.एच.एस)
श्रीमान विनोद आर., वरिष्ठ वार्डन

रैगिंग –विरोधी दस्ता :–

प्रोफेसर हनी ओबेरॉय वहाली सभापति

डॉ. सुरेश बाबू, सहायक प्राध्यापक
डॉ. अभिजीत एस. बर्डपूर्कर, सहायक प्राध्यापक
डॉ. अंशु गुप्ता, सहायक प्राध्यापक
डॉ.राधिका गोविन्द, सहायक प्राध्यापक
श्रीमान रिक मित्रा, सहायक प्राध्यापक
डॉ.अरुण कुमार मोन्डिटोका, सहायक प्राध्यापक
मिस गुंजन शर्मा, सहायक प्राध्यापक
डॉ. योगेश स्नेही, सहायक प्राध्यापक
श्रीमान विक्रम सिंह ठाकुर, सहायक प्राध्यापक
डॉ. ओइनम हेमलता देवी, वार्डन
श्रीमान विनोद आर., वरिष्ठ वार्डन

जेंडर मुद्दों की समिति

प्रोफेसर विनीता कौल, एस.ई.एस — सभापति
डॉ. ममता करोल्लिल, एस.एच.एस
डॉ. रचना चौधरी, एस.एच.एस
मिस संजू थॉमस, एस.यू.एस / एस.एल.एस
डॉ. शुभ्रा नागलिया, एस.एच.एस

परिसर के विकास के लिए संचालन समितिः–

कुलपति — सभापति
उपकुलपति, सदस्य
अधिष्ठाता (डीन), योजना सदस्य
अधिष्ठाता (डीन), डिज़ाइन अध्ययन, शिक्षालय सदस्य
प्रोफेसर सी.आर.बाबू, सदस्य
श्री संतोष औलक, सदस्य रजिस्ट्रार (पंजीयक), सदस्य वित्तनियंत्रक
सदस्य निर्देशक (योजना एवं प्रशासन), परिसर विकास सदस्य

परिसर के विकास के लिए सलाहकार समितिः–

1. कुलपति सभापति
2. उपकुलपति सदस्य
3. सचिव (उच्च) शिक्षा, सदस्य राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र,दिल्ली सरकार
4. किसी भी अध्ययन केंद्र से एक अधिष्ठाता सदस्य (कुलपति द्वारा नामित)
5. अधिष्ठाता (डीन), योजनासदस्य
6. रजिस्ट्रार (पंजीयक) सदस्य
7. वित्त नियंत्रक सदस्य
8. सरकारी प्रत्याशियों में से एक प्रबंधन बोर्ड से सदस्य
9. एक पूर्व मुख्य सचिव, जी.एन.सी.टी.डी (GNCTD) सदस्य या एक पूर्व सचिव या इसके बराबर
10. प्रोफेसर सी.आर.बाबू ,पर्यावरण और पारिस्थितिकी सदस्य के प्रतिष्ठित प्रोफेसर
11. श्री अशोक कुमार निगम, पूर्व सभापति ,डी.डी.ए सदस्य
12. प्रोफेसर के.टी. रविन्द्रन, पूर्व सभापति, सदस्य शहरी कला आयोग
13. श्री वी.सुरेश, पूर्व अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, सदस्य एच.यू.डी.सी.ओ (HUDCO)
14. निदेशक (योजना एवं प्रशासन) परिसर विकास सदस्य

एयूडी में यात्रा अनुदान समितिः–

अधिष्ठाता (शैक्षिक सेवाएँ) सभापति
अधिष्ठाता संबद्ध (CONCERNED) सदस्य वित्त नियंत्रक सदस्य
निदेशक, एस.बी.पी.पी.एस.ई/अधिष्ठाता (डीन),सदस्य एसएलएस

मध्यावधि समीक्षा समिति :–

प्रोफेसर दीपक नैय्यर सभापति
प्रोफेसर के. रामचन्द्रन, सदस्य
डॉ. किरण दातार, सदस्य
प्रोफेसर एन. जयराम, सदस्य
प्रोफेसर योगेन्द्र यादव, सदस्य
प्रोफेसर विजया एस. वर्मा, योजना सदस्य

प्रोफेसर चन्दन मुखर्जी, एस.डी.एस /एस.एच.एस सदस्य
मिस मानसी थपलियाल नवानी, एस.ई.एस सदस्य

एयूडी में स्थानीय खरीद स्थायी समितिः–

श्री बी. के. सौम्यजुलु , ए. आर. (वित्त) सदस्य
श्री सतपाल, वरिष्ठ सलाहकार (कार्मिक) सदस्य
श्री नरेंद्र मिश्रा,ए.आर. (आई.टी सेवाएँ) सदस्य

एयूडी में खेल समितिः–

डॉ. योगेश स्नेही, एस.यू.एस/एस.एल.एस संयोजक
श्रीमान आनंद सौरभ सदस्य
डॉ. धारित्री नर्ज़री, एस.यू.एस/ एस.एल.एस सदस्य
श्रीमान विक्रम सिंह ठाकुर, एस.यू.एस/एस.एल.एस सदस्य
श्रीमान अखा कैहरी माओ, एस.ई.एस सदस्य
डॉ. उर्फत अंजम मीर,एस.यू.एस/ एस.एल.एस सदस्य
मिस थोकचोम बिबिनाज देवी, एस.एच.एस सदस्य
श्रीमान सयनदेब चौधरी, एस.यू.एस/एस.एल.एस सदस्य

कार्य – एयूडी में सलाहकार समितिः–

सुमति कुमार, रजिस्ट्रार	सभापति
प्रोफेसर विजया एस. वर्मा, निदेशक परिसर विकास	विशेष रूप से आमंत्रित
प्रोफेसर जतिन भट्ट ,एसडी	विशेष रूप से आमंत्रित
श्रीमान राजन कृष्णन, एस.सी.सी.ई	विशेष रूप से आमंत्रित

श्री संतोष औलक, सलाहकार, वास्तुकार सदस्य
श्री पी.मणि, वरिष्ठ सलाहकार,एयूडी सदस्य
श्री युधिष्ठिर , जे.ई , इलेक्ट्रिकल, एयूडी सदस्य
डॉ. लीओन मोरेनस, एसडी सदस्य
श्री एस.के.शर्मा, ए.ई, इलेक्ट्रिकल, पी.डब्लू.डी सदस्य
श्री वी.के.गुप्ता, ए.ई, सिविल, पी.डब्लू.डी सदस्य
श्री जोगेश कुमार, जे. ई, इलेक्ट्रिकल, पी.डब्लू.डी सदस्य

Marshall

परिशिष्ट–छ

विश्वविद्यालय की गतिविधियाँ

Aud@city: विश्वविद्यालय महोत्सव, Aud@city 2012, का आयोजन 2–3 नवम्बर 2012 को किया गया। इस महोत्सव में दिल्ली के सभी हिस्सों से विद्यार्थियों ने भाग लिया तथा 2 नवम्बर 2012 को आयोजित विश्वविद्यालय के पहले दीक्षांत समारोह के समां में एक नया रंग भर दिया। रंगमंच, चित्रकला, नृत्य, फोटोग्राफी, नाटक एवं एकांकी से संबंधित विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम स्थल छात्रों द्वारा अपने कौशल के प्रदर्शन के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण था। इस अवसर पर दास्ताँ गोई का प्रदर्शन किया गया एवं सूफी कलाकार डॉ. मदन गोपाल सिंह द्वारा संगीत कार्यक्रम (गायन–वादन) भी पेश किया गया।

1. संस्कृति एवं सृजनात्मक अभिव्यक्ति शिक्षालय (एससीसीई)

पुरस्कार एवं सम्मान :–

कन्दली,एम (2012): दीमापुर में आयोजित (एन.ई.जेड.सी.सी का रजत जयंती उत्सव, केंद्रीय सरकार की पहल – उत्तर–पूर्व क्षेत्र की कला, संस्कृति तथा साहित्य के संवर्धन एवं संरक्षण के लिए) नार्थ ईस्ट वीमेन राइटर्स सम्मेलन में लेखक के रूप में आमंत्रित ।

———(2012): "वायलेंस डबल स्प्रेडः फ्रॉम प्राइवेट टू पब्लिक टू लाइफ वर्ल्ड", पैनलिस्ट , स्कूल ऑफ आर्ट एंड एस्थेटिक्स, जेऐनयू, नयी दिल्ली, 5 अक्टूबर।

———(2013) : हेंरीच बोएल फाउंडेशन (18 जनवरी) द्वारा जुबान एवं भारत पर्यावास केंद्र, दिल्ली में आयोजित द्वि पैनल चर्चा " फेस्टिवल ऑफ पीसः लिटरेचर /कल्चर/ पॉलिटिक्स" में लेखक तथा पैनलिस्ट के रूप में आमंत्रित ।

———(2013) : सेंटर फॉर सोशल साइंस, जेऐनयू, दिल्ली में 18 मार्च को आयोजित 'एन ई आई एस पी राष्ट्रीय कार्यशाला' में "फिक्सिटी एंड फ्लूइडीटी : हिस्ट्री, पॉलिटिक्स एंड कल्चर ऑफ नार्थ ईस्ट इंडिया" विषय पर परिचर्चा के लिए आमंत्रित।

पणिक्कर, शिवाजी (2012): वेस्ट हेवन्स फोरम, रॉकबंड म्यूजियम, शंघाई, चीन में 29 नवम्बर को आयोजित परिचर्चा "आर्ट एंड एक्टिविज्म इन इंडिया" में आमंत्रित।

डिज़ाइन अध्ययन शिक्षालय (स्कूल ऑफ डिज़ाइन)

सम्मान एवं विशेष पुरस्कार

- बालसुब्रह्मण्यन, एस., को 'डिज़ाइन हिस्ट्री' में अनुसंधान को आगे बढ़ाने के लिए वर्ष 2012–2013 में एक साल की 'लेवरहेम फैलोशिप' से सम्मानित किया गया। यह सम्मान रॉयल कॉलेज ऑफ आर्ट, लंदन, यू.के. में दिया गया।
- भट्ट, जे., को 'वास्तुकला विद्यालय',आर्ट्स एंड डिज़ाइन, आईएमटी बड़ोदरा के अकादमिक परिषद् के सदस्य के रूप में मनोनीत किया गया।
- भट्ट, जे., को 'पर्ल अकेडमी',नोएडा, यूपी में इनके 'इंटीरियर प्रोडक्ट डिजाइन' कार्यक्रम के लिए 'नॉटिंघम ट्रेंट विश्वविद्यालय', यूके द्वारा बाह्य परीक्षक के रूप में नामित किया गया।
- भट्ट, जे., को राजस्थान में कार्यान्वित की जा रही परियोजना 'अपलिफ्ट'(अर्बन पुअर लाइवलीहुड इनिशिएटिव Fः फाइनेंस एंड ट्रेनिंग) के योजना सलाहकार समिति के सदस्य के रूप में मनोनीत किया गया।
- मोरेनस, एल., 2012 –2013, 'इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय', दिल्ली में बीए वास्तुकला कार्यक्रम के लिए विशेषज्ञ / मूल्यांकनकर्ता के रूप में आमंत्रित।
- मोरेनस,एल.,2012,फ्यूचर इंस्टिट्यूट फैलो ऑन सिटीज एंड अर्बेनिटी इन इंडिया।
- मोरेनस,एल.,2013,जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय,दिल्ली में एम ए आर्किटेक्चर इन अर्बन रिजेनेरेशन (शहरी उत्थान में वास्तुकला) के लिए बाहरी ज्यूरी सदस्य के रूप में आमंत्रित।
- मोरेनस,एल.,2013.,को 'सूचना प्रोद्यौगिकी, पूर्वानुमान एवं मूल्यांकन परिषद' टीआईएफएसी) के लिए 'साक्षरता, रचनात्मकता और 2035 की प्रौद्योगिकी दृष्टि के कौशल अध्याय पर जानकारी उपलब्ध करने हेतु बाहरी विशेषज्ञ के रूप में आमंत्रित किया गया।

विकास अध्ययन शिक्षालय (स्कूल ऑफ डेवलपमेंट स्टडीज ,एस.डी)

शिक्षालय ने छात्रों का ध्यान 'औद्योगिक और श्रम अध्ययन' में अनुसंधान और क्षेत्र प्रविधियों की ओर आकृष्ट करने के लिए एक 'श्रम अध्ययन संवर्धन' (लेबर स्टडीज कॉलोक्वियम) कार्यक्रम शुरू किया है। जिसका उदघाटन 28 जनवरी 2013 को प्रोफेसर माइकल ब्यूरावॉय, बर्कले विश्वविद्यालय एवं प्रोफेसर अरी सिटस, केप्टाउन विश्वविद्यालय द्वारा

किया गया, तथा 30 जनवरी 2013 को प्रोफेसर अरी सिटस ने गुणात्मक अनुसंधान प्रविधियों पर एक कार्यशालाका आयोजन किया।

एस.डी.एस संकाय का विश्वविद्यालय की प्रमुख स्तरीय गतिविधियों के साथ जुड़ाव

सुमंगला दामोदरन	• सदस्य, अकादमिक परिषद • संयोजक, विश्वविद्यालय पाठ्येत्तर गतिविधि समिति • छात्रों की स्थायी समिति की सदस्य • अकादमिक परिषद की कार्यभार उप समिति की सदस्य। • मानव अध्ययन शिक्षालय एवं संस्कृति और रचनात्मक अभिव्यक्ति अध्ययन शिक्षालय के अध्ययन बोर्ड की सदस्य।

सांस्कृतिक एवं अन्य गतिविधियाँ :–

- माओ ए.के., ने अक्टूबर 2012 में एयूडी के छात्रों, शिक्षकों और कर्मचारियों के लिए कश्मीरी गेट कैंपस में एयूडी के पहले खेल दिवस का आयोजन किया।
- माओ ए.के., ने मार्च 2013 में एयूडी के छात्रों, शिक्षकों और कर्मचारियों के लिए कश्मीरी गेट कैंपस में एयूडी की पहली 'एथलेटिक्स मीट' का आयोजन किया।
- नवानी,एम.टी., ने 'एयूडी संस्थागत स्मृति, परियोजना' का समायोजन किया।
- नवानी,एम.टी.,एयूडी की 'मध्य–सत्रांत जाँच समिति' के सदस्य –सचिव, अप्रैल 2012 से लेकर जनवरी 2013 तक थे।
- नवानी, एम.टी., 'एयूडी छात्र सेल अनुसंधान परियोजना' के सदस्य थे।

मानव पारिस्थितिकी अध्ययन शिक्षालय (एस.एच.ई)

शिक्षालय ने 27 सितम्बर 2012, को छात्र शोध संगोष्ठी एवं समूह बैठक का आयोजन किया। जहाँ कार्यरत छात्रों के शोध कार्य को पोस्टर रूप में प्रदर्शित किया गया। छात्रों ने शिक्षालय में अपने अध्ययन के अनुभव के आधार पर एक लघु चलचित्र को तैयार करके उसकी प्रस्तुति की।

इसके अलावा, एस.एच.ई ने एक मंगलवार संगोष्ठी श्रृंखला (ट्यूसडे संगोष्ठी सीरीज) का आयोजन किया। भारत एवं विदेशों से कई अध्येता और व्यवसायी शामिल हुए जिन्होनें शिक्षालय का दौरा किया एवं संगोष्ठी में अपनी बात को रखा। इनमें निम्नलिखित वार्ताएं शामिल हैं –

- ब्रॉकिंग्टन,डेन, 'किलों का संरक्षण' निष्कासन, सत्ता और संरक्षण दृष्टि', 4 अप्रैल 2012.
- नगेन्द्र, एच., 'शहरों में संरक्षणः परिदृश्य, गुंजाइशें और चुनौतियाँ', 17 अगस्त 2012.
- एलवरेस, क्लॉड, 'गोवा के विशेष संदर्भ में खनन की राजनीतिक अर्थव्यवस्था', 4 सितम्बर 2012 .
- लेले, शरच्चन्द्र, 'पर्यावरण का अंतर्पाठीय विश्लेषणः उष्णकटिबंधीय जंगलों पर शोध की अंतर्दृष्टि', 9 अक्टूबर 2012
- गिल, के., 'प्रमाण, आम सहमति और नीतिः भारत की बारहवीं पंचवर्षीय योजना में सार्वजनिक स्वास्थ्य के विचित्र मामले', 6 नवंबर, 2012
- लेनिन, जेनाकी, 'मेरा पति और अन्य जानवर '(माय हस्बैंड एंड अदर्स एनीमल्स), 27 नवंबर, 2012
- चेल्लम, आर., 'एशियाई शेरों की पारिस्थितिकी और उनके संरक्षण की राजनीति', जनवरी 22, 2013

राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर (एस.एच.ई) संकाय द्वारा प्राप्त सम्मान/विशेष पुरस्कारः

- काबरा, ए., को 'साइंस प्रोग्राम कमेटी फॉर बायोडायवर्सिटी एशिया, 2012 के लिए सदस्य रूप में आमंत्रित किया गया। यह सम्मेलन 'द सोसायटी फॉर कंज़र्वेशन बायोलॉजी' द्वारा आयोजित किया गया।
- काबरा, ए., एवं शाहबुद्दीन, जी., को सहयोगी संपादक के रूप में पत्रिका संरक्षण और सोसायटी के संपादकीय बोर्ड में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया गया। (2013 से 2015)

एस.एच.ई अध्ययन शिक्षालय की सांस्कृतिक एवं अन्य गतिविधियाँ

एस.एच.ई संकाय द्वारा आयोजित पाठ्येतर गतिविधियाँ –

- कार्यक्षेत्रों का दौरा :– एस.एच.ई के स्नातकोत्तर (एम.ए) पाठ्यक्रम की विषयवस्तु को इस प्रकार बनाया गया है जिससे कि विद्यार्थियों को सैद्धांतिक ज्ञान के साथ

व्यावहारिक ज्ञान के सभी पहलुओं का बोध हो सके। इसलिए छात्रों को नियमित रूप से विभिन्न कार्यक्षेत्रों का भ्रमण कराया गया जिसका विवरण नीचे दी गयी तालिका में है–

कार्य क्षेत्र का स्थान और विषय	दिनाँक	विवरण एवं संकाय के परामर्शदाता
विस्थापित और उपेक्षित चराई की बहाली, कुनो अभयारण्य, मध्य प्रदेश	अक्टूबर 2012	डॉ. अस्मिता काबरा एवं सुरेश बाबू के नेतृत्व में 5 दिन की यात्रा; एस.डी.एस और एस.एच.एस के तृतीय सेमेस्टर के छात्रों की सहभागिता
चंडीगढ़ शहर में पारिस्थितिकी एवं विकास के मुद्दों का अध्ययन	सितम्बर 2012	डॉ. नेगी के नेतृत्व में 2 दिन की यात्रा; एस.डी.एस के तृतीय सेमेस्टर के छात्रों द्वारा सहभागिता
रेणुका बांध, सिरमौर, हिमांचल प्रदेशः उपेक्षित चूना–पत्थर खनन पारिस्थितिकी और राजनीतिक पारिस्थितिकी के मुद्दों का अध्ययन	फरवरी 2013	डॉ. सुरेश बाबू एवं डॉ. रोहित नेगी के नेतृत्व में 4 दिन की यात्रा; तृतीय सेमेस्टर के छात्रों की सहभागिता
राजाजी राष्ट्रीय पार्क, उत्तराखंडः बुनियादी पारिस्थितिकीय एवं कार्यक्षेत्र कौशल का अध्ययन	नवंबर–दिसंबर 2012	डॉ. सुरेश बाबू के नेतृत्व में 5 दिन की यात्रा; प्रथम सेमेस्टर के छात्रों की सहभागिता
राव जोधा रेगिस्तान रॉक पार्क, जोधपुरः जैव विविधता संरक्षण में अभ्यास, प्रकृति के प्रति जागरूकता की गतिविधियों और पारिस्थितिकी तंत्र की बहाली का अध्ययन	सितम्बर 2012	डॉ. गज़ाला शाहबुद्दीन के नेतृत्व में 2 दिन की यात्रा।

ब. Aud@city2012: विश्वविद्यालय महोत्सव, aud@city2012 का आयोजन अक्टूबर–नवंबर 2012 में डॉ.अस्मिता काबरा द्वारा किया गया। इस महोत्सव का आयोजन बाहरी कार्यक्रम प्रबंधक के सहयोग से किया गया,जिसमें एयूडी के शिक्षक एवं एक बड़ी संख्या में छात्र स्वयंसेवक मौजूद थे।

स. एस.एच.ई संकाय का विश्वविद्यालय की प्रमुख स्तरीय गतिविधियों के साथ जुड़ाव

डॉ. अस्मिता काबरा	एयूडी वेबसाइट टास्क फ़ोर्स की संयोजक; विश्वविद्यालय की नई वेबसाइट के डिजाइन और निष्पादन के लिए उत्तरदायी (अप्रैल 2012 के बाद), आई.टी वसूली समिति एवं निवेश समिति की सदस्य
डॉ.गज़ाला शाहबुद्दीन	लिंग संवेदीकरण समिति एवं आई.टी समिति की सदस्य
डॉ.रोहित नेगी	सह–संयोजक(डॉ.प्रवीण सिंह के साथ) डिज़ाइन कार्यक्रम समिति, वैश्विक अध्ययन में स्नातकोत्तर कार्यक्रम(एमए इन ग्लोबल स्टडीज) को प्रस्तावित किया। 'शहरी ज्ञान तंत्र एशिया, अनुसंधान के आसपास केंद्रित 13 संस्थानों में से एक अंतरराष्ट्रीय संघ और शहरी पर्यावरण के मुद्दे' एयूडी के समन्वयक। एक विदेशी पीएचडी छात्र (पूर्ण रूप से परिपक्व अध्येता) मिस्टर हैरी डब्ल्यू.फिशर, भूगोल विभाग, इल्लिनॉइस विश्वविद्यालयः जिनका विषय शामपेन जलवायु परिवर्तन के अनुकूलन के लिए संपत्ति का निर्माण एवं लोकतंत्र का दृढ़ीकरण है, के स्थानीय मेज़बान/पर्यवेक्षक।

डॉ. प्रवीण सिंह	यूजीसी से बारहवीं योजना अनुदान और पहले एयूडी प्रस्ताव को एक साथ लाने के लिए उत्तरदायी। एयूडी की अकादमिक परिषद, स्थायी समिति (छात्र सेवाएँ),एयूडी कर्मचारियों की सेवा समिति,शैक्षणिक समिति एवं अकादमिक परिषद की एन.ए.ए.सी समिति के सदस्य। वैश्विक अध्ययन समूह के संयोजक। दो विदेशी पी.एच.डी. छात्रों के स्थानीय मेज़बान /पर्यवेक्षक (पूर्ण रूप से परिपक्व अध्येता) मिस्टर हैरी डब्ल्यू.फिशर, भूगोल विभाग, अर्बना शामपेन में इल्लिनॉइस विश्वविद्यालयः जलवायु परिवर्तन के अनुकूलन के लिए संपत्ति का निर्माण एवं लोकतंत्र को दृढ़ बनाना। (पूर्ण रूप से परिपक्व अध्येता) मिस. जेसिका कुक, सेंटर फॉर सस्टेनेबल अर्बन इन्फ्रास्ट्रक्चर, कोलोराडो विश्वविद्यालय, डेन्वेर फॉर द प्रोजेक्ट सोशल स्ट्रक्चर एंड अडेप्टिव स्ट्रेटेजीज ऑफ देल्ही फार्मर्स इन रेस्पॉन्स टू लैंड यूज़ चेंज।
डॉ.सुरेश बाबू	विश्वविद्यालय की प्रॉक्टोरियल समिति एवं कैंपस स्पेस समिति के सदस्य।
डॉ, हेमलता	ओइनाम एयूडी एवं आईआईआई.टी के लड़कियों के छात्रावास की संरक्षक।

मानव अध्ययन शिक्षालय(एस.एच.एस)

अकादमिक गतिविधियाँ / आयोजित कार्यक्रमः

मनोसामाजिक नैदानिक अध्ययन

- पाटनी, आर., पॉलिश्ड सेल्वस,इमोशनल फूल्स एंड डेंजरस रोबोट्स' पोस्टकोलोनिकल इमोशनल जियोग्रफिस इन इंटरनेशनल नॉन–गवर्नमेंटल आर्गेनाइजेशन्स,सितम्बर 12, 2012।
- मिश्रा,जी., ने दिल्ली विश्वविद्यालय में पीएचडी मनोविज्ञान कार्यक्रम के लिए भारत में मनोवैज्ञानिक अनुसंधान कार्यप्रणाली एवं सांस्कृतिक मान्यताएँ पर उद्घाटन भाषण सितम्बर 14,2012 को प्रस्तुत किया।
- नायर,एन., (एकीकृत चिकित्सा का कैलिफोर्निया संस्थान) 'क्लीनिकल वर्क विद द हेअर एंड नाउ' 26 सितम्बर,2012।
- शर्मा,पी., 'सपनों की व्याख्या और विश्लेषण' पर मनोविश्लेषक, 3 अक्टूबर, 2012।
- 'वेक –अप' अहिंसा ट्रस्ट द्वारा आयोजित सत्र, एक ऐसा संगठन जो धर्मनिरपेक्ष बौद्ध सिद्धांतों पर आध्यात्मिक रूप से संलग्न है। इस संगठन की शुरुआत प्रख्यात बौद्ध भिक्षु एवं शिक्षक, 'थिच नतह हानह' ने की थी।
- सरीन, आलोक, औलक, शांति एवं सुब्रमणियम, वत्सला ने 'मानसिक स्वास्थ्य कार्य की चुनौतियाँः देखभाल के विचार और इलाज' पर पैनल चर्चा की। इस चर्चा का आयोजन विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस के अंतर्गत आवाज़ कार्यक्रम में एहसास' द्वारा 10–11 अक्टूबर,2012 को किया गया।
- विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस के अंतर्गत आवाज़ कार्यक्रम में छात्रों ने फिल्म स्क्रीनिंग,संगीत कार्यक्रम,इंटर कॉलेज पेपर प्रेजेंटेशन में भाग लिया। इस कार्यक्रम का आयोजन एहसास द्वारा 10–11 अक्टूबर,2012 को किया गया।
- बिस्वास,आर.,यादवपुर विश्वविद्यालय एवं रॉय,ए.,ससेक्स विश्वविद्यालय द्वारा कार्य की सहभागिता,12 और 29 नवंबर, 2012 को की गयी।
- गुप्ता,एस.,कॉग्निटिव बिहेवियरल फार्मूलेशन एंड मैनजमेंट ऑफ अटेंशन डेफिसिट एंड एनशक्स क्लीनिकल स्टेट्स पर नैदानिक मनोवैज्ञानिक, 6 फरवरी, 2013।
- दास,ए. शारीरिक शोध पर सी.एस.एस.एस.सी ,7 मार्च,2013.
- लवलीन, विकास संबंधी सिद्धांत और मनोविश्लेषीय उपचार पर पोस्टमेनटिएर, 11 मार्च, 2013।

जेंडर अध्ययन (एस.एच.एस)

- इनस पौसाडला, 'विवादास्पद प्रदर्शन और अधिकारों की भाषा, चिली छात्र आंदोलन (2011–2012). संचार और विकास संस्थान (उरुग्वे),27 अगस्त, 2012.
- आरती,एम.पी, 'नई उत्पादक प्रौद्योगिकियाँ', 8,15,16 अक्टूबर 2012.
- शाह,सी.,'प्रजनन स्वास्थ्य शोध', 17–18 अक्टूबर,2012.
- शाह,सी., 'भौतिक विज्ञान के माध्यम से महिलाओं के स्वास्थ्य आन्दोलन की यात्रा और महिला आंदोलनों के अन्य मुद्दे एवं इनस पौसाडला,'विवादास्पद प्रदर्शन और अधिकारों की भाषा, चिली छात्र आंदोलन (2011–2012)। लैंगिक अधिकार 'अभियान में समलैंगिक और उभयलिंगी' नामक संगठन के साथ संलग्नता, जिसे लेबिया (एल.ए.बी. आई.ए) कहा जाता है, अक्टूबर 18, 2012।
- चक्रवर्ती,यू.,'दक्षिण एशिया और नारीवादी राजनीति का एक सिंहावलोकन' 8 अक्टूबर एवं 8 नवंबर,2012।
- रॉय,ए.,'भारत में लैंगिकता, पौरुषत्त्व और विकास पर समकालीन विचार', 12 नवंबर, 2012।
- जेफरी,पी., 'बेटीः घृणा, दहेज और जनसांख्यिकीय परिवर्तन' एडिनबर्घ विश्वविद्यालय, स्कॉटलैंड, यू.के, नवंबर 22, 2012।
- बिस्वास,आर.,'दर्द से घाव तक : यौन हिंसा में न्याय पर पुनर्विचार', नवंबर 29,2012.
- नावेद,एस.,'औपनिवेशिक रोगः सुधार और एक ही लिंग में यौनिकता', दिसंबर 5,2012.
- रॉय,ए., 'नागरिकता का मानचित्रण', जनवरी 14,2013।
- टिपलट, नॉन्गबरीः, डीकंस्ट्रक्टिंग मेस्क्यूलिनिटीःफादरहुड,मेट्रीलिनी एंड जेंडर इन द कन्टेक्स्ट ऑफ द खासी', फरवरी 11,2013।
- मिस. वृंदा ग्रोवर (वकील), मिस. कविता कृष्णन (कार्यकर्ता, अखिल भारतीय प्रगतिशील महिला एसोसिएशन), मिस्टर. मुरलीधरण (कार्यकर्ता, विकलांग के अधिकारों के लिए राष्ट्रीय मंच) एवं डॉ.रुक्मिणी सेन(एयूडी) द्वारा 'इनजेंडरिंग डिग्निटी जेंडर जस्टिस, क्रिमिनल लॉ एंड द वर्मा कमिटी रिपोर्ट 'विषय पर पैनल चर्चा। ये पैनल चर्चा 'लैंगिक मुद्दों की समिति' के सहयोग के साथ छात्रों के फोरम द्वारा एयूडी में फरवरी 13, 2013 को आयोजित हुई।

निम्न अध्येताओं की शोध – प्रस्तुति 3 सितंबर, 2012 को आयोजित की गई

- आरती,एम.पी., जेंडर्ड बॉडीज,मेडिसिन एंड लॉः ए स्टडी ऑफ सिलेक्टेड केस लॉज़ फ्रॉम इंडिया,ओन हर वर्क।
- गोपी,आर.,'समकालीन केरल में पुरुषत्व का निर्माणः तीन राजनीतिक क्षेत्रों का अध्ययन– राजनीतिक दल, आयुर्वेद पर्यटन और रैगिंग का अध्ययन।
- शर्मा,एस.,'समाज में सुंदरता की धारणाओं में परिवर्तन और निरंतरताः एक समाजशास्त्रीय अध्ययन।
- ऐलवदि, डी., 'विधि आयोग की रिपोर्ट के असंबद्ध विचारः बलात्कार कानूनों पर पुनर्विचार'

विकास अभ्यास का केंद्र (एस.एच.एस)

शाह.एम., 'भारत में नागरिकों का समाज एवं विकास' उभरती चिंताएं ', 21 मार्च 2013 को आयोजित किया गया।

संकाय की उपलब्धियाँ (एस.एच.एस)

- गोविन्द, आर.,को अपनी परियोजना 'शहरी नवीकरण में लिंग और अस्मिता की राजनीति' के लिए सामाजिक विज्ञान अनुसंधान की भारतीय परिषद (आई.सी.एस.एस. आर)' द्वारा शोध के लिए अनुदान प्राप्त हुआ। (18 माह के लिए)।
- गोविन्द, आर., राजनीति, समाजशास्त्र विभाग एवं अंतरराष्ट्रीय अध्ययन (पोल्सिस,पी. ओ.एल.एस.आई.एस), बर्मिंघम विश्वविद्यालय, यू.के में विजिटिंग स्कॉलर (एयूडी से यात्रा अनुदान के साथ), मई 2012।
- गोविन्द, आर.,'एशिया–पैसिफिक जर्नल (मई 2012) के अंतरराष्ट्रीय संबंध अमेरिकी एथनोलॉजिस्ट जर्नल (अप्रैल 2012); राजनीतिक विज्ञान और अंतरराष्ट्रीय संबंधों की अफ्रीकी पत्रिका (मई 2012)' में प्रकाशित लेखों के लिए आमंत्रित समीक्षक'
- नगालिया, एस.,द्वारा 'महिला और लिंग– अध्ययन' में एम.फिल/पीएचडी कार्यक्रम की शुरुआत। इसका आयोजन 27 अगस्त 2012 को किया गया।
- नगालिया, एस.,भारत में महिला अध्ययन केंद्र के लिए एमए में महिला अध्ययन पाठ्यक्रम को विकसित करने के लिए पाठ्यक्रम विकास समिति की सदस्य, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, (2011 से शरुआत)।

- नगालिया, एस., द्वारा 'यौन उत्पीड़न की रोकथाम और निवारण के लिए एयूडी की नीति की तैयारियों का प्रस्तुतिकरण' (2011 के बाद से).
- नगालिया, एस.,महिलाओं के विकास अध्ययन के लिए रचना जौहरी के साथ मिलकर महिला और लिंग अध्ययन में एम. फिल / पी.एच.डी. कार्यक्रम को शुरू करने के लिए समन्वय सहयोग, 2012–2013।
- सेन, आर., महिला अध्ययन के भारतीय संघ के संयुक्त सचिव के रूप में कार्यकाल की समाप्ति, 2012।
- नगालिया, एस., महिला अध्ययन में एम.ए और एम.फिल कार्यक्रमों की समीक्षा करने और पाठ्यक्रम में संशोधन के लिए समिति, सदस्य, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, 2003 के बाद।
- नगालिया, एस., लिंग विशेषज्ञ डॉ.उमा चक्रवर्ती, प्रोफेसर एलिना सेन, डॉ.संध्या आर्य, डॉ.साधना सक्सेना एवं अन्य महिला अध्ययन के छात्रों के लिए अंग्रेजी से हिन्दी का चयन और व्यापक सामग्री का अनुवाद''के नेतृत्व के प्रयास में शामिल।
- ओबेरॉय, एच.,'एक भावनात्मक स्थान के रूप में कक्षाः दो सत्र आयोजन' सहायक प्रोफेसर के लिए पुनश्चर्या पाठ्यक्रम हेतु संसाधन व्यक्ति, सी.आई.ई, दिल्ली विश्वविद्यालय, 15 मार्च 2013।
- सेन, आर.,ने संकाय प्रतिनिधिमंडल के सदस्य के रूप में डिजाइन एवं विकास अभ्यास में एम. फिल की शुरुआत करने के लिए 'एयूडी –प्रदान' सहयोग के द्वारा केरल एवं मध्य प्रदेश का दौरा किया।

ललित अध्ययन शिक्षालय (स्कूल ऑफ लिबरल स्टडीज,एस.एल.एस)

- मोयनक, बिस्वास, एसोसिएट प्रोफेसर, यादवपुर विश्वविद्यालय, की फिल्म 'स्प्रिंग इन द कॉलोनी' पर एक चर्चा लिटरेरी सोसायटी, एस.एल.एस द्वारा 22 मार्च, 2012 को आयोजित की गयी।
- डॉ. इंदु अग्निहोत्री, निर्देशक, सेंटर फॉर वूमेन्स डेवलपमेंट स्टडीज (सीडब्ल्यूडीएस) एवं डॉ. इन्द्राणी मजूमदार, एसोसिएट प्रोफेसर, सीडब्ल्यूडीएस द्वारा 'भारत में लिंग प्रवासः एक अनुसंधान परियोजना की खोज विषय पर चर्चा की गयी। इसका आयोजन अर्थशास्त्र संकाय द्वारा 8 अगस्त, 2012 को किया गया।
- मिस्टर ल्यूजी रुस्सी को अंतरराष्ट्रीय राजनीति विभाग एवं खाद्य नीति का केंद्र,सिटी विश्वविद्यालय लंदन, से 'हंगरी कैपिटलः द फाइनेंशियलाइज़ेशन ऑफ द फूड इकॉनमी' विषय पर वार्ता के लिए अर्थशास्त्र संकाय द्वारा आमंत्रित किया गया। यह आयोजन 3 सितम्बर 2012 को किया गया।

- डॉ. सात्यिकी रॉय, को इंस्टिट्यूट फॉर स्टडीज इन इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट, नई दिल्ली से 'इनफॉर्मेलिटी एंड कैपिटल्स कंट्रोल अंडर नियोलिब्रलिज्म' विषय पर वार्ता के लिए अर्थशास्त्र संकाय द्वारा आमंत्रित किया गया। यह आयोजन 26 सितम्बर 2012 को किया गया।
- प्रोफेसर, पूनम त्रिवेदी, को आईपी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय से 'भारतीय सिनेमा में शेक्सपियर का अनुरूपण' पर विशेष आख्यान देने के लिए अंग्रेजी संकाय द्वारा 28 सितम्बर 2012 को आमंत्रित किया गया।
- मिस.सोनू मित्रा, को सेंटर फॉर बजट एंड गवर्नेंस एकाउंटेबिलिटी (सी.बी.जी.ए),नई दिल्ली से ''रिजर्व सेना, यौन विभाजन के कारण भारत में महिलाओं के श्रम एवं काम में गिरावटः इस कड़ी की खोज' विषय पर वार्ता के लिए अर्थशास्त्र संकाय द्वारा आमंत्रित किया गया। यह आयोजन 10 अक्टूबर 2012 को किया गया।
- प्रोफेसर शशांक, परेरा को साउथ एशिया यूनिवर्सिटी, नई दिल्ली से 'दक्षिण एशिया के समाजशास्त्र की ओर' पर विशेष व्याख्यान देने के लिए बुलाया गया. इस कार्यक्रम का आयोजन समाजशास्त्र विभाग द्वारा 12 अक्टूबर 2012 को किया गया।
- प्रोफेसर अंजन मुखर्जी, को कंट्री डायरेक्टर,आई.जी.सी इंडिया–बिहार, से 'सरकार की भूमिका' विषय पर वार्ता के लिए अर्थशास्त्र संकाय द्वारा आमंत्रित किया गया। यह आयोजन 14 नवंबर 2013 को किया गया।
- इतिहास संकाय के द्वारा इतिहास के छात्रों के लिए एक चर्चा का आयोजन किया गया, जिसमें डॉ.अपर्णा बालचंद्रन को इतिहास विभाग,दिल्ली विश्वविद्यालय से 3 अक्टूबर 2013 में बुलाया गया।
- अर्थशास्त्र संकाय द्वारा अर्थशास्त्र के छात्रों के लिए व्याख्यानों की एक श्रृखंला का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के लिए डॉ.सात्यिकी रॉय, इंस्टिट्यूट फॉर स्टडीज इन इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट, दिल्ली, ने 'द थीम्स ऑफ पोलिटिकल इकोनॉमी एंड मार्क्सिस्ट पोलिटिकल इकोनॉमी 'पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। यह कार्यक्रम 1 अक्टूबर से 10 नवंबर 2012 तक चला।
- प्रोफेसर सुनील कुमार, को इतिहास विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय से 'डीप स्ट्रक्चर्सः द रिवराइन प्लैन एंड द कैपिटल्स ऑफ द देल्ही सल्तनत' विषय पर चर्चा के लिए इतिहास संकाय द्वारा 19 अक्टूबर, 2012 को आमंत्रित किया गया।
- डॉ,शर्ली वाज़दा, केंट विश्वविद्यालय, ओहायो, ''अमेरिकी अध्ययन और अमेरिकन सपने' पर अपना व्याख्यान एस.एल.एस के संकाय और विद्यार्थियों के लिए प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम का आयोजन 24 अक्टूबर, 2012 को किया गया था .

- डॉ. समीरा शेख, ''को वेंडरबिल्ट विश्वविद्यालय, नैशविल,यू.एस.ए से इतिहास संकाय द्वारा 'मुगल वैष्णविज़म' पर व्याख्यान देने के लिए 11 जनवरी 2013 को आमंत्रित किया गया।
- डॉ. आर्यमा, को इतिहास विभाग, खालसा कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय से 'लिबरलिस्म एंड द मेकिंग ऑफ मॉडर्न वर्ल्ड' पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत करने के लिए इतिहास संकाय द्वारा आमंत्रित किया गया। यह कार्यक्रम विशेषकर एमए इतिहास के छात्रों के लिए 29 जनवरी 2013 को आयोजित किया गया।
- डॉ. प्रभु महापात्रा को इतिहास विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय से 'स्लेवरी एंड द ओरिजिन ऑफ रेसिस्म' पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत करने के लिए इतिहास संकाय द्वारा 6 फरवरी, 2013 को आमंत्रित किया गया।
- डॉ. आशुतोष कुमार को दौलत राम कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय से 'सत्तू टोबैको एंड विर्मिलियन : ए क्लोज लुक एट प्रोविज़निंग द गिरमिटीयाज़' पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत करने के लिए इतिहास संकाय द्वारा 20 फरवरी, 2013 को आमंत्रित किया गया।
- डॉ. अलका सरावगी, को (प्रख्यात लेखिका एवं साहित्य अकादमी द्वारा सम्मानित), लिटरेरी सोसायटी, एस.एल.एस द्वारा पुस्तक चर्चा एवं पठन सत्र के लिए 26 फरवरी, 2013 को आमंत्रित किया गया।
- डॉ. सुज़ेन विश्वनाथन, को सेंटर फॉर द स्टडी ऑफ सोशल सिस्टम्स (सीएसएसएस), जेनयू से 'सोशियोलॉजी ऑफ एग्रीकल्चर' विषय पर चर्चा के लिए समाजशास्त्र संकाय द्वारा 1 मार्च 2013 को आमंत्रित किया गया।
- प्रोफेसर अभिजीत सेन, सदस्य, योजना विभाग, भारत सरकार एवं प्रोफेसर एन.आर. भानुमूर्ती, नेशनल इंस्टिट्यूट फॉर प्लानिंग एंड फिनान्शियल पालिसी (एन.आई.पी.एफ.पी) ने 'यूनियन बजट 2013–2014' पर पैनल चर्चा में अपने विचारों को प्रकट किया। अर्थशास्त्र संकाय द्वारा यह पैनल चर्चा 6 मार्च 2013 को आयोजित की गयी।
- डॉ. थेइरी डिकोस्टाने, को स्ट्रासबर्ग विश्वविद्यालय, फ्रांस से 'पाकिस्तान इज़ ए पोएटिक नेम 'इन्ट्रा–मुस्लिम डिबेट्स ऑन द फ्यूचर ऑफ एन इंडिपेंडेंट इंडिया' विषय पर चर्चा के लिए इतिहास संकाय द्वारा 6 मार्च 2013 को आमंत्रित किया गया। यह चर्चा विशेषतः इतिहास विभाग के शिक्षकों एवं छात्रों के लिए आयोजित की गयी थी।
- डॉ. अरविन्द कुमार, को जामिया मिलिया इस्लामिया से 'इंटेरोगेटिंग रेस, कास्ट एंड क्लासः सम इनसाइट्स फ्रॉम द दलित पैंथर एंड द ब्लैक पैंथर मूवमेंट्स पर व्याख्यान देने के लिए इतिहास संकाय द्वारा 7 मार्च 2013 को आमंत्रित किया गया।

- डॉ. सप्तऋषि मंडल, लीगल रिसर्चर, पार्टनर फॉर लॉ इन डेवलपमेंट 'जाति और कानून 'पर व्याख्यान देने के लिए समाजशास्त्र संकाय द्वारा 19 मार्च 2013 को आमंत्रित किया गया।
- डॉ. रोहित नेगी, को अर्थशास्त्र संकाय, साउथ एशिया विश्वविद्यालय, 'मुद्रास्फीति को निशाना बनाने में क्या गलत हो रहा है ? ' विषय पर प्रस्तुति के लिए अर्थशास्त्र संकाय द्वारा 20 मार्च 2013 को आमंत्रित किया गया।
- लिटरेरी सोसायटी, एस.एल.एस ने पुस्तक चर्चा एवं पठन का एक सत्र 20 मार्च 2013 को आयोजित किया। इस सत्र की कमान मुख्य अथिति श्रीमान अमनदीप संधु ने संभाली जो अंग्रेजी के एक उभरते हुए लेखक हैं।

एस.एल.एसः—

संकाय और अन्य गतिविधियों के द्वारा प्राप्त सम्मानः—

- आलोक भल्ला को 'इंस्टिट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडी', नान्ट, फ्रांस में अध्येतावृत्ति से सम्मानित किया गया।
- गीता वेंकटरमन ''शिक्षा क्षेत्र में प्रोद्यौगिकी दूरदर्शिता —2035 के लिए सलाहकार समिति की सदस्य रह चुकी हैं। (टी.आई.एफ.ए.सी, भारत सरकार) (2012—2013)।
- गीता वेंकटरमन लिट्ल मैथेमेटिकल ट्रैजर्स, रामानुजन मैथेमेटिकल सोसायटी' के संपादकीय —मंडल की सदस्य रह चुकी हैं। (2012—2013)।
- गीता वेंकटरमन उत्तर क्षेत्र की मंडलीय समिति की सदस्य रह चुकी हैं। इनकी परियोजना इंडियन वूमेन एंड मैथेमैटिक्स (भारतीय महिलायें और गणित) को नेशनल बोर्ड ऑफ हायर मैथेमैटिक्स, डीएई, भारत सरकार द्वारा सम्मानित किया गया। (2013—2018)
- गीता वेंकटरमन वर्ष 2012 में, 'इंडियन नेशनल प्रेजेंटेशन टीम फॉर इंटरनेशनल कांग्रेस ऑफ मैथेमेटिकल एजुकेशन' की सदस्य रह चुकी हैं।
- बिधान चन्द्र दास, अमितेश मुखोपाध्याय एवं मीनकेतन बेहेरा द्वारा एक शोध सर्वेक्षण किया गया तथा दिल्ली की बैरवा और कपाड़िया समुदायों की एक नृवंशविज्ञान (जातीय आधार पर) रूपरेखा तैयार की गयी। यह शोध—परियोजना दिल्ली सरकार द्वारा प्रायोजित की गयी थी। एयूडी ने इस नृवंशविज्ञान—सर्वेक्षण को शुरू कराने के लिए सरकार से अनुरोध किया था। यह सर्वेक्षण बिधान चन्द्र दास द्वारा समन्वित किया गया था। शोध—मण्डली ने इस सर्वेक्षण में एस.एल.एस के कुछ स्नातकोत्तर छात्रों को भी शामिल किया था।

स्नातक अध्ययन शिक्षालय (एस.यू.एस)

- लाइफ आफ्टर एग्जाम इम्प्रूविंग इंग्लिश लैंग्वेज प्रोफिशिएंसी एंड हायर–आर्डर थिंकिंग स्किल्स विद मोर इफेक्टिव राइटिंग टास्क्स, अप्रैल 18,2012. अमेरिकन सेंटर, नई दिल्ली।
- लेखन में सहायता हेतु रणनीतियाँ, 8 सितम्बर 2012 . अमेरिकन सेंटर, नई दिल्ली।
- रचनात्मक लेखन कौशल अध्यापन, 13 अक्टूबर 2012. अमेरिकन सेंटर , नई दिल्ली।
- एक विचार–गोष्ठी 'अंग्रेजी भाषा के शिक्षकों और प्रशिक्षकों के लिए सतत व्यावसायिक विकास। 20 नवंबर 2012. ब्रिटिश कॉउंसिल, नई दिल्ली।
- टेसल2013 अंग्रेजी भाषा पर सम्मेलन एवं महाप्रदर्शनी। मार्च 20–23, 2013, डैलस, टॅक्सस, यू.एस.ए.

सम्मान (एस.यू.एस)

- अंतरराष्ट्रीय आगंतुक नेतृत्व कार्यक्रम में प्रतिभागी (आईवीएलपी,इंटरनेशनल विजिटर लीडरशिप प्रोग्राम), द यू.एस. डिपार्टमेंट ऑफ स्टेट्स प्रोफेशनल एक्सचेंज प्रोग्राम (18 मार्च –5 अप्रैल 2013)।

एस.यू.एस द्वारा समर्थित कार्यक्रम,कार्यशलाएँ,वार्ताएँ एवं क्षेत्र– यात्राएँ

- धर, आई.,मौलिक अधिकार और भारतीय संविधान पर कार्यशाला का आयोजन 18 अक्टूबर 2012 को एयूडी में किया गया। इस कार्यशाला का आयोजन प्रथम सत्र के उन छात्रों के लिए किया गया था जिन्होनें फाउंडेशन कोर्स के वैकल्पिक पाठ्यक्रम, 'भारतीय संविधान और लोकतंत्र, (आईसीडी) में प्रवेश लिया था।
- मैथमेटिक्स सोसायटी टॉक्स एयूडी एवं एस.यू.एस ने 'मैथमेटिक्स सोसायटी का उद्घाटन एक वार्ता के रूप में किया। यह वार्ता डॉ. शैलेश शिरलि द्वारा 'बखशाली स्क्वायर रूट अप्रोक्सिमेशन' विषय पर 26 अक्टूबर 2012 को आयोजित की गयी। इस वार्ता में सह्याद्री स्कूल के निदेशक (के.एफ.आई.), पुणे, एवं कम्युनिटी मैथमेटिक्स सेंटर के अध्यक्ष, ऋषि वैली स्कूल (केएफआई), एपी. भी शामिल थे। शीतकालीन सत्र में सोसायटी ने एक और वार्ता का आयोजन किया। कृष्णा बालसुन्दरम ऐत्रेय, कॉलेज ऑफ लिबरल आर्ट्स एंड साइंस, लोवा स्टेट विश्वविद्यालय, ऐम्स, लोवा के प्रतिष्ठित प्रोफेसर को इस वार्ता के लिए आमंत्रित किया गया। इन्होनें मॉडल फॉर इंडियन वेजिटेबल मार्केट बार्गेनिंग'' पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। मैथेमैटिक्स सोसायटी

के पास अपने संकाय सलाहकार के रूप में डॉ. रमणीक खसा (सहायक प्राध्यापक, गणित संकाय, एसएलएस) हैं।

- चंद्रा, वाई.,बिल्ट लैंड्सस्केप्स ऑफ कश्मीर ' (03/09/2012). डॉ.यशस्विनी चन्द्रा ने छात्रों के लिए ''भारतीय कला और वास्तु–कला का परिचय'' विषय पर अपने मत को प्रस्तुत किया। यशस्विनी चंद्रा ने डिपार्टमेंट ऑफ द हिस्ट्री ऑफ आर्ट, स्कूल ऑफ ओरिएण्टल एंड अफ्रीकन स्टडीज, लंदन विश्वविद्यालय से अपनी पीएचडी की और वहीं पर टीचिंग फैलो के रूप में कार्य भी किया है।
- आधार पाठ्यक्रम की समीक्षा के लिए कार्यशालाः– शीतकालीन सत्र, 2012 –2013 के शुरू होने के साथ, पहले सत्र में मुख्य रूप से सिखाये गए आधार पाठ्यक्रम के भी तीन वर्ष पूरे हो गए। एयूडी की अकादमिक परिषद ने विश्वविद्यालय में स्नातक शिक्षा से सम्बंधित सभी पहलुओं पर गौर करने एवं आधार पाठ्यक्रम के ब्यौरे के लिए प्रोफेसर डेनिस लेइटन, डॉ.सुरजीत मजूमदार एवं डीन, एस.यू.एस, तीन सदस्यों की समिति का गठन किया। आधार पाठ्यक्रमों की समीक्षा एवं विस्तार में मदद के लिए फरवरी 2013 में एक कार्यशालाका आयोजन किया गया।
- एस.यू.एस के छात्रों के लिए देहरादून की क्षेत्र–यात्रा – डॉ.किरणमयी भूषि द्वारा एस. यू.एस के छात्रों के लिए' (देहरादून में वंदना शिवा के बीजा विद्यापीठ) डेढ़ दिन की क्षेत्र यात्रा का आयोजन किया गया। इस यात्रा को आयोजित करने का इरादा यह था कि जिन बी.ए के छात्रों ने SC02– फूड एंड सोसायटी का चुनाव किया है। उन छात्रों का परिचय कृषि और जैविक खेती में शामिल विभिन्न प्रक्रियाओं से कराया जाए ताकि वह इससे सम्बंधित अपने खुद के अनुभव प्राप्त कर सकें और उन अनुभवों को दूसरे लोगों के साथ भी साझा करें।

एयूडी में अनुसंधान परियोजनाएं :–

विकास अध्ययन शिक्षालय (एस.डी.एस)

विभिन्न अनुसंधान परियोजनाओं को एस.डी.एस में शुरू कर दिया गया है, ये परियोजनाएं विद्यालय और शिक्षकों की विशिष्ट विशेषज्ञता के समग्र विषयगत क्षेत्रों के साथ जुड़ी हुई हैं। इन परियोजनाओं का कार्यान्वयन विभिन्न चरणों में है। यह पूर्वानुमानित है कि ऐसी अनुसन्धान परियोजाएं शिक्षालय की सभी अनुसन्धान गतिविधियों को प्रोत्साहन प्रदान करेंगी।

परियोजना का शीर्षक	कुल परिव्यय	फंडिंग एजेंसी और कार्यकाल	परियोजना स्थिति	प्रमुख अन्वेषक
प्रवासी पहचान और औद्योगिक कामः दिल्ली में दो औद्योगिक क्षेत्रों का अध्ययन	रु. 5.6 लाख	आईसीएस एस आर, 18 महीने	परिचालन	सुमंगला दामोदरन
असम मेघालय में खासी पोशाक की सांस्कृतिक सृजन की खोज		एयूडी	संपन्न	आइवी धर

मानव पारिस्थितिकी अध्ययन शिक्षालय (एस.एच.ई)

विभिन्न अनुसंधान परियोजनाएं एस.एच.ई के अंतर्गत बनायीं गयी हैं, ये परियोजनाएं शिक्षालय और शिक्षकों की विशिष्ट विशेषज्ञता के समग्र विषयगत क्षेत्रों के साथ जुड़ी हुई हैं। इन परियोजनाओं को शिक्षकों के बीच सक्रिय सहयोग के माध्यम से विकसित किया गया है– इन परियोजनाओं में शिक्षालय से बाहर की अभ्यास की दुनिया के लोगों का भी सहयोग रहा इन परियोजनाओं का कार्यान्वयन विभिन्न चरणों में है।

प्रकाशनः

परियोजना का शीर्षक	कुल परिव्यय	फंडिंग एजेंसी और कार्यकाल	परियोजना स्थिति	प्रमुख अन्वेषक
बोलानी के पाल लौह अयस्क खदान क्षेत्र में पत्तनमूलक परिदृश्य का पारिस्थितिकीय पुर्नःस्थापन सतत् विकास, जैव विविधता संरक्षण और CO2 शमन रणनीति के लिए एक प्रतिमान	75.0	भारत इस्पात प्राधिकरण लिमिटेड, 3 साल	परिचालन	डॉ. सुरेश बाबू
अंडमान और निकोबार द्वीप के उष्णकटिबंधीय वर्षावन से मलेरिया रोधी दवाओं को बढ़ावा	27.6	सी.एस.आई.आर (2 साल)	स्वीकृत	डॉ. सुरेश बाबू

मानचित्रण सामाजिक पारिस्थितिक सुभेद्यताः राज्य, समाज, बाजार	21.8	आई.सी.एस. एस.आर, 3 साल	स्वीकृति प्रदान कर दी गयी है	डॉ. प्रवीण सिंह (टीम लीडर), डॉ. अस्मिता काबरा, ग़ज़ाला शाहबुद्दीन, रोहित नेगी (टीम के सदस्य)
संरक्षित विस्थापित परिवारों के बीच उत्तर–विस्थापन आजीविका की बहाली	1.97	एयूडी	परिचालन	डॉ. अस्मिता काबरा
केंद्रीय भारतीय शुष्क पारिस्थितिकी तंत्र में पत्तन मूलक चारागाह भूमि की बहाली	4.98	रफ्फोर्ड फाउंडेशन, यू. के.	संपन्न	डॉ. अस्मिता काबरा, डॉ. सुरेश बाबू
मणिपुर के मेइती वस्त्रखानों में उसके दृश्य नमूने के कुछ चुनिंदा मूल–भाव और शब्दावलियों के बदलते संदर्भ	यात्रा व्यय	एयूडी	संपन्न	डॉ. हेमलता देवी ओइनम

मणिपुर में पवित्र वृक्षों और मंदिरों की संस्कृति और पारिस्थितिकीय	4.0	आई सी एस एस आर	परिचालन	डॉ. हेमलता देवी ओइनम

व्यापार लोक नीति और सामाजिक उद्यमिता अध्ययन शिक्षालय (एस.बी.पी.पी.एस.ई)

पत्रिकाओं में लेख / पत्रिकाएं

- गुप्ता ए.,एस अग्रवाल, वाई सिंह एवं पी.सी. झा (2012): 'इष्टतम अवधि और प्रचार अभियान का नियंत्रण टिकाऊ प्रौद्योगिकी उत्पाद के लिए' आईईई अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन पर औद्योगिक इंजीनियरिंग एवं इंजीनियरिंग प्रबंधन की कार्यवाही, हांग कांग, पेपर आई डी –आई ई ई एम 12–पी–0669, दिसंबर 10–13 ।
- गुप्ता ए.,पी. मानिक एवं पी.सी.झा (2012): 'बहु–अवधि संवर्धन रणनीतियों के लिए खरीद दोहराने में शामिल एक क्षितिज योजना जो खंडित बाजार में प्रचार–प्रयास आवंटन करने हेतु विकास के दृष्टिकोण में अंतर को दर्शा सके', बुद्धिमान और सॉफ्ट कम्प्यूटिंग श्रृंखला में प्रगति, दीप के.,नागर ए.,पंत एम. एवं बंसल जे.सी., वॉल्यूम. ए.आई.एस.सी131, स्प्रिंगर इंडिया, डी.ओ.आई:10. 1007 / 978–81–322–0491–6,979–991 ।
- कैकेर ,एन., आर. गैहा (2013): 'भारत में अल्पपोषण और कैलोरी थ्रेसहोल्ड, 1993–2004', जर्नल ऑफ पॉलिसी मॉडलिंग, वॉल्यूम. 35, अंक 2, पृष्ठ: 271–288.
- कैकेर, एन., जी लमाई ,आर. गैहा एवं ए अली (2013) ''एशिया और प्रशांत क्षेत्र में विप्रेषण, विकास और गरीबी', कृषि विकास के लिए अंतरराष्ट्रीय कोष: रोम , ऑकेज़नल पेपर न.15
- कैकेर, एन., आर. गैहा, के. लमाई, एवं जी.थापा (2012)'' भारत के पोषक तत्वों के लिए मांग' एनएसएस पर आधारित एक विश्लेषण 50वें, 61वें और 66वें दौर के सन्दर्भ में, एएसएआरसी वर्किंग पेपर 08 ।
- कैकेर, एन., आर. गैहा, के. लमाई, एवं जी. थापा (2012) भारत में कृषि पोषण मार्ग, ए. एस.ए.आर.सी वर्किंग पेपर 06 ।

- कैकेर, एन.,आर. गैहा, के. लमाई, वी.एस. कुलकर्णी एवं जी.थापा (2013) क्या भारत में आहार संक्रमण की गति धीमी है: राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण के आधार पर एक विश्लेषण 50वें ,60वें और 61वें दौर के सन्दर्भ में', कृषि विकास के लिए अंतरराष्ट्रीय कोष' रोम, ऑकेज़नल पेपर न.16।

किताबों में प्रकाशित अध्याय (संपादित कार्यों में लेख)

- कँवल ए.,'भारत के सामाजिक उद्यमी: सामाजिक परिवर्तन के अग्रदूत 'मैनेजिंग इन्क्लुसिव ग्रोथ: द बॉटम– अप एप्रोच फॉर हार्मोनिक डेवलपमेंट, में प्रकाशित, पेज: 328–336, प्रगुण पब्लिकेशन, दरिया गंज, नई दिल्ली।
- वैलेंटिना,के. 'ह्यूमन ट्रैफिकिंग इन इंडिया: ए केस स्टडी ऑफ मुन्नी एंड बेबी फलक', जतिंदर कौर द्वारा सम्पादित– ह्यूमन राइट्स–इशूज़ एंड पर्सपेक्टिव्स, आईएसबीएन नं. 978–93–81832–96–7,जी.जी.एस.सी.डब्ल्यू पब्लिकेशन, चंडीगढ़।

सम्मेलन में प्रस्तुत आलेख :

- गुप्ता ए. द्वारा (2012): 'केस राइटिंग, टीचिंग एंड रिसर्च' आई.आई.एम कलकत्ता में ,जून 14–15 में प्रस्तुत किया गया।
- कँवल ए., आर.ग्रोवर एवं एस.साहू द्वारा: 'एन इम्पीरिकल एनालिसिस ऑफ द वोलेटाइल स्टॉक बिहेवियर एट द इवेंट ऑफ डिवाइडेण्ड अन्नाउनसमेंट : एविडेंस फ्रॉम इंडियन कैपिटल मार्किट नेशनल स्टॉक एक्सचेंज ऑफ इंडिया', वर्ल्ड फाइनेंस एंड बैंकिंग सिम्पोसियम, शंघाई, चीन, दिसम्बर में प्रस्तुत किया गया।
- कँवल ए., आर.ग्रोवर एवं एस.साहू द्वारा (2012): 'शेयर प्राइस वोलैटिलिटी अराउंड डिवाइडेण्ड डिक्लेरेशन एन इम्पीरिकल स्टडी ऑफ द इंडियन कैपिटल मार्किट इंडिया फाइनेंस कॉन्फ्रेन्स, आई.आई.एम कलकत्ता, दिसंबर 19–21 में प्रस्तुत किया गया।
- कँवल ए. द्वारा (2013) : 'सोशल एंटरप्रेनियर्स ऑफ इंडिया: द हर्बिंगर्स ऑफ सोशल चेंज' आईसी–2013–इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन मैनेजिंग इन्क्लुसिव ग्रोथ द बॉटम–अप एप्रोच फॉर हार्मोनिक डेवलपमेंट एट द इंडियन बिज़नेस अकेडमी, ग्रेटर नोएडा, मार्च में प्रस्तुत किया गया।
- वैलेंटिना के.एवं एन.के. उपाध्याय द्वारा (2013): 'ड्रग एंड सब्सटैंस एब्यूज इन पंजाब: एन एक्सप्लोरेट्री सोशियोलॉजिकल स्टडी'' यूजीसी द्वारा आयोजित नेशनल सेमीनार

– इकनॉमिक डेवलपमेंट इन एन.डब्ल्यू रीजन ऑफ इंडिया चैलेंजेज़ एंड पॉसिबिलिटीज में प्रस्तुत किया गया है, जी.जी.डी.एस.डी, कॉलेज, होशियारपुर, पंजाब, (फरवरी 9) द्वारा आयोजित।

- वैलेंटिना, के. (2013) द्वाराः 'ऑन ह्यूमन राइट्स' 'ह्यूमन राइट्स वॉयलेशन्स' संगोष्ठी में प्रस्तुत , जी.जी.एस.सी.डब्ल्यू कॉलेज ,चंडीगढ़ द्वारा आयोजित, (फरवरी 27–28.)
- वैलेंटिना,के (2012) द्वारा : 'अंडरस्टैंडिंग द कंस्ट्रेंट्स फेस्ड बाय वूमेन इन डेवलपमेंटल प्रोसेस', वूमेन इन डेवलपमेंटल प्रोसेस संगोष्ठी में प्रस्तुत किया गया, रोल ऑफ लोकल सेल्फ गवर्नमेंटः स्ट्रेटेजीज़ एंड पॉलिसीस इन द चेंजिंग सिनेरियो, सेंट थेरेसा कॉलेज, एर्नाकुलम (अगस्त 6–8) द्वारा आयोजित।
- वैलेंटिना, के एवं अनिल कँवल (2012) द्वारा सीएसआर मॉडल्स फ्यू केस स्टडीज फ्रॉम पब्लिक एंड प्राइवेट सेक्टर कम्पनीज ऑफ इंडिया' इंटरनेशनल सी.एस.आर कांफ्रेंस आईपीई, हैदराबाद (दिसंबर 6–7)में प्रस्तुत किया गया।

संस्कृति और रचनात्मक अभिव्यक्ति अध्ययन शिक्षालय(एस.सी.सी.ई)

आलेख–

- वाकणकर, एम.(2011): ''द फंक्शन ऑफ रजवाड़ेज़ फैंटास्टिक इन रियलिस्ट नोवेल्सः री–इमेजिनिंग रियलिस्म इन मराठी यूटोपिएनिस्म'' इन साउथ एशिया रिव्यू 32:1,पीट्सबर्ग, 93–120।
- वाकणकर, एम.(2011): 'द नोवेल' (ट्रांसलेशन ऑफ हिस्टोरियन रजवाड़ेज़ 1903 एस्से ,'कादंबरी' फ्रॉम द मराठी) इन साउथ एशिया रिव्यू 32:1,पीट्सबर्ग, 285–310
- सन्तोष, एस(2012): 'व्हाट वॉज मॉर्डनिज़्म (इन इंडियन आर्ट)?", इन सोशल साइंटिस्ट, वॉल्यूम 40, नं. 5–6,पेज 59–76।
- सन्तोष, एस (2012): 'स्पेक्टरेस ऑफ द 'रेडिकल्स', ऑर वेयर हैव आल द रेडिकल्स गॉन?' शिवाजी के. पणिक्कर एंड दीपथा अचर द्वारा सम्पादित अर्टिकुलेटिंग रेसिस्टेन्स आर्ट एंड एक्टिविज्म, (नई दिल्ली – तुलिका बुक्स)
- जैन, एस.,सी भाषा (2013) ए सीरीज ऑफ 2 आर्टिकल्स इन द चिल्ड्रेन्स मैगज़ीन, चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित, भोपाल।

किताबें :

- पणिक्कर,के., शिवाजी एवं डी.अचर (2012): अर्टिकुलेटिंग रेसिस्टेन्सः आर्ट एंड एक्टिविज्म, (नई दिल्ली – तूलिका पब्लिकेशन) पेज नं. 322 और 124 पर चित्रण।

प्रस्तुत आलेखः

- पणिक्कर, के.,शिवाजी द्वारा (2012): कंटीन्यूअस प्रैक्टिसः एक्सपेरिमेंट्स एंड इन्नोवेशंस इन आर्ट एजुकेशनः विज़निंग द स्कूल ऑफ कल्चर एंड क्रिएटिव एक्सप्रेशंस, अम्बेडकर यूनिवर्सिटी, देल्ही 'पर आलेख, इंटरनेशनल आर्ट्स प्रेसिडेंट्स एसोसिएशन एंड सेंट्रल अकेडमी ऑफ फाइन आर्ट्स (सी.ए.एफ.ए,बीजिंग), चाइना अकेडमी, हांग्झू, चाइना द्वारा आयोजित कांफ्रेंस (नवंबर 26–27) में प्रस्तुत किया गया।

वार्ताएं (विस्तृत प्रस्तुतियां आमंत्रित):

- वाकणकर, एम., नोट्स टूवर्ड ए क्रिटिक व्यू ऑफ हिस्टोरिसिटी (हाइडेगर, हेगेल, प्लोटीनस), ये प्रस्तुति प्रस्थाना चक्रवर्ती द्वारा ह्यूमेनिटीस इन फरमेंटः स्ट्रॅटेजिंग फॉर आवर टाइम्स, कांफ्रेंस में की गयी। ये कांफ्रेंस मार्ग ह्यूमेनिटीस एंड एनएमएमएल, डेल्ही (अगस्त 16 –18, 2012) द्वारा आयोजित की गयी।
- वाकणकर,एम.,ऑन रिलीजियस मेथड, ये प्रस्तुति मेटाफिजिक्स एंड पॉलिटिक्स की दूसरी कॉन्फ्रेन्स, वर्कला, केरला (जुलाई 27 –31 ,2012) में दी गयी।

डिज़ाइन अध्ययन शिक्षालय (एस.डी)

किताबों में प्रकाशित अध्यायः

- मोरेनस, एल. (2013): 'इन्कॉउंटेरिंग द हाई लाइन लैंडस्केप अर्बनिज्म एंड द मेकिंग एंड अनमेकिंग ऑफ न्यूयॉर्क सिटीज पार्क सिस्टम' ये अध्याय ई.टेलन एवं ए.डुनय द्वारा सम्पादित पुस्तक, टेरीटोरियल क्लेम्सः लैंडस्केप अर्बनिज्म एंड द सर्च फॉर इकोलॉजिकल प्लानिंग (ब्रिटिश कोलंबिया : न्यू सोसायटी पब्लिशर्स) में प्रकाशित।

प्रस्तुत किये गए आलेख या शोध आलेख –

- मोरेनस,एल.(2013)' बारापुलाः स्टेट प्रोडक्शन ऑफ ए नॉन–प्लेस इन डेल्ही इन मेडिटिंग मॉडर्निटी इन द 21 सेंचुरी' ये पेपर अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रस्तुत किया

गया। जो फरवरी 2013 में सृष्टि स्कूल ऑफ आर्ट ,डिज़ाइन एंड टेकनोलॉजी, बैंगलोर,इंडिया एंड स्कूल ऑफ आर्ट्स एंड कम्युनिकेशन, यूनिवर्सिटी माल्मो, स्वीडन, बैंगलोर द्वारा आयोजित किया गया था।

- मोरेनस, एल.(2013)' इंडिया' पोस्ट–कोलोनियल डेवलपमेंट मशीन– एसटीएस एंड प्लानिंग 'ये पेपर रीजनल सोशल साइंस कांग्रेस में प्रस्तुत किया गया। जो इंडियन कॉउंसिल फॉर सोशल साइंस रिसर्च एंड द इंस्टिट्यूट ऑफ डेवलपमेंट स्टडीज, जयपुर द्वारा अप्रैल में आयोजित किया गया था।

विकास अध्ययन शिक्षालय (एस.डी.एस)

पुस्तकें / आलेखः

- दामोदरन, एस, (2012): 'न्यू स्ट्रेटेजीज ऑफ इंडस्ट्रियल आर्गेनाईजेशनः आउटसोरसिंग एंड कंसोलिडेशन इन द मोबाइल टेक्नोलॉजी सेक्टर इन इंडिया, प्रस्तुत आलेख वर्किंग पेपर सीरीज, कैप्चरिंग द ग्रेन्स, इकनॉमिक एंड सोशल अपग्रेडिंग इन ग्लोबल प्रोडक्शन नेटवर्क्स, रिसर्च नेटवर्क ऑफ ड्यूक यूनिवर्सिटी एंड यूनिवर्सिटी ऑफ मेनचेस्टर में प्रकाशित हुआ।
- मान, पी., (2012): 'अर्बनाइज़ेशन, माइग्रेशन एंड एक्सक्लूशन इन इंडिया : इंडिया इन ट्रांजीशन' यूनिवर्सिटी ऑफ पेनसिलवेनिया।

प्रस्तुत किये गए पेपर :

- दामोदरन, एस, (2012): 'न्यू स्ट्रेटेजीज ऑफ इंडस्ट्रियल आर्गेनाईजेशनः इन द मोबाइल टेलीफोनी सेक्टर इन इंडिया 'ये पेपर इंटरनेशनल कांफ्रेंसः वैल्यू चेन्ज फॉर इंक्लूसिव डेवलपमेंट : लेसंस एंड पॉलिसीस फॉर साउथ एशिया 24–25 नवंबर 2012 ढाका, बांग्लादेश में प्रस्तुत किया गया। ये कांफ्रेंस केअर बांग्लादेश एवं इंस्टिट्यूट फॉर ह्यूमन डेवलपमेंट, इंडिया द्वारा आयोजित की गयी थी।
- मंडल एस.के (2012): 'सेविंग्स इन हेल्थ कॉस्ट ड्यू टू फ्यूल स्विचिंग टू सीएनजी इन इंडिया' ये पेपर कांफ्रेंस ऑफ हेल्थ–एनवायरनमेंट लिंकेज, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली (16–17 मार्च) में प्रस्तुत किया गया।
- मंडल एस.के (2012): 'एमिशन ट्रेडिंग एंड ट्रेड इन एम्बोडीड एमिशन्स' ये पेपर 'ट्रेड एंड सस्टेनेबल डेवलपमेंटः इशूज़ फॉर डेवलपिंग कन्ट्रीज' संगोष्ठी में प्रस्तुत किया गया। जो कि द एनर्जी रिसर्च इंस्टिट्यूट द्वारा (टी.ई.आर.आई), नई दिल्ली, 6 दिसंबर को आयोजित किया गया था।

- सेनगुप्ता, ए (2013): 'डेवलपिंग ग्राउंडेड थ्योरी यूसिंग एटलस टी.आई: एनालिसिस ऑफ क्वालिटेटिव डेटा ऑन एंटरप्रेनियर्स' ये पेपर नोइंग द सोशल वर्ल्ड चैलेंजेज एंड रेस्पोंसेज संगोष्ठी , एल.एल.ए.एस, शिमला में प्रस्तुत किया गया।

शैक्षिक अध्ययन शिक्षालय (एस.ई.एस)

किताबें / आलेख:

- बनर्जी, आर(2012) इन्वेन्शंस इनिशिएटिव इन मैथमेटिक्स एजुकेशन इन इंडिया आर. रामानुजन एवं के. सुब्रमण्यम द्वारा सम्पादित पुस्तक मैथमेटिक्स एजुकेशन इन इंडिया स्टैट्स एंड आउटलुक में प्रकाशित लेख (मुम्बई एच.बी.सी.एस.ई: टी.आई.एफ. आर)183–190।
- बनर्जी, आर (2012): 'मैथमेटिक्स एजुकेशन रिसर्च इन इंडिया: इशूज़ एंड चैलेंजेज़' आर.रामानुजन एवं के. सुब्रमण्यम द्वारा सम्पादित पुस्तक ' मैथमेटिक्स एजुकेशन इन इंडिया स्टैट्स एंड आउटलुक में प्रकाशित लेख (मुम्बई एचबीसीएसई टीआईएफआर) 191–205।
- बनर्जी, आर एवं के. सुब्रमण्यम (2012) इवोल्यूशन ऑफ ए टीचिंग एप्रोच फॉर बिगिनिंग अल्जेब्रा एजुकेशनल स्टडीज इन मैथमेटिक्स, 81(2): 351–367।

- जैन, एम (2012): 'औपनिवेशिक और स्वतंत्र भारत में पाठ्यपुस्तकें विवाद, सरोकार और सबक', शिक्षा विमर्श,14:4–5,183–191 ।

पत्रिका में प्रकाशित आलेख / पेपर

- बर्डपुर्कर, ए.एस (2013) ''द आर्टिफिशियल, द नेचुरल एंड द नेसेसरी इन अरिस्टोटल्स (अरस्तु) फिजिक्स।। जर्नल ऑफ इंडियन कॉउंसिल ऑफ फिलोसोफिकल रिसर्च,XXVIII (3): 33–42 ।
- शर्मा,जी (2012): 'डॉ0मिनेन्स, रेजिस्टेंस एंड स्टेटस एफ्फर्ट्स इन एजुकेशन', ह्यूमन राइट्स इनिशिएटिव जर्नल, 4(7): 24–40.

पुस्तक समीक्षाः–

- जैन, एम (2012): 'कक्षा में लोकतंत्र और परिवर्तन का आख्यान' पुस्तक समीक्षाः मेरी ग्रामीण शिक्षालय की डायरी, जूलिया वेबर गॉर्डोन, शिक्षा विमर्श, 14:3,30–34 ।
- जैन, एम (2012): वॉइसेस एंड साइलेंसस ऑफ/इन एजुकेशनल पालिसी एंड रिसर्च', समीक्षाः हू गोज़ टू स्कूल ? एक्सप्लोरिंग एक्सक्लूसन इन इंडियन एजुकेशन, आर. गोविन्द द्वारा सम्पादित, पुस्तक समीक्षा, 36:8, 20–21 ।

प्रस्तुत किये गए पेपर –

संगोष्ठी :

शर्मा, जी (2012): 'पॉलिटिक्स ऑफ इंस्टीट्यूशनल नॉलेज एंड एक्सक्लूशनः एन इन्क्वायरी इनटू एक्सपेरिएंसेस ऑफ चिल्ड्रेन फ्रॉम दलित कम्युनिटी 'दिल्ली विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग 'अनुसंधान संवर्धन' के अंतर्गत प्रस्तुत किया गया।

अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन :–

- बनर्जी, आर (2012): 'मैथमेटिक्स एजुकेशन रिसर्च इन इंडिया इशूज़ एंड चैलेंजेज' इंडियन नेशनल प्रेजेंटेशन के लिए बनायी गई प्रस्तुति, इंटरनेशनल कांग्रेस ऑन मैथमेटिकल एजुकेशन (आई.सी.एम.आई–12), सीओल, साउथ कोरिया।
- बनर्जी, आर (2012): 'टॉपिक स्टडी ग्रुप, टीएसजी–09: टीचिंग एंड लर्निंग ऑफ अलजेब्रा 'इंडियन नेशनल प्रेजेंटेशन के लिए बनायी गई प्रस्तुति, इंटरनेशनल कांग्रेस

ऑन मैथमेटिकल एजुकेशन (आई.सी.एम.आई–12), सीओल, साउथ कोरिया (जुलाई, 2012) में सह अध्यक्ष और प्रस्तुतकर्ता।

राष्ट्रीय सम्मेलन और कार्यशालाएँ (एस.ई.एस) –

- माओ ए.के. (2013): 'यूजीसी–एस.ए.पी' एक्सपेक्टेशन्स ऑफ फंक्शनरीज़ ऑफ एजुकेशन फ्रॉम यूनिवर्सिटी फॉर क्वालिटी एनहांसमेंट पर राष्ट्रीय संगोष्ठी सह कार्यशाला, शिक्षा विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, जनवरी 4–6.
- जैन.एम (2012): 'करैक्टर, सिटीजनशिप एंड सिविक्स इन लेट कोलोनियल इंडिया 'एनुअल इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑफ द कम्पेरेटिव एजुकेशन सोसायटी ऑफ इंडिया (सी.ई.एस.आई) में पेपर प्रस्तुत किया, जम्मू विश्वविद्यालय, अक्टूबर, 10–12.
- जैन.एम (2012) क्रिटिकल पेडागोजी एंड सोशल इनक्लुज़नः क्वेश्चन फ्रॉम रीसेंट कॉन्ट्रोवर्सी ओवर पॉलिटिक्ल साइंस टेक्स्टबुक्स' एट 8जी 3–वीक रिफ्रेशर कोर्स इन ह्यूमन राइट्स एंड सोशल इनक्लूज़न (इंटरडिसिप्लिनरी). अकेडमिक स्टाफ कॉलेज , जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली, सितम्बर 3।
- जैन.एम(2012) रेमगिनिंग कम्पेरेटिव एजुकेशन एंड इट्स चैलेंज, स्टडींग / रिसर्चिंग कोलोनियल एजुकेशन एंड करिकुलम इन ए कम्पेरेटिव फ्रेम , सीईएसआई तुलनात्मक अध्ययन पर पूर्व सम्मेलन कार्यशाला, जम्मू विश्वविद्यालय, अक्टूबर 9।
- जैन.एम (2013) 'स्टेट एंड नॉन – स्टेट एक्टर्स इन एजुकेशन इन इंडिया : ए हिस्टोरिकल ओवरव्यू 'गुणवत्ता और शिक्षा पर संगोष्ठी ,17 जनवरी, टीआईएसएस –हैदराबाद, इंडिया एंड किंग्स कॉलेज, लंदन।

मानव पारिस्थितिकी अध्ययन शिक्षालय(एस.एच.ई) :–

शिक्षकों की किताबें, आलेख या किसी भी तरह के अन्य प्रकाशन :–

- कुमार, आर. एवं जी शाहबुद्दीन (2012): 'असेसिंग द स्टेटस एंड डिस्ट्रीब्यूशन ऑफ द स्लेटी वुडपेकेर (मलरिपिकस पुलवेरुलेनटस टेमिनक, 1826) इन सब–हिमालयन उत्तराखंड, इंडिया' जर्नल ऑफ द बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी 109(2): 17–22.
- नेगी,आर (2013): ' यू कैननॉट मेक ए कैमल ड्रिंक वॉटर कैपिटल, जिओ –हिस्ट्री एंड कॉन्टेस्टेशन्स इन द जाम्बियन कॉपरबेल्ट', जियोफोरम, 45 सीः 240–247.
- यादव, जी.,एवं एस बाबू (2012) नेक्सकेड पर्टरबेशन एनालिसिस फॉर काम्प्लेक्स नेटवर्क्स पी.एल.ओ.एस वन, 7(8): ई41827. डीओआईः 10.1371 / जर्नल.पीओएनई. 0041827।

प्रस्तुत किये गए पेपर –

- काबरा, ए, द्वारा (2013): 'डेवलपमेंट इंड्यूस्ड डिस्प्लेसमेंट एंड रीसेटलमेंट' विषय पर, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी रिफ्यूजी स्टडीज सेंटर, में मार्च 22–23 को अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में पेपर प्रस्तुत किया गया।
- शाहबुद्दीन, जी (2013): 'अंडरस्टैंडिंग बायोडायवर्सिटी –लाइवलीहुड ट्रेड–ऑफ्स इन द वेस्टर्न हिमालयः इकोलॉजिकल, सोशल एंड हिस्टोरिकल इनसाइट्स फ्रॉम ए कम्युनिटी–मैनेज्ड लैंडस्केप', एनुअल मीटिंग ऑफ एसोसिएशन फॉर ट्रॉपिकल बायोलॉजी एंड कन्वर्सेशन (एशिया चैप्टर), मार्च 17 –22, में पेपर प्रस्तुत किया गया।
- शाहबुद्दीन, जी (2012): 'मल्टीडिस्प्लिनरी स्टडीज ऑन लाइवलीहुड–बायोडायवर्सिटी कनेक्शनस इन द सेंट्रल हिमालयास' येल हिमालय इनिशिएटिव, काठमांडू, नेपाल, सम्मेलन में अगस्त 12–13 को पेपर प्रस्तुत किया गया।
- शाहबुद्दीन, जी (2012): ''कन्ज़र्वेशन एट द क्रॉसरोड्सः साइंस, सोसायटी एंड द फ्यूचर ऑफ इंडियास वाइल्डलाइफ'', आमंत्रित व्याख्यान साउथ एशियन स्टडीज कॉउंसिल, येल यूनिवर्सिटी, न्यू हेवन, यूएसए में, 4 अप्रैल को दिया गया।
- नेगी, आर (2013) 'नुआनसिंग' एशिया इन अफ्रीका' : ए क्रिटिकल पर्सपेक्टिव फ्रॉम ज़ाम्बिया' इमर्जिंग एशियन पावर्स इन अफ्रीका यूनिवर्सिटी मुम्बई, मुम्बई में, 15 फरवरी को पेपर प्रस्तुत किया गया।
- देवी, एच.ओ (2012): ''वूमेन पार्टिसिपेशन एंड एनवायर्नमेंट एन इनसाइडर्स पर्सपेक्टिव्स ''एंथ्रोपोलॉजी ऑफ ग्लोबल इशूज़' अंतरराष्ट्रीय विचार–गोष्ठी (1–3 अप्रैल) दिल्ली विश्वविद्यालय में पेपर प्रस्तुत किया गया।
- देवी,एच.ओ (2012): ''चाइल्डहुड एक्सपीरियंसेस एंड डिसकोर्सेसः एन इंटरप्रिटेशन' के.आई.आई.टी में आईयूएईएस भुवनेश्वर में पेपर प्रस्तुत किया गया (25–30 नवंबर)।
- काबरा, ए (2012): ''कन्ज़र्वेशन, डिस्प्लेसमेंट एंड लाइवलीहुड्स इन द कंटेक्सट ऑफ एफ.आर.'' एफ.आर.ए',बायोडायवर्सिटी, इकोलॉजी एंड लाइवलीहुड' कार्यशाला में पेपर प्रस्तुत किया गया जो कि एसपीडब्ल्यूडी, नई दिल्ली (27 –28 सितम्बर 2012) द्वारा आयोजित की गयी थी।
- शाहबुद्दीन,जी (2012): 'कन्ज़र्वेशन एट द क्रॉसरोड्स साइंस, सोसायटी एंड द फ्यूचर ऑफ इंडियास वाइल्डलाइफ आमंत्रित व्याख्यान गोल्डन जुबिली लेक्चर सीरीज ऑन द एनवायरनमेंट, इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में, 30 अगस्त को प्रस्तुत किया गया।
- शाहबुद्दीन, जी (2012): 'एक्सप्लोरिंग द इंटरफेस बिटवीन लाइवलीहुड्स एंड फोरेस्ट

रीजेनेरशन इन द वैन पंचायत्स ऑफ उत्तराखंड' पर 'एनवायरनमेंट एंड हिस्ट्रीज नेहरू मेमोरियल म्यूजियम एंड लाइब्रेरी, नई दिल्ली की कार्यशाला में 5 मई को पेपर प्रस्तुत किया गया।

- देवी, एच. ओ (2012): 'डॉक्यूमेंटेशन फोक मेडिसिन एंड हीलर्स' पोस्ट – डॉक्टोरल इनिसिएशन प्रोग्राम के पहले चरण की कार्यशाला में यह पेपर प्रस्तुत किया गया। यह कार्यशाला आई.सी.सी.आर –नेहु शिलॉन्ग में 21–22 नवंबर को आयोजित की गयी थी।
- देवी, एच.ओ (2013): 'चेंजिंग आस्पेक्ट्स ऑफ द वीविंग कल्चर इन मणिपुर एंथ्रोपोलोजिकल कांग्रेस, आई.एन.सी.ए.ए, केरल, (फरवरी) में यह पेपर प्रस्तुत किया गया।
- नेगी, आर (2013): 'एन अफ्रीकन सेंचुरी ? पॉलिटिक्स, जिओ पॉलिटिक्स एंड डेवलपमेंट इन कॉन्टेम्पोररी अफ्रीका', पार्ट ऑफ संगोष्ठी सीरीज 'इंडिया एंड द वाइडर वर्ल्ड', नेहरू मेमोरियल म्यूजियम एंड लाइब्रेरी,19 मार्च।
- देवी, एच.ओ (2012): 'डॉक्यूमेंटेशन फोक मेडिसिन एंड हीलर्स ' पोस्ट – डॉक्टोरल इनिसिएशन प्रोग्राम के दूसरे चरण की कार्यशाला में यह पेपर प्रस्तुत किया गया। यह कार्यशाला आईसीसीआर –नेहु शिलॉन्ग में 27–28 मार्च 2013 को आयोजित की गयी थी।
- चौबे, के(2012): 'वाटर एंड लाइवलीहुड्सः रोल ऑफ वूमेन इन वॉटर सेक्टर इन रूरल छत्तीसगढ़–एन ओवरव्यू', एक्सप्लोरेटरी वर्कशॉप ऑन 'कनफ्लिक्ट एंड गवर्नेंस इन छत्तीसगढ़, पी.आर.आई.ए. रायपुर, अगस्त 28।

मानव अध्ययन शिक्षालय (एस.एच.एस):–

प्रकाशनः किताबें /आलेख–

- धर, ए (2012): 'इन कन्वर्सेशन विथ आशीष नंदी'' चर्चा में प्रकाशित, वॉल्यूम 1, नं. 1, जुलाई।
- धर,ए (2012): ''ग्रेवल इन द शू : नेशनलिज्म एंड वर्ल्ड ऑफ द थर्ड', रीथिंकिंग मार्क्सिज्म ए जर्नल ऑफ इकोनॉमिक्स ,कल्चर एंड सोसायटी ,24(1),(न्यूयॉर्क एंड लंदन रौटलेज)।
- धर,ए (2012): ''इंडियाज़ डिप्पिंग चाइल्ड सेक्स रेशियो एंड द पॉलिटिक्स ऑफ एनेमाईसेशन'', इकनोमिक एंड पोलिटिकल वीकली में प्रकाशित– (सह–लेखक).

- धर.ए (2012): ''द एजुकेटेड सब्जेक्ट' रनबीर समाद्दार एवं सुहित,के.सेन द्वारा सम्पादित न्यू सब्जेक्ट्स एंड न्यू गवर्नेंस इन इंडिया' (लंदन, न्यूयॉर्क एंड न्यूडेल्ही 'रौटलेज) में प्रकाशित पृष्ठ संख्या –329–375।
- चक्रबर्ती,ए.,ए धर एवं एस कलेनबर्ग (2012): वर्ल्ड ऑफ द थर्ड एंड ग्लोबल कैपिटलिज्म (न्यूडेल्हीः वर्ल्डव्यू प्रेस)।
- सेन, आर (2012): ''यू.एन.सी.आर.पी.डी एंड पी.डब्ल्यू.डी गैप्स इन प्रोमिसेस, पर्सपेक्टिव्स एंड प्रोग्राम्स, इंडियन इयर बुक ऑफ इंटरनेशनल लॉ एंड पालिसी में प्रकाशित (2010–2011), वॉल्यूम।।, कमल लॉ हाउस ,कलकत्ता, पीपी, 258–282।
- सेन, आर (2012) ''न्यूट्रल लॉस ऑर मोरल कोड्स कंट्रोलिंग एंड रीक्रिएटिंग सेक्सुअलिटीस्/इंटिमेसिस'', इन पायलट सारा एंड प्रभु, लोरा (सम्पादित) द फियर दैट स्टॉक्स जेंडर बेस्ड वायलेंस इन पब्लिक स्पेसेस, (न्यूडेल्ही जुबान पब्लिकेशन्स), पीपी, 143–172।
- सेन, आर (2012) ''डेमोक्रेसी एंड जेंडर कंट्राडिक्शन बिटवीन द लिबरल एंड द सबमिस्सिव इमेज ऑफ वूमेन'' इन बासु, पार्था प्रतिम (सम्पादित) डेमोक्रेसी एंड डेमोक्रेटायज़ेशन इन द 21 सेंचुरी, (न्यूडेल्ही हर आनंद पब्लिकेशनस प्राइवेट लिमिटेड), पीपी, 109–131।
- करोल्लिल ,एम (2012) ''सेक्सुअलिटी एंड जेंडर मोडयूल'' फॉर द कोर्स जेंडर एंड सोसायटी फॉर मास्टर्स इन एंथ्रोपोलॉजी, इग्नू।
- धर.ए (2013) ''सोशल फंड्स, पॉवर्टी मैनेजमेंट एंड सब्जेक्टिवेशन बियॉन्ड द वर्ल्ड बैंक एप्रोच'' कैंब्रिज जर्नल ऑफ इकोनॉमिक्स (सह–लेखक)।
- धर.ए (2013) ''एट द एज ऑफ क्रिटिकल साइकोलॉजी'' द एनुअल रिव्यु ऑफ क्रिटिकल साइकोलॉजी (ए.आर.सी.पी) में प्रकाशित (सह– लेखक)।
- धर.ए (2013) ''इंटेरोगेटिंग इंक्लूसिव डेवलपमेंट इन इंडियास ट्रांजीशन प्रोसेस'' कॉलेजियम एंट्रोपोलॉजिकम वॉल्यूम–36 नं.4: 1089–1099।
- धर,ए (2012) ''इन कन्वर्सेशन विद आशीष नंदी चर्चा'' में प्रकाशित, वॉल्यूम 1,नं. 2,जनवरी।
- घई, ए. एवं आर. जौहरी (2013) प्रीनेटल डायग्नोसिस वेयर डू वी ड्रा द लाइन ? आर. आददलखा द्वारा सम्पादित डिसेबिलिटी स्टडीज इन इंडिया. ग्लोबल डिस्कॉर्सेस, लोकल रियलिटीज़ (न्यू डेल्ही रौटलेज) में प्रकाशित।
- जौहरी, आर (2013) ''परायी तो अपनीः मदर्स लव ऐज रेसिस्टेन्स'' जे. सांघा एवं टी. गोंसाल्वेस (सम्पादित), साउथ एशियन मदरिंग, नेगोशिएटिंग कल्चर, फैमिली एंड सेल्फहुड, (ब्राडफार्डः डिमीटर प्रेस) में प्रकाशित।

- सेन, आर (2013द्धः 'नीड फॉर एन एव्रीडे कल्चर ऑफ प्रोटेस्ट इकनोमिक एंड पोलिटिकल विक्ली, वॉल्यूम –XLVIII नं. 02, जनवरी 12,वेब एक्सक्लूसिव।

पुस्तक समीक्षा :–

- सेन, आर (2012) ''डेंजरस सेक्स, इनविजिबल लेबर सेक्स वर्क एंड लॉ इन इंडिया'', प्रभा कोतिस्वरन द्वारा बिबलियोः ए रिव्यू ऑफ बुक्स, वॉल्यूम XVII नं. 3–4,मार्च –अप्रैल में प्रकाशित
- सेन, आर., डेविड मार्शल (स.) (2012) 'अंडरस्टैंडिंग रेज कंज्यूमर्स', कंटेम्परारी एजुकेशन डायलॉग, 9,1 105–130 में प्रकाशित।

सम्मेलन / संगोष्ठी में प्रस्तुत किये गए पेपर (एस.एच.एस)

- ओबेरॉय, एच (2012): ''ए हिस्टोरिकल एनालिसिस ऑफ साइनो–तिब्बतन रिलेशन्स'' तिब्बत हाउस, आई.आई.सी ,दिल्ली द्वारा ,16 अप्रैल 2012 को आयोजित।
- सेन, आर (2012) : '' प्रोटेस्टिंग वूमेन, परफॉर्मिंग वूमेन : जेंडरिंग पब्लिक स्पेसेस एंड ट्रांसफॉर्मिंग लैंग्वेजेज़'', थिएटर एंड सिविल सोसायटी पॉलिटिक्स,पब्लिक स्पेस एंड परफॉरमेंस, ब्राउन यूनिवर्सिटी, प्रॉविडेन्स, यूएसए, कार्यशालामें जून ,2012 को पेपर प्रस्तुत किया गया।
- सेन, आर (2012) ''आर राइट्स द राइट सोलुशन ? गैप्स बिटवीन लीगल राइट्स एंड एवरीडे एक्सेस टू सिटीजनशिप'' इंटेरोगेटिंग डिसेबिलिटी थ्योरी एंड प्रैक्टिस, इंस्टिट्यूट ऑफ डेवलपमेंट स्टडीज, कलकत्ता, सम्मेलन में सितम्बर, 2012 को प्रस्तुत किया गया।
- सेन, आर (2012) ''टीचिंग साउथ एशियाः पेडागोजिस एंड एक्सपीरियंस'', एक्सक्लूज़न्स जेंडर एंड पॉलिटिक्स इन साउथ एशिया, डेवलपिंग कन्ट्रीज़ रिसोर्स सेंटर, दिल्ली विश्वविद्यालय के संगोष्ठी में सितम्बर, 2012 को प्रस्तुत किया गया।
- चौधरी, आर (2012): ' द सेक्सुअल पॉलिटिक्स ऑफ 'लॉ' एंड 'आर्डर'ये पेपर नेशनल संगोष्ठी' जेंडर, लॉ एंड सोशल ट्रांसफॉर्मेशन इन इंडिया' हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद में 17–18 सितम्बर को प्रस्तुत किया गया। यह संगोष्ठी आर.सी 10 जेंडर स्टडीज, इंडियन सोशियोलॉजिकल, सोसायटी सेंटर फॉर द स्टडी ऑफ सोशल एक्सक्लूज़न एवं इन्क्लूसिव पॉलिसी एंड सेंटर फॉर वूमेन्स स्टडीज, हैदराबाद विश्वविद्यालय द्वारा 2012 में आयोजित किया गया।

- ओबेरॉय, एच (2012): ''द पैराडॉक्स ऑफ माइंड एंड ब्रेनः पर्सपेक्टिव्स फ्रॉम न्यूरोसाइंस वेस्टर्न साइकोलॉजी एंड स्पिरिचुएलिटी'' ये पेपर डी.एस. कोठारी सेंटर, दिल्ली विश्वविद्यालय एवं तिब्बत हाउस में आयोजित संगोष्ठी में 17 नवंबर 2012 को प्रस्तुत किया गया।
- जिमो, एल (2012): ''कंजम्पशन, कमोडिटीज़ एंड मैरिज'' (ए केस ऑफ द सुमि ट्राइब ऑफ नागालैंड, इंडिया) ये पेपर कल्चरल स्टडीज एसोसिएशन ऑफ ऑस्ट्रेलिया, 2012 के वार्षिक सम्मेलन मटेरिएलिटीस, इकोनोमीज, एंप्रिसिस्म एंड थिंग्स 'सिडनी विश्वविद्यालय, सिडनी, ऑस्ट्रेलिया, प्री–फिक्स सम्मेलन में 3 दिसंबर को प्रस्तुत किया गया और ये सम्मेलन 4 से 6 दिसंबर (2012) तक आयोजित किया गया।
- जिमो, एल (2012): ''सुमि हैंडलूम ट्रेडिशंसः मीनिंग्स, रिप्रेजेंटेशन्स एंड सोशल सिग्निफिकेन्स'' मटेरिअल कल्चरः नॉर्थ ईस्ट इंडिया एट द क्यूरेटिंग इंडियन विजुअल कल्चरः थ्योरी एंड प्रैक्टिस पर चर्चा। (थीमेटिक फोकसः आर्टिस्टिक प्रोडक्शन एंड क्वेश्चन्स ऑफ रीजन एंड आइडेंटिटी क्यूरेटोरिअल प्रोपोजिशन्स) ,अम्बेडकर विश्वविद्यालय ,दिल्ली (एयूडी), 9 से 13 अक्टूबर,2012।
- जिमो, एल (2012): 'रि–निगोशिएटिंग जेंडर रिलेशंस एंड पॉवर डायनेमिक्स इन एव्रीडे फैमिली लाइफ (इनसाइट्स फ्रॉम सुमि ट्राइब ऑफ नागालैंड)' ये पेपर लॉ ,जेंडर एंड सोशल ट्रांसफॉर्मेशन इन इंडिया ,हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद, में 17–18 सितम्बर को आयोजित संगोष्ठी में प्रस्तुत किया गया।
- जौहरी,आर (2012): 'डूइंग क्रिटिकल साइकोलॉजी इन इंडिया'', ये पेपर 'क्रिटिकल पर्सपेक्टिव्स इन साइकोलॉजी XXII एनुअल कन्वेंशन ऑफ द नेशनल अकेडमी ऑफ साइकोलॉजी (एन.ए.ओ.पी) सम्मेलन में 10, दिसंबर 2012 को प्रस्तुत किया गया।
- नगालिया, एस.,एवं आर सेन (2012) ''टीचिंग साउथ एशिया पेडागोजिस एंड एक्सपीरियंस ये पेपर एक्सक्लूजन्सः जेंडर एंड पॉलिटिक्स इन साउथ एशिया दो –दिवसीय कार्यशाला में प्रस्तुत किया गया। ये कार्यशाला डी.सी.आर.सी (डेवलपिंग रिसर्च सेंटर), दिल्ली विश्वविद्यालय, नेशनल कमिशन फॉर वीमेन द्वारा 14–15 सितम्बर, 2012 को आयोजित की गयी।
- चौधरी, आर (2013): ''परफॉर्मिंग मैस्कुलिन फेमिनीनिटीज़ वूमेन ट्रैफिक पुलिस कांस्टेबल्स इन कंटेम्पररी डेल्ही ''ये पेपर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन, 'जेंडर रिलेशन्स इन डेवलपिंग सोसायटीज में प्रस्तुत किया गया। यह सम्मेलन महाराजा अग्रसेन कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा 19 और 20 मार्च, 2013 को आयोजित किया गया।

- चौधरी, आर (2013): ''डिस्करसिव डेप्रिवेशन ऑफ डिग्निटी ऑफ द सेक्सुअली डिप्रेव्ड'' ये पेपर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन, डी–टेरीटोरिअलाइजिंग डाइवरसिटी कल्चर्स, लिटेरेचर्स एंड लैंग्वेजेज़ ऑफ द इंडिजिनस' में प्रस्तुत किया गया। ये सम्मेलन महाराजा अग्रसेन कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा 6–7,फरवरी 2013 को आयोजित किया गया।
- मल्होत्रा, आर., एवं एस.सी घोष (2013): ''ए साइकोलॉजिकल क्रिटीक ऑफ वूमनहुड ये पेपर डब्ल्यूडीसी के पहले अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन एम्पावरमेंट ऑफ वूमेन इन द डेवलपिंग वर्ल्ड, दिल्ली विश्वविद्यालय में 1 और 2 अप्रैल,2013 को प्रस्तुत किया गया।
- करोल्लिल, एम (2013): ''स्टडीइंग यूथ अक्रॉस ट्रेडिशन एंड मॉडर्निटी ए मल्टी–साइट, मल्टी –डिसीप्लिनेरी एन्डेवर ''ये पेपर नोइंग द सोशल वर्ल्ड चैलेंजेज एंड रिस्पोंसेज़'' संगोष्ठी में प्रस्तुत किया गया। इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडी, शिमला में यह संगोष्ठी ,13 से 15 मार्च, 2013 को आयोजित हुआ।
- नावेद, एस (2013): ''जेंडर एंड द राइज़ ऑफ द इंग्लिश नोवेल, नोवेल गेजिंग'' ये पेपर द हिस्ट्री ऑफ नोवेल कार्यशाला में प्रस्तुत किया गया। यह कार्यशाला अंग्रेजी विभाग, रामजस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा 20, मार्च 2013 को आयोजित की गयी थी।
- सेन, आर (2013): ''फ्रीडम, ऑटोनमी एंड डिग्निटीः न्यू आईडियल्स इन्फॉर्मिंग लॉ मैकिंग' ये पेपर एक्सप्लोरिंग जेंडर वायलेंस इन पोस्ट ग्लोबलाइड इंडिया पाथवेः ऑफ जस्टिस', राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रस्तुत किया गया। पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ फरवरी, 2013 में यह संगोष्ठी आयोजित की गयी।
- सेन, आर (2013): ''बॉर्डर्स एंड मेमोरीज़: जेंडर्ड नेरेटिव्स ऑफ डिस्लोकेशन फ्रॉम साउथ एशिया'', ये पेपर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन 'कन्टेस्टेड स्पेसेस एंड कार्टोग्राफिक चैलेंजेस में प्रस्तुत किया गया। यह सम्मेलन इंटरनेशनल एसोसिएशन फॉर द स्टडी ऑफ फोर्स्ड माइग्रेशन इन कलकत्ता द्वारा जनवरी, 2013 को आयोजित किया गया।

ललित अध्ययन शिक्षालय (स्कूल ऑफ लिबरल स्टडीज,एसएलएस)

एस.एल.एस– संकाय के शिक्षकों के प्रकाशनों की सूचीः पुस्तकें, आलेख, अनुवाद

- भल्ला, आलोक एवं मौली कौशल, सम्पादित (2013): एस्सेज ऑन रामकथा (रामकथा पर निबंध), नई दिल्ली आर्यन बुक्स।
- भल्ला, आलोक (2012): स्टोरीज अबाउट पार्टिशन ऑफ इंडिया (भारत विभाजन के बारे में कहानियां), 4 भागों में नए और विस्तृत संस्करण (नई दिल्लीः मनोहर)
- भल्ला, आलोक (2012): 'लॉस्ट इन ए फॉरेस्ट ऑफ सिम्बल्सः कैन सम एनिमल, बर्ड, ट्री ऑर जीन हेल्प अस अंडरस्टैंड मिथ एंड फल्कलॉर?' चम्बा/अचंबा, में प्रकाशित, माला श्री लाल एवं सुकृता पाल कुमार द्वारा सम्पादित (नई दिल्लीः साहित्य अकादमी)।
- भल्ला, आलोक (2013): टंग –ट्विस्टिंग टेल्स टोल्ड बाय द अल्फाबेट्स लिविंग इन टनजस्टनटाउनः एन एलेनशन, एन एग्नि इन ट्वेंटी–सिक्स मूवमेंट्स। मंजुला पद्मनाभन द्वारा दिए गए उदाहरण के साथ, (चेन्नईः तुलिका बुक्स)।
- भल्ला, आलोक (2013): 'टैगोर्स डार्क विज़न ऑफ ह्यूमैनिटी', एशियन स्टडीज (स्लोवेनिया)।
- भल्ला, आलोक एवं मौली कौशल, सम्पादित (2013): क्राइसिस इन अयोध्याः ए रीडिंग ऑफ वन मिनिएचर पेंटिंग फ्रॉम द कम्ब रामायण फोलियोः एस्सेज ऑन रामकथा में प्रकाशित, (नई दिल्लीः आर्यन बुक्स)।
- भल्ला, आलोक (2012): 'ए क्वेश्चन एंड ए ड्रीम' (एक प्रश्न और एक सपना), कृष्ण बलदेव वैद द्वारा रचित नाटक का अनुवाद ' प्रतिलिपि' में प्रकाशित।
- भल्ला, आलोक (2012): 'टू पोएम्स'(दो कवितायें) केदारनाथ सिंह द्वारा रचित कविताओं का अनुवाद एलेवन–एलेवन में प्रकाशित, नं. 13, (कैलिफोर्निया)।
- भल्ला, आलोक (2012): 'कबीर वेप्ट व्हेन ही सॉ.....(कबीर रोया जब उसने देखा), सआदत हसन मंटो द्वारा रचित कहानी का अनुवाद एलेवन–एलेवन में प्रकाशित, नं. 13,2012 (कैलिफोर्निया)।
- भल्ला, आलोक (2012) 'नाइन पोएम्स' (नौ कवितायेँ)उदयन वाजपेयी द्वारा रचित कविताओं का अनुवाद एलेवन–एलेवन में प्रकाशित नं.13,2012 (कैलिफोर्निया) पुश कार्ट पुरस्कार के लिए नामित,।
- भगोवालिया, प्रिया (सह–लेखक), (2012): ''डज़ चाइल्ड अंडर –न्यूट्रिशन पर्सेस्ट डिसपाइट पॉवर्टी रिडक्शन इन डेवलपिंग कन्ट्रीज़ ?'' कॉनटाइल रिग्रेशन रिजल्ट्स, द जर्नल ऑफ डेवलपमेंट स्टडीज वॉल्यूम –48, इशू 12 ,201।

- भगोवालिया, प्रिया (सह–लेखक), (2012) ''व्हाट डाइमेंशन्स ऑफ वूमेन्स एम्पावरमेंट मैटर मोस्ट फॉर चाइल्ड न्यूट्रिशन ?'' 'एविडेन्स यूज़िंग नेशनली रिप्रेसेंटेटिव डाटा फ्रॉम बांग्लादेश आई.एफ.पी.आर.आई डिस्कशन पेपर 1192।
- भगोवालिया, प्रिया (सह–लेखक), (2012): ''एग्रीकल्चर, इनकम एंड न्यूट्रिशन लिंकेजेस इन इंडियाः इनसाइट्स फ्रॉम ए नेशनली रिप्रेसेंटेटिव सर्वे 'आईएफपीआरआई डिस्कशन पेपर 1195।
- भट्टाचार्य, ज्योतिर्मय, (2012): ''प्राइस स्टिकीनस एंड एक्सचेंज–रेट पास थ्रू:–एविडेंस फ्रॉम एन ऑनलाइन रिटेलर इकनोमिक – पॉलिटिकल वीक्ली, XLVII(23),वेब एक्सक्लूसिव।
- चौधरी, सयनदेब, ''हेरोइक लाफ्टर ऑफ मॉडर्निटीः द लाइफ, सिनेमा एंड आफ्टरलाइफ ऑफ बेंगाली मैटिनी आइडल उत्तम कुमार'', फिल्म इंटरनेशनल में प्रकाशित, लंदन, वॉल्यूम 10, इशू 04 / 05 2।
- चौधरी, सयनदेब, (2013): ''फिल्म फेयर , रिव्यु ऑफ द प्रोजेक्ट सिनेमा सिटी एक्सिबिशन'', आर्ट इंडिया मैगज़ीन में प्रकाशित (वॉल्यूम XVII इशू II क्वार्टर II)।
- चौधरी, सयनदेब, (2013): ''फोटोग्राफी रिव्युज'' आर्ट इंडिया मैगज़ीन में प्रकाशित (वॉल्यूम XVII इशू III क्वार्टर III)।
- चौधरी, सयनदेब (2012): ''द मैन हू वुड बी किंग'' (ऑन लाइफ एंड सिनेमा ऑफ बंगाली एक्टर सौमित्रा चटर्जी), कारवाँ मैगज़ीन, जुलाई में प्रकाशित
- चौधरी, सयनदेब (2012): ''ऑडबॉल्स वंडर्स कैपर्स'' आर्ट इंडिया मैगज़ीन, वॉल्यूम XVI इशू IV, क्वार्टर IV स्पेशल, ग्राफिक नॉवेल पर विशेष अंक।
- चौधरी, सयनदेब (2012): ''द डे ऑफ द सुपरमून'' मिलेनियम न्यूज़ पेपर में प्रकाशित कॉलम, मई 10।
- चौधरी, सयनदेब (2012): ''ग्लोरी टू द गॉड ऑफ क्रिकेट'' मिलेनियम न्यूज़ पेपर में प्रकाशित कॉलम, मई 02।
- दास गुप्ता, चिरश्री (2013): ''फिस्कल रिस्पांसिबिलिटी एंड द डेवलपमेंट डिलेमा अंडर ग्लोबल रिसेशनः ए पर्सपेक्टिव ऑन रिसर्जेंट बिहार'', एस.लाल एवं एस.गुप्ता द्वारा सम्पादित, ' रेसुरेक्शन ऑफ द स्टेटः ए सागा ऑफ बिहारः एस्सेज इन मेमोरी ऑफ प्रोफेसर पपिया घोष, नई दिल्ली में प्रकाशित।
- मजूमदार, सुरजीत (2012): ''इंडस्ट्रीलाइज़ेशन, डिरिजिस्म एंड कैपिटलिस्ट्सः इंडियन बिग बिज़नेस फ्रॉम इंडिपेंडन्स टू लिब्रलाइजेशन'' ,नेहरू मेमोरियल म्यूजियम एंड लाइब्रेरी ऑकेज़नल पेपर, हिस्ट्री एंड सोसायटी ,न्यू सीरीज –

- मजूमदार, सुरजीत (2012): ''अनस्टेबल रूपी फ्लाउन्डरिंग इकॉनमी (वेब एक्सक्लूसिव आर्टिकल), इकनोमिक एंड पॉलिटिकल वीक्ली, 47:29.
- मजूमदार, सुरजीत (2012): ''बिग बिजनस एंड इकनोमिक नेशनलिज्म इन इंडिया एंथोनी डी'कोस्टा द्वारा सम्पादित, ये आलेख ग्लोब्लाइजेशन एंड इकनोमिक नेशनलिस्म इन एशिया ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, ऑक्सफोर्ड।
- मजूमदार, सुरजीत (2012): ''द इंडियन कॉर्पोरेट स्ट्रक्चर एंड द थ्योरी ऑफ एमर्जिंग मार्किट बिजनेस ग्रुप्स'', हिस्ट्री एंड सोशियोलॉजी ऑफ साउथ एशिया.6 : 2.
- मेनन, शैलजा (2012): ''कोलोनियल इमेजरी एंड अर्बन माइंडस्केप्स 1856–1919, (जर्मनी लैम्बर्ट अकेडमिक पब्लिशिंग), आईएसबीएन नं. 978–3–659–21813–2.
- मेनन शैलजा, (सह लेखक) (2013) द ओल्ड मैन एंड द सी ऑफ ट्रबल्स मनिन्द्र थंकू एवं धनंजय राय द्वारा सम्पादित, डेमोक्रेसी ऑन द मूव रेफलेक्शन्स ऑन मोमेंट्स, प्रोमिसिस एंड कॉन्ट्राडिक्शन्स (नई दिल्ली) में प्रकाशित।
- मेनन शैलजा, (2012) सोशल सेक्युरिटी फॉर अनआर्गनाइज्ड वर्कर्स इन इंडिया' इशू एंड कंसर्न्स कनक कान्ति बागची एवं निरुपम गोप द्वारा सम्पादित पुस्तक द नीड फॉर सोशल सेक्युरिटी' : एन असेसमेन्ट बेस्ड ऑन इंडियन एक्सपीरियंस (नई दिल्ली)में प्रकाशित।
- मुखोपाध्याय, अमितेश (सं.) (2012): ''सोशल मूवमेंट्स इन इंडिया'' (भारत में सामाजिक आंदोलन), डेल्ही पियरसन।
- मुखोपाध्याय, अमितेश (2013): ''हॉण्टिंग टाइगर, हग्गिंग एनसेस्टर्सः कन्सट्रकटिंग आदिवासी पर्सनहुड इन द सुन्दरबंस''नेहरु मेमोरियलम्यूजियम एंड लाइब्रेरी,तीन मूर्ति, डेल्ही ओकेजनल पेपर सीरीज में प्रकाशित।
- प्रधान, गोपालजी (2012): ''वर्तमान सदी में मार्क्सवाद'' (बनास जन के विशेष अंक में प्रकाशित मोनोग्राफ, आईएसएसएन नं. 2231–6558,नई दिल्ली।
- प्रधान, गोपालजी (2012): ''साम्राज्यवाद के मार्क्सवादी सिद्धांत'' (एंथोनी ब्रेवर द्वारा रचित मार्किसस्ट थ्योरिज ऑफ इम्पेरिएलिस्म का हिंदी अनुवाद), (दिल्ली ग्रंथशिल्पी प्रकाशन)।
- प्रधान, गोपालजी (2013): ''1857 एक महागाथा'' (बंगाली गीत जंगियार का हिंदी अनुवाद एवं लिप्यंतरण), (दिल्लीः स्वराज प्रकाशन)।
- प्रधान, गोपालजी (2012): ''मैनेजर पाण्डेय के सरोकार'' दीपक प्रकाश द्वारा सम्पादित, आलोचना की चुनौतियाँ' में प्रकाशित (दिल्लीः नई किताब)।

- सांकृत सत्यकेतु (2012): ''हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की समस्या, समसामयिक सृजन, अप्रैल–जून के अंक में प्रकाशित।
- सेन, रुक्मिणी (2012): ''नीड फॉर एन एग्रीडे कल्चर ऑफ प्रोटेस्ट'' इकनोमिक एंड पोलिटिकल वीक्ली, वॉल्यूम–XLVIII नं. 02,जनवरी 12,वेब एक्सक्लूसिव।
- सेन, रुक्मिणी (2012): ''यू.एन.सी.आर.पीडी एंड पी.डब्ल्यू.डी गैप्स इन प्रोमिसिस, पर्सपेक्टिव्स एंड प्रोग्राम्स'', इंडियन ईयर बुक ऑफ इंटरनेशनल लॉ एंड पॉलिसी(2010–2011) में प्रकाशित, वॉल्यूम II, कमल लॉ हाउस, कलकत्ता।
- सेन, रुक्मिणी (2012): ''न्यूट्रल' लॉज़ एंड 'मॉरल' कोड्स': कंट्रोलिंग एंड रिक्रिएटिंग सेक्सुअलिटीज इंटीमैसी; सारा पायलट एवं लोरा प्रभु द्वारा सम्पादित, द फियर दैट स्टॉक्सः जेंडर बेस्ड वायलेंस इन पब्लिक स्पेसेस, में प्रकाशित (नई दिल्लीः जुबान पब्लिकेशन्स)।
- सेन, रुक्मिणी (2012): ''डेमोक्रेसी एंड जेंडरः कॉन्ट्राडिक्शन बिटवीन द लिबरल एंड द सबमिस्सिव इमेज ऑफ वूमेन', पार्था प्रतीम बासु द्वारा सम्पादित 'डेमोक्रेसी एंड डेमोक्रेटाइज़ेशन इन द 21 सेंचुरी' में प्रकाशित,नई दिल्ली।
- ठाकुर,विक्रम सिंह (2012): ''फ्रॉम' इमिटेशन ''टू इंडीजेनाइज़ेशनः ए स्टडी ऑफ शेक्सपियर परफॉर्मेंसेस इन कोलोनियल कैल्कटा'' एलिकैंटी जर्नल ऑफ इंग्लिश स्टडीज 25।
- वेंकटरमन, गीता (सह–लेखक) (2012): ''करिकुलम एंड पेडागोजी इन मैथमेटिक्सः फोकस ऑन द टरशियरी लेवल'', आर.रामानुजन एवं के.सुब्रामणियम द्वारा सम्पादित, मैथमेटिक्स एजुकेशन इन इंडियाः स्टेटस एंड आउटलुक' में प्रकाशित अध्याय (एच. बी.सी.एस.ई,टी.आई.एफ.आर)।
- वेंकटरमन, गीता (सह–लेखक) (2012): ''क्लोज एनकाउंटर्स ऑफ द मैथ ऐड' काइंड, एट राईट ऐंगल्स, वॉल्यूम–1,नं. 2 ,दिसंबर।

संगोष्ठी / सम्मेलन :–

- कोठियाल, तनुजा (2012): ''इंटेरोगेटिंग ट्राइब एण्ड कास्ट इन राजस्थान', यह पेपर 'मेकिंग सेंस ऑफ कंटेम्परारी इंडिया' कार्यशाला में प्रस्तुत किया गया। नेहरू मेमोरियल म्यूजियम एंड लाइब्रेरी, नई दिल्ली एवं इनके सहयोगी किंग्स इंस्टिट्यूट, किंग्स कॉलेज, लंदन द्वारा यह कार्यशाला सितम्बर में आयोजित की गयी।
- कोठियाल, तनुजा (2012): ''नेहरूज हिस्टोरिकल थॉट्स एंड देयर रेलेवन्स फॉर कंटेम्परारी इंडियन स्टेट'' यह पेपर राष्ट्रीय संगोष्ठी 'नेहरूवियन इकोनॉमिक

फिलोसॉफी एंड इट्स रेलेवन्स टू कंटेम्परारी इंडिया'' में प्रस्तुत किया गया। यह संगोष्ठी ,सेंटर फॉर रिसर्च इन रूरल एंड इंडस्ट्रीयल डेवलपमेंट (सीआरआईआईडी), चण्डीगढ़ द्वारा सितम्बर में आयोजित की गयी।

- सेन, रुक्मिणी (2013): ''फ्रीडम ऑटोनमी एंड डिग्निटीः न्यू आईडियल्स इंफोर्मिंग लॉ मेकिंग' यह पेपर राष्ट्रीय संगोष्ठी 'एक्सप्लोरिंग जेंडर वायलेंस इन पोस्ट ग्लोबलाइज्ड इंडियाः पाथवेज़ ऑफ जस्टिस', पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ में फरवरी 2013 को प्रस्तुत किया गया।
- सेन, रुक्मिणी (2013): ''बॉर्डर्स एंड मेमोरीज़ः जेंडर्ड नैरेटिव्स ऑफ डिस–लोकेशन फ्रॉम साउथ एशिया' यह पेपर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन 'कन्टेस्टेड स्पेसेस एंड कार्टोग्राफिक चैलेंजेज़' में प्रस्तुत किया गया। यह सम्मेलन, इंटरनेशनल एसोसिएशन फॉर द स्टडी ऑफ फोर्स्ड माइग्रेशन, कोलकाता द्वारा जनवरी में आयोजित किया गया।
- सेन, रुक्मिणी (2012): 'आर राइट्स द राईट सोलुशन? गैप्स बिटवीन लीगल राइट्स एंड एग्रीडे एक्सेस टू सिटीजनशिप' यह पेपर 'इंटेरोगेटिंग डिसेबिलिटी': थ्योरी एंड प्रैक्टिस', इंस्टिट्यूट ऑफ डेवलपमेंट स्टडीज, कोलकाता, सितम्बर में प्रस्तुत किया गया।
- सेन, रुक्मिणी (2012): 'टीचिंग साउथ एशियाः पेडागोजीस एंड एक्सपेरिएंसेस' यह पेपर एक्सक्लूशन्स': जेंडर एंड पॉलिटिक्स इन साउथ एशिया' संगोष्ठी में प्रस्तुत किया गया। डेवलपिंग कन्ट्रीज रिसोर्सेज सेंटर, दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा ये संगोष्ठी सितम्बर में आयोजित की गयी।
- सेन, रुक्मिणी (2012): ''प्रोटेस्टिंग वूमेन, परफॉर्मिंग वूमेनः जेंडरिंग पब्लिक स्पेसेस एंड ट्रांसफॉर्मिंग लैंग्वेजेस'' ये पेपर 'थिएटर एंड सिविल सोसायटीः पॉलिटिक्स, पब्लिक स्पेस एंड परफॉरमेंस' कार्यशाला में प्रस्तुत किया गया। यह कार्यशाला ब्रॉन विश्वविद्यालय, प्रोविडेंस, यूएसए, जून में आयोजित की गयी।
- मजूमदार सुरजीत (2013): ''ओवरव्यू ऑफ इंडियाज़ ग्रोथ एक्सपीरियंसज़ यह पेपर 'रिविजिटिंग इन्डस्ट्रीयल पॉलिसी टू रेजुवेनेट इंडियाज़ मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर, इंस्टिट्यूट फॉर स्टडीज इन इन्डस्ट्रीयल डेवलपमेंट' की कार्यशाला में 29 मार्च को प्रस्तुत किया गया।
- मजूमदार सुरजीत (2012): ''इकोनॉमिक एंड पोलिटिकल इम्प्लिकेशन्स ऑफ लिब्रलाइजेशनः द इंडियन एक्सपीरियंस ऑफ 2 डेकेड्स' ये पेपर 'लेसन फ्रॉम ट्वेंटी इयर्स ऑफ 'रिफॉर्म्स' एंड द चैलेंजेज ऑफ रिक्लेमिंग द स्टेट (अंडर द थीम

पोलिटिकल इकोनमी ऑफ इंडिया) 'पैनल में प्रस्तुत किया गया, 36वीं इंडियन सोशल कांग्रेस, कीट विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर में 27–29 दिसंबर 2012 को इस प्रोग्राम का आयोजन किया गया।

- मजूमदार, सुरजीत (2012): ''इंडियन कैपिटलिज्म एंड द पॉलिटिक्स एंड इकोनॉमिक्स ऑफ लिब्रलाइजेशन'' यह पेपर 'पॉलिटिकल पार्टीज एंड वेरायटीज ऑफ कैपिटलिज्म इन एशिया '(जो कि 'गवर्नेंस,डेमोक्रेसी एंड पॉलिटिकल पार्टीज' सम्मेलन का एक भाग था) की कार्यशालामें प्रस्तुत किया गया। केंद्रीय विश्वविद्यालय हैदराबाद एवं डेकिन विश्वविद्यालय, हैदराबाद द्वारा यह कार्यशाला 30 नवंबर और 1–3 दिसंबर को आयोजित की गयी।
- मजूमदार, सुरजीत (2012): ''द स्टेट, कैपिटल एंड डेवलपमेंट इन 'एमर्जिंग' इंडिया'' ये पेपर ' फ्रॉम एशिया–पैसिफिक टू इंडो–पैसिफिकः राइजिंग पावर्स, एमर्जिंग रीजन्स एंड ट्रांसफॉर्मेशन इन गवर्नेंस' कार्यशाला में प्रस्तुत किया गया। इसका आयोजन, द इंडो–पैसिफिक गवर्नेंस रिसर्च सेंटर, स्कूल ऑफ हिस्ट्री एंड पॉलिटिक्स, एडेलेड विश्ववद्यालय, ऑस्ट्रेलिया द्वारा 21 सितम्बर को किया गया।
- मजूमदार, सुरजीत (2012): ''एग्रीकल्चर–इंडस्ट्री डायनेमिक्स एंड रूरल ट्रांसफॉर्मेशन इन इंडिया' यह पेपर आई.डी.आर.सी–टी.टी.आई की कार्यशाला 'रूरल–अर्बन लिंकेज' में प्रस्तुत किया गया। इस कार्यशाला का आयोजन इंस्टिट्यूट फॉर रूरल मैनेजमेंट (आई.आर.एम.ए) द्वारा 21–22 अगस्त को किया गया।
- मजूमदार, सुरजीत (2012): ''कंटिनुइटी एंड चेंज इन इंडियन कैपिटलिज्म'' यह पेपर 'वेरायटीज ऑफ कैपिटलिज्म इन एमर्जिंग कन्ट्रीज' अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला में प्रस्तुत किया गया। इसका आयोजन साबंसी विश्वविद्यालय, इस्तानबुल द्वारा टर्की में 9–10 जून को किया गया।
- मजूमदार, सुरजीत (2012): ''ग्लोब्लाइज़ेशन एंड ग्रोथः द इंडियन केस इन पर्सपेक्टिव्स' यह पेपर 'मनी,फाइनेंस एंड मैक्रोइकोनॉमिक्स फॉर द रियल इकोनमी, अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत किया गया। इस सम्मेलन का आयोजन इंस्टिट्यूट फॉर डेवलपमेंट स्टडीज, कोलकात्ता (आई.डी.एस.के) में, 26–28 अप्रैल 2012 को हुआ।
- शर्मा, संजय कुमार (2012): ''इन्टेग्रेटिंग कम्युनिटी नॉलेजः एक्सपेरिएंसेस एंड एक्सपेरिमेंट्स एट अम्बेडकर यूनिवर्सिटी, डेल्ही'' ये पेपर यूनिवर्सिटी लीडरशीप फॉर इन्टेग्रेटिंग नॉलेज डाइवर्सिटी फॉर सस्टेनेबिलिटी सम्मेलन में सह–प्रस्तुत किया गया। इस सम्मेलन का आयोजन अल्बुखारी अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय अलोर सेतार, केदाह, मलेशिया में अक्टूबर 5–7 को किया गया।

- मीर, उर्फत अंजम (2013): ''वायलेंस, ट्रॉमा एंड एडोलसैंट्सः एन एथनोग्राफिक स्टडी इन द कॉन्टेक्स्ट ऑफ जम्मू एंड कश्मीर' ये पेपर 'साइकोलॉजी ऑफ ट्रॉमाः वूमेन एंड चिल्ड्रेन इन वायलेंट कॉन्फ्लिक्ट अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रस्तुत किया गया। इस संगोष्ठी का आयोजन, मनोविज्ञान विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली द्वारा 13–14 मार्च को किया गया।
- भट्टाचार्य, ज्योतिर्मय (2012): ''एविडेंस ऑन प्राइस–सेटिंग फ्रॉम इंडियन ऑनलाइन रिटेल' ये पेपर साउथ एशियन यूनिवर्सिटी, नई दिल्ली में, 30 अक्टूबर 2012 को प्रस्तुत किया गया–
- भट्टाचार्य, ज्योतिर्मय (2012): ''प्राइस स्टिकनेस एंड एक्सचेंज–रेट पास–थ्रूः सम एविडेंस फ्रॉम इंडियन ऑनलाइन रिटेल'' यह पेपर 'सी.ई.एस.पी के 40वें वर्ष की संगोष्ठी में प्रस्तुत किया गया। इस संगोष्ठी का आयोजन जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली में 12,सितम्बर को किया गया।
- स्नेही, योगेश (2012): ''कम्पेरेटिव्स विदिन ए रीजनः एक्सप्लोरिंग हिस्टॉरिकल कोररेल्ट्स बिटवीन सेक्सुएलिटी, प्लान ऑउटलेज एंड एजुकेशन' यह पेपर 'कम्पेरेटिव एजुकेशन सोसायटी ऑफ इंडिया (सीईएसआई)' के वार्षिक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत किया गया। यह सम्मेलन जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू में 10–12, अक्टूबर को आयोजित हुआ।
- स्नेही, योगेश (2012): ''ड्रीमिंग बाबा, रेस्टीट्यूटिंग मेमोरीः पॉपुलर सूफी श्राइन्स इन कंटेम्परारी ईस्ट पंजाब'' यह पेपर 'मुस्लिम सेंट्स (संत), ड्रीम्स एंड वेनेरेशन ऑफ श्राइन्स' की कार्यशाला (डब्ल्यू133) में प्रस्तुत किया गया। यह बैठक लेइन एजर (दरहम विश्वविद्यालय) एवं पेडरम खोसरोनेजाड (सेन्ट एंड्रूस विश्वविद्यालय) द्वारा 12वीं यूरोपियन एसोसिएशन ऑफ सोशल एंथ्रोपोलॉजिस्ट्स (ईएएसए) बाइनियल सम्मेलन 'अनसरटैंटी एंड डिसक्वाइट' में बुलाई गयी। इस सम्मेलन का आयोजन यूनिवर्सिटी ऑफ पेरिस क्वेस्टनानटेर्रे ला डिफेंस, फ्रांस में 10–13,जुलाई 2012 को किया गया।
- दास गुप्ता, चिरश्री (2012): ''जेंडर, प्रॉपर्टी एंड इंस्टिट्यूशनल बेसिस ऑफ टैक्स डिस्क्रिमिनेशन'' यह पेपर 'जेंडर इम्प्लिकेशन्स ऑफ टैक्सेशन पॉलिसीज' राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रस्तुत किया गया। इस संगोष्ठी का आयोजन, सेंटर फॉर बजट एंड गवर्नेंस एकाउंटेबिलिटी, नई दिल्ली में 30, अगस्त को हुआ।
- वेंकटरमन, गीता (2012): ''अंडरग्रेजुएट मैथमेटिक्स एजुकेशन'', यह पेपर 12वीं इंटरनेशनल कांग्रेस ऑन मैथमेटिकल एजुकेशन में इंडियन नेशनल प्रेजेंटेशन' के एक भाग के रूप में प्रस्तुत किया गया। इसका आयोजन, सियोल में जुलाई, 2012 को किया गया।

- प्रधान, गोपालजी (2012): 'हिंदी और पूर्वोत्तर की भाषाएँ (हिंदी एंड द लैंग्वेजेज ऑफ नॉर्थ–ईस्ट)' यह पेपर 'कोलकत्ता सेंटर ऑफ महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्याल, वर्धा में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में 14–15,जुलाई को प्रस्तुत किया गया।
- प्रधान, गोपालजी (2012): ''रामविलास शर्मा की आलोचना दृष्टि (क्रिटिकल गेज़ ऑफ रामविलास शर्मा)'', ये पेपर रामविलास शर्मा जन्म–शताब्दी समारोह समिति' संगोष्ठी में प्रस्तुत किया गया। इस संगोष्ठी का आयोजन आगरा में,7 अक्टूबर 2012 को किया गया।
- प्रधान, गोपालजी (2012): ''मुक्ति का मार्क्सवादी विमर्श(मार्क्सियन डिस्कोर्स ऑन लिबरेशन): यह पेपर ''डिस्कोर्स ऑफ ऐमानसीपेशनः रि–विजिटिंग अम्बेडकर, गांधी एंड मार्क्स'' राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रस्तुत किया गया। इस संगोष्ठी का आयोजन, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग द्वारा उदयपुर में 20–21,नवंबर को किया गया।
- प्रधान, गोपालजी (2013): ''लोहिया की सांस्कृतिक दृष्टि (लोहिया ऑन कल्चर)' , यह पेपर डॉ.राममनोहर लोहिया के समाजवादी विचार और वर्तमान भारतीय सन्दर्भ राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रस्तुत किया गया एवं इस संगोष्ठी के एक सत्र की अध्यक्षता की गयी। इस संगोष्ठी का आयोजन मानविकी विभाग एवं अन्य अध्ययन, आर.एम.एल.एन. एल.यू ,लखनऊ द्वारा 22–23,मार्च को किया गया।

स्नातक अध्ययन शिक्षालय (एस.यू.एस)

प्रकाशनः–

सैमुएल, एन (2012): ''इन कन्वर्सेशन विद डॉ.एन.एस.प्रभु (डॉ.एन.एस.प्रभु के साथ बातचीत में)'', फोर्टेल,वॉल्यूम–24.

प्रस्तुत किए गए पेपरः–

सैमुएल, एन (2012): ''सेल्फ असेसमेंट इन द राइटिंग क्लासरूम'' (लेखन कक्षा में आत्म मूलयांकन) यह पेपर इंग्लिश लैंग्वेज टीचर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया डेल्ही चैप्टर के तीसरे वार्षिक एवं दूसरे अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में नवंबर, 2012 को प्रस्तुत किया गया।

आई.टी सेवाएँः

सम्मेलनों में प्रस्तुत किये गए पेपर–

- श्रीनिवास, के (2012): ''सिमेंटिक सर्च इन्फोर्मेशन रिट्रीवल'', यह पेपर 'फ्रंटियर्स ऑफ रिसर्च एंड डेवलपमेंट इन कम्प्यूटेशनल साइंस' राष्ट्रीय संगोष्ठी,'वाराणसी में मार्च, 2012 को प्रस्तुत किया गया।
- श्रीनिवास, के (2013): ''रोल ऑफ क्लॉउड बेस्ड ई.आर.पी सोलुशंस फॉर हायर एजुकेशन इंस्टीट्यूशन्सः कॉन्सेप्ट्स, इशूज़ एंड कंसर्न्स' यह पेपर 'सेकंड इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन अकेडमिक लाइब्रेरीज जी.जी.एस.आई.पी, विश्वविद्यालय, दिल्ली में 12–15, फरवरी 2013 को प्रस्तुत किया गया।
- श्रीनिवास, के (2013): 'ई–गवर्नेंस एपलिकेशंस ऑन क्लॉड कंप्यूटिंग फॉर हायर एजुकेशन इंस्टीट्यूशन्स पर मुख्य वार्ता प्रोमोटिंग ई–गवर्नेंस कल्चर इन इंस्टीट्यूशन्स ऑफ हायर एजुकेशन' राष्ट्रीय संगोष्ठी में की गयी। इस संगोष्ठी का आयोजन एम.जे.पी रूहेलखंड यूनिवर्सिटी,बरेली में, 20–21,मार्च 2013 को किया गया।
- श्रीनिवास,के(2013): ''द इफेक्टिवनेस ऑफ इन्टेग्रेटिंग लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम्स इन टीचर एजुकेशन'', यह पेपर 'एमर्जिंग पैराडाइम्स ऑफ टीचर एजुकेशन' एम.एस विश्वविद्यालय,बड़ौदा में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में 25–26,मार्च 2013 को प्रस्तुत किया गया।

प्रारंभिक बाल शिक्षा एवं विकास केंद्र (सी.ई.सी.ई.डी)

केंद्र के प्रकाशनः–

डे,एम.,आर.कोचर,एस बावा,पी महलवाल एवं आर.मक्कड (2012): ''अनपैकिंग केयरः प्रोटेक्टिंग अर्ली चाइल्डहुड'' ई.सी.ई.डी ब्रीफ–1,अगस्त 26,2012.

कॉल,वी,पी माथुर एवं पी चड्ढा (2012): ''अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन इन इंडियाः ए स्नेपशॉट'' ई.सी.ई.डी ब्रीफ–2 ,अगस्त 20,2012.

एयूडी और परियोजना संकाय द्वारा प्रस्तुत किये गए पेपरः–

1. एयूडी संकाय

- भारगढ़, ए.(2013): ''क्वालिटी वेरिएशन्स इन अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन प्रोग्राम्स एविडेंस फ्रॉम थ्री स्टेट्स इन इंडिया' यह पेपर 'अर्ली चाइल्डहुड डेवलपमेंट : स्माल

स्टेप्स टू ब्राइट फ्यूचर', जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, दिल्ली में मार्च 2013 में प्रस्तुत किया गया।

- डे,एम.,(2012): बालवाड़ी ''कम्युनिटी बेस्ड प्री–स्कूल्स इन हिमालयन विलेजेस' सपोर्टिंग चिल्ड्रेन्स लर्निंग एंड डेवलपमेंटः होम, कम्युनिटिज एंड स्कूल्स'', (जकार्ता) इंडोनेशिया, 2012, नवंबर में प्रस्तुत।
- कॉल,वी (2012): ''क्वालिटी वेरिएशन्स इन ईईसी इन इंडिया' यह पेपर 'कम्पेरेटिव एंड इंटरनेशनल एजुकेशन सोसायटी' के सम्मेलन में प्रस्तुत किया गया। इसका आयोजन प्युर्तो रिको, यूएसए, 2012 में हुआ था।
- कोहली, पी (2013): ''स्टेटस ऑफ अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन इन इंडियाः ए स्नेपशॉट'' यह पेपर ''अर्ली चाइल्डहुड डेवलपमेंट'' स्माल स्टेप्स टू ब्राइट फ्यूचर', जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, दिल्ली में मार्च 2013 में प्रस्तुत किया गया।

2. परियोजना संकाय–

- अग्रवाल, आर.(2012): ''पैरेंटल चॉईसेस फॉर ईसीई सर्विसेज एंड देयर डिटरमिनेंटसः ए स्टडी इन रूरल राजस्थान'', सपोर्टिंग चिल्ड्रेन्स लर्निंग एंड डेवलपमेंटः होम, कम्युनिटिस एंड स्कूल्स', (जकार्ता) इंडोनेशिया नवंबर में प्रस्तुत।
- चड्ढा, पी (2012): ''चाइल्डकेयर प्रैक्टिसेज एट समस्तीपुर डिस्ट्रिक्ट', सपोर्टिंग चिल्ड्रेन्स लर्निंग एंड डेवलपमेंट, होम, कम्युनिटिज एंड स्कूल्स', (जकार्ता) इंडोनेशिया, 2012, नवंबर में प्रस्तुत।
- डोगरा, एम (2012): ''आर 4 ईयर ओल्ड्स इन प्रीस्कूल्स? ए स्टडी ऑफ ट्रेंड्स इन एनरोलमेंट, पार्टिसिपेन्ट एंड रिटेंशन इन ईसीई इन 2 डिस्ट्रिक्स ऑफ राजस्थान', सपोर्टिंग चिल्ड्रेन्स लर्निंग एंड डेवलपमेंटः होम, कम्युनिटिज एंड स्कूल्स', (जकार्ता) इंडोनेशिया, 2012, नवंबर में प्रस्तुत।
- कोचर, आर (2012): ''एक्सप्लोरिंग चाइल्डहुड इन प्रिज़न सेटिंग', सपोर्टिंग चिल्ड्रेन्स लर्निंग एंड डेवलपमेंटः होम, कम्युनिटिज एंड स्कूल्स', (जकार्ता) इंडोनेशिया, 2012, नवंबर में प्रस्तुत।
- महलवाल, दपी (2012): ''इफेक्टिव टीचिंग इन ईसीईः सम डिटरमिनेंट्स', सपोर्टिंग चिल्ड्रेन्स लर्निंग एंड डेवलपमेंटः होम, कम्युनिटिज एंड स्कूल्स', (जकार्ता) इंडोनेशिया, 2012, नवंबर में प्रस्तुत।

- पॉल, एस (2012): ''लोंगीट्यूडनल स्टडी ऑफ इम्पैक्ट ऑफ अर्ली लर्निंग, सोशलाइजेशन एंड स्कूल रेडीनेस एक्सपेरिएंसेस इन प्री–स्कूल सेटिंग्स ऑन एजुकेशनल एंड बिहेवियरल ऑउटकम्स अलोंग द प्राइमरी स्टेज'', सपोर्टिंग चिल्ड्रेन्स लर्निंग एंड डेवलपमेंटः होम, कम्युनिटिस एंड स्कूल्स', (जकार्ता) इंडोनेशिया, 2012, नवंबर में प्रस्तुत।
- शर्मा, डी (2013): ''मल्टी–लिंगुएलिस्मः ए चैलेंज ऑर पॉसिबिलिटी' यह पेपर 'अर्ली चाइल्डहुड डेवलपमेंट : स्माल स्टेप्स टू ब्राइट फ्यूचर', जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, दिल्ली में मार्च 2013 में प्रस्तुत किया गया।

आयोजित संगोष्ठी / सम्मेलन / कार्यशाला / व्याख्यान / वार्ताएं

संस्कृति और रचनात्मक अभिव्यक्ति अध्ययन शिक्षालय (एस.सी.सी.ई)

- जैन, एस. ने वढेरा आर्ट गैलरी, नई दिल्ली में जुलाई, 2012 को एक 'चित्रकला कार्यशाला' का आयोजन किया।
- संतोष, एस., पणिक्कर एवं के.शिवाजी ने बैंगलोर, 2010–2013 में 'क्यूरेटिंग इंडियन विजुअल कल्चरः थ्योरी एंड प्रैक्टिस' (ए सीरीज ऑफ फाइव ट्रैवेलिंग एंड ए कोलोकुयुएम ऑन क्यूरेशन, एन इनिशिएटिव ऑफ इंडिया फाउंडेशन फॉर द आर्ट्स) का आयोजन किया। इसी श्रृंखला की अंतिम कार्यशाला 'क्यूरेटिंग इंडियन विजुअल कल्चरः थ्योरी एंड प्रैक्टिस (थिमेटिक फोकसः आर्टिस्टिक प्रोडक्शन्स एंड क्वेश्चन्स ऑफ रीजन एंड आइडेंटिटी': क्यूरेटॉरिअल प्रोपोजिशन्स) को अम्बेडकर विश्वविद्यालय, दिल्ली में 9 से 13 अक्टूबर (2013) तक आयोजित किया गया।
- पणिक्कर एवं के.शिवाजी ने 'आर्ट एंड एक्टिविज्म इन इंडिया, एट वेस्ट हेवन्स फोरम' विषय पर 'रॉकबंड म्यूजियम', शंघाई, चीन में 29, नवंबर, 2012 को एक व्याख्यान प्रस्तुत किया।
- कंदलि, एम., को ''शांति का त्योहारः साहित्य / संस्कृति / राजनीति' पर लेखक एवं पैनेलिस्ट के रूप में चर्चा के लिए 'हेनरिक बॉएल फाउंडेशन, जुबान और इंडिया हैबिटैट सेंटर, दिल्ली द्वारा 18, जनवरी 2013 को आमंत्रित किया गया।
- कंदलि, एम, को शोधकर्ता के रूप में 'फिक्सिटी एंड फ्लुईडिटीः हिस्ट्री, पॉलिटिक्स एंड कल्चर ऑफ नॉर्थ ईस्ट इंडिया'' राष्ट्रीय कार्यशाला में विषयगत बात को पेश करने के लिए 18, मार्च, 2013 को सेंटर ऑफ सोशल साइंस, जेएनयू, दिल्ली, में आमन्त्रित किया गया।

- कंदलि, एम., को कलाकार/वास्तुकार इन्द्राणी बरुआ द्वारा तैयार की गयी एक परियोजना के मूल्यांकन के लिए आईएफए द्वारा आमंत्रित किया गया। ''गुवाहाटी में ब्रह्मपुत्र नदी पर विषयगत ध्यान देने एवं कलात्मक/सांस्कृतिक/विकासात्मक परियोजना के महत्वपूर्ण मूल्यांकन'' के लिए तीन दिन का आयोजन (21 से 24 अप्रैल तक) किया गया।
- कन्दलि, एम., को ''वायलेंस डबल स्प्रेडः फ्रॉम प्राइवेट टू पब्लिक लाइफ वर्ल्ड'', पैनेलिस्ट के रूप में पैनल चर्चा के लिए, एसएए ऑडिटोरियम, स्कूल ऑफ आर्ट एंड अस्थेटिक्स'' ,जेएनयू, नई दिल्ली में, 5 अक्टूबर, 2012 को आमंत्रित किया गया।
- कन्दलि, एम., को ''नॉर्थ ईस्ट वूमेन राइटर्स कांफ्रेंस'' में एक लेखक के तौर पर आमंत्रित किया गया। यह सम्मेलन एनईज़ेडसीसी के रजत जयंती के अवसर पर दिमापुर में सितम्बर 2012 में आयोजित किया गया, जो कि 'ए सेंट्रल गवर्नमेंट इनिशिएटिव फॉर प्रोमोशन एंड प्रिजर्वेशन ऑफ आर्ट, कल्चर एंड लिटरेचर ऑफ नार्थईस्ट' पर आधारित था।
- कन्दलि, एम., ''आइडेंटिटीः जैक–इन–द–बॉक्स'', 5वीं प्रबन्धकीय कार्यशाला में विषय प्रस्तुति। यह कार्यशाला एसीयूए, आईएफए एवं एस.सी.सी.ई द्वारा अम्बेडकर विश्वविद्यालय, दिल्ली में, 10 अक्टूबर,2012 को आयोजित की गयी।
- कन्दलि, एम.,''डेथ रेटल ऑफ रीजनः रजिनेन्स इन द आर्ट ऑफ नॉर्थ ईस्ट'', पेज नं–16–20, लीड एस्से, ललित कला कंटेम्पररी, वॉल्यूम. 53, नई दिल्ली, 2012।
- कन्दलि, एम., ''ए ब्लैक फ्राइडे एंड द स्पिरिट ऑफ शर्मिलाः प्रोटेस्ट आर्ट ऑफ नॉर्थ ईस्ट इंडिया'' पेज नं– 57–59, आर्ट्स ईटीसी. अंक 28 मई, 2012, कलकत्ता।

विकास अध्ययन शिक्षालय (एस.डी.एस)

- मुखर्जी ए.,ने ''अनपेड लेबरः मूविंग पास्ट द ब्लाइंड स्पॉट इन इकोनॉमिक्स'' पर 7 अगस्त, 2012 को व्याख्यान प्रस्तुत किया।
- बुरावॉय, एम., बर्कली विश्वविद्यालय से समाजशास्त्र के प्रख्यात प्रोफेसर और इंटरनेशनल सोशियोलॉजिकल एसोसिएशन' के अध्यक्ष ने ''न्यू सोशल थ्योरी फॉर न्यू सोशल मूवमेंट्स'' पर एक सार्वजनिक व्याख्यान 28 जनवरी, 2013 को दिया।
- हेलर, पी., वाटसन इंस्टिट्यूट के ''स्नातक विकास कार्यक्रम' के निर्देशक, ब्राउन विश्वविद्यालय, यू.एस. ''डेवलपमेंट ऐज डेमोक्रेसीः कम्पेरेटिव लेसंस फ्रॉम ब्राज़ील, इंडिया एंड साउथ अफ्रीका'' पर 26, फरवरी, 2013 को व्याख्यान प्रस्तुत किया।

- सक्सेना, ए., अवंति, नई दिल्ली, ''सोशल एन्ट्रेप्रेनियरशिप इन द एजुकेशन सेक्टर'' पर 19, फरवरी, 2013 को व्याख्यान प्रस्तुत किया गया।
- दामोदरन, एस., को ''आर्ट एंड सोशल मूवमेंट्स एंड द इनफॉर्मल सेक्टर इन इंडिया'' तीन व्याख्यानों की श्रृंखला में प्रस्तुति के लिए आमंत्रित किया गया। यह आयोजन बोगोटा विश्वविद्यालय, मेडेलिन एवं कार्टेजिना, कोलंबिया में जून 2012 को किया गया। इनमें से एक व्याख्यान 'पीएचडी प्रोग्राम प्रोग्रेस संगोष्ठी ' के उद्घाटन भाषण के रूप में मेडेलिन विश्वविद्यालय में प्रस्तुत किया गया।
- दामोदरन, एस, को समाजशास्त्र विभाग, ''केप्टाउन विश्वविद्यालय, साउथ अफ्रीका'', में एक महीने के लिए पढ़ाने हेतु अक्टूबर, 2012 में आमंत्रित किया गया था।
- दामोदरन, एस, को संगीत विभाग, ''हार्वर्ड विश्वविद्यालय' में ''संगीत और राजनीति'' (म्यूजिक एंड पॉलिटिक्स) विषय पर व्याख्यान देने के लिए, जून 2012 में आमंत्रित किया गया था।
- मंडल एस.के.,ने 82वें से लेकर 85वें तक के ओरिएंटेशन कोर्स में विश्वविद्यालय और विद्यार्थियों के लिए अकेडमिक स्टाफ कॉलेज, जेएनयू, नई दिल्ली में व्याख्यान दिए। यह व्याख्यान दिसंबर 2012 से मार्च 2013 तक निम्न विषयों पर प्रस्तुत किये गए – ''वैश्विक राजनीतिक अर्थव्यवस्था और सत्ता की पारी (82वें)'', 'भारत में तेल मूल्य निर्धारण (83वें), ''वैश्विक अर्थव्यवस्था सुधार के संकेत एवं दोगुनी मंदी (84वें), भारतीय अर्थव्यवस्था में वित्तीय संकट, ''वैश्विक अर्थव्यवस्था और चुनौतियाँ (85वें)''।
- मंडल एस.के., ने 'फंडामेंटल्स ऑफ मॉडल्स, सिस्टम्स एंड डायनामिक्सः ऑप्टिमाइजेशन मॉडल्स; मॉडलिंग फ्रेमवर्क इन मैट्रिक्स एलजेब्राः मल्टीप्लायर एंड इंकेज एनालिसिस इन ए विलेज लेवल स्टडी इन ए सोशल एकाउंटिंग मैट्रिक्स (एसएएम); एयर पोल्यूशन्स मॉडल्सः हेल्थ इम्पैक्ट वैल्यूएशन फॉर इंडिया 'विषयों पर कई सत्र आयोजित किये। इन सत्रों का आयोजन, ''मॉडलिंग इकोलॉजी एंड इकोनॉमी'' के अंतर्गत 'इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ फॉरेस्ट मैनेजमेंट (आईआईएफएम), भोपाल में 11 से 13 जनवरी (2013) तक हुआ।
- दामोदरन, एस, ने 'पी.सी जोशी व्याख्यानमाला' में उद्घाटन भाषण 'सेंटर फॉर हिस्टोरिकल स्टडीज, स्कूल ऑफ सोशल साइंसेज, जेएनयू, जनवरी, 2013 में प्रस्तुत किया।
- धर, आई., को ''असम के सांस्कृतिक संस्थानों के राजनीतिक दावे'' पर व्याख्यान प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित किया गया। ये कार्यक्रम 'नॉर्थ ईस्ट इंडिया स्टडीज प्रोग्राम', जेएनयू द्वारा 22 फरवरी 2013 को आयोजित किया गया।

शैक्षिक अध्ययन शिक्षालय (एस.ई.एस)

- माओ ए. के, ''सतत और व्यापक मूल्यांकन (कंटीन्यूअस एंड कम्प्रेहेंसिव इवैल्यूएशन, सीसीई)'' विषय पर 'दिल्ली में विद्यालय के शिक्षकों के लिए फोकस ग्रुप डिस्कशन', आह्वान ग्रुप एवं एयूडी के सहयोग से 21 और 22 मई, 2013 को आयोजित किया गया।
- माओ ए.के, ''शिक्षा–अधिकार का अधिनियम (राईट टू एज्यूकेशन एक्ट)'' विषय पर 'दिल्ली में विद्यालय के शिक्षकों के लिए फोकस ग्रुप डिस्कशन', आह्वान ग्रुप एवं एयूडी के सहयोग से 11 अगस्त, 2012 को आयोजित किया गया।
- बनर्जी, आर., महाराज ए.,''मैथमेटिक्स ई–लर्निंग एंड असेसमेंटः ए साउथ अफ्रीकन कंटेक्सट'', एयूडी, नवंबर 2013.
- बनर्जी, आर.,मुकुन्द के., ''बुद्धिमत्ताः शिक्षकों के लिए एक मनोवैज्ञानिक परिचय'', एयूडी, जनवरी 2013.
- बनर्जी, आर., बत्रा पी., ''एज्यूकेटिंग टीचर्स : द पॉलिसी –प्रैक्टिस इन्टरफेस'', एयूडी, मार्च 2013
- गुरुस्वामी, एम., ''सुप्रीम कोर्ट केस सोसायटी फॉर अनऐडेड प्राइवेट स्कूल्स ऑफ राजस्थान वर्सेज यूनियन ऑफ इंडिया एंड अदर्स'', एयूडी, अक्टूबर 2012।
- जैन, एम., सारंगपाणि एवं राहुल मुखोपाध्यायः ''तुलनात्मक शिक्षा और इसकी चुनौतियों की फिर से कल्पना'' विषय पर कार्यशाला का आयोजन 'तुलनात्मक शिक्षा विभाग', ''जम्मू विश्वविद्यालय में 9 अक्टूबर, 2012 को हुआ।
- जैन, एम., ''शिक्षा और सामाजिक विज्ञान का इतिहास'' विषय पर कार्यशाला का आयोजन, अज़ीम प्रेमजी संस्थान (एपीएफ) एवं एकलव्य, होशंगाबाद में 19–21 दिसंबर (2012) तक किया गया।
- जैन, एम., ''नेचर एंड पेडागोजी ऑफ सोशल–साइंसेज इन VIII सर्टिफिकेट प्रोग्राम इन फाउंडेशन्स ऑफ एज्यूकेशन' विषय पर कार्यशाला का आयोजन, 'दिगन्तर', जयपुर में 8–10 दिसंबर (2012) तक किया गया।
- जैन, एम.,'पॉलिसी एंड एजुकेशन इन VIII सर्टिफिकेट प्रोग्राम इन फाउंडेशनस ऑफ एज्यूकेशन'' विषय पर कार्यशाला का आयोजन, 'दिगन्तर', जयपुर में, 24–26 जनवरी (2013) तक किया गया।
- जैन, एम., ''सोशल साइंस एज्यूकेशन कोर्सेज (2) फॉर एमए एज्यूकेशन प्रोग्राम'' विषय पर परामर्श कार्यशाला का आयोजन, भोग, डिप्टा एटल में, 25 मार्च 2013 को किया गया।

- खालिक़, एम. ए.,''ए टीचर्स पर्सपेक्टिव्स ऑन स्कूल एंड एव्रीडे कुरिकुलर प्रैक्टिस'', एयूडी, मार्च 2013.
- नवानी, एम. टी ''लर्निंग कैलकुलस विदआउट लिमिट्स'', विषय पर सी.के. राजू के साथ कार्यशाला का आयोजन, मई 2012 में किया गया।
- सान्याल, के., ''प्रोपोस्ड चेंजेस इन द रेगुलेटरी स्ट्रक्चर ऑफ हायर एज्यूकेशन एंड द पोसिबल चेलेंजेज', एयूडी,जनवरी 2013।
- शर्मा, जी., पंचपाकेसन, एन., एवं सिंह, ए. के.,''सतत और व्यापक मूल्यांकन (कंटीन्यूअस एंड कम्प्रेहेंसिव इवैल्यूएशन, सीसीई)' विषय पर ''कार्यशाला, आह्वान ट्रस्ट और एयूडी द्वारा मई, 2012 को आयोजित की गयी।
- श्रीवास्तव, ए.बी.एल., एवं सिंह,ए.के., ''एनालाइज़िंग मिनिमम लेवल्स ऑफ लर्निंग (एमएलएल) एंड कंटेम्पररी डायरेक्शन्स ऑफ कुरिकुलर पॉलिसी'', एयूडी, मार्च 2013।
- जैन, एम., 'इश्यूज एमर्जिंग फ्रॉम रीसेंट कोंट्रोवर्सी इन पॉलिटिकल साइंस टेक्स्टबुक्सः पेडागोजिक एंड सोशल इम्प्लिकेशन्स'', विषय पर पैनल चर्चा, टाटा इंस्टिट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज,मुम्बई,जून,2012।
- जैन, एम.,''भारत में सार्वजनिक और निजी शिक्षाः एक ऐतिहासिक अवलोकन'', एनयूईपीए, नई दिल्ली, मार्च 2013।

मानव पारिस्थितिकी अध्ययन शिक्षालय (एस.एच.ई)

- एस.एच.ई संकाय में डॉ. रोहित नेगी एवं सुरेश बाबू के नेतृत्व में प्रकृति, ज्ञान, शक्ति मानव पारिस्थितिकी पर संगोष्ठी 14, दिसंबर 2012 को आयोजित की गयी।
- नेगी,आर., ''अफ्रीका में एशियाई अध्ययन'' जाम्बिया विश्वविद्यालय, ल्यूसाका, के अंतरराष्ट्रीय गोलमेज सम्मेलन में एक रिसोर्स पर्सन के रूप में मौजूद थे। ये सम्मेलन 9–11 नवम्बर, 2012 को आयोजित हुआ था।
- नेगी, आर., ''कंस्ट्रक्टिव कन्टेस्टेशन अराउंड अर्बन हेरिटेज इन ताइपेइः ए न्यू एप्रोच फॉर एशियन सिटीज?', राष्ट्रीय ताइवान विश्वविद्यालय एवं एशियाई अध्ययन अंतरराष्ट्रीय संस्थान, ताइपेइ के अंतरराष्ट्रीय गोलमेज सम्मेलन में एक रिसोर्स पर्सन के रूप में मौजूद थे। ये सम्मेलन 7–10, अक्टूबर 2012 को आयोजित हुआ था।
- नेगी, आर., ''नए ताम्रपूर्ण क्षेत्र में स्थान और विकास की राजनीति'', जाम्बियाः 2014: राष्ट्रीयता का आख्यान, ये कार्यक्रम जाम्बिया विश्वविद्यालय, ल्यूसाका में 12 सितम्बर, 2012 को आयोजित हुआ।

- नेगी, आर., 'द माइनिंग बूमः कैपिटल एंड चीफ्स इन जाम्बियाज़ न्यूकॉपर बेल्ट, ये कार्यक्रम ऑस्ट्रेलियन नेशनल यूनिवर्सिटी, कैनबरा में 19 जून 2012 को आयोजित हुआ।
- नेगी, आर., 'वैश्विक अध्ययन संघ की बैठक'' में सहभागी के रूप में उपस्थित थे। यह कार्यक्रम मेलबॉर्न, ऑस्ट्रेलिया में 14–17 जून,2012 को आयोजित हुआ था।
- सिंह, पी., 2012, ''वैश्विक अध्ययन संघ की बैठक'', मेलबॉर्न, ऑस्ट्रेलिया, 14–17 जून, 2012।
- काबरा,ए., ''संरक्षण, आजीविका और विस्थापन'' और ''ट्रेड–ऑफर्स एंड लिंकेज इन इकोसिस्टम सर्विसेज'' इंडिया–यू.के. की संगोष्ठी–चर्चा में पैनेलिस्ट के रूप में उपस्थित। यह संगोष्ठी द रॉयल सोसायटी, यू.के., डीएसटी, इंडिया, 'द एनर्जी एंड रिसोर्सेज इंस्टिट्यूट', नई दिल्ली एवं स्कूल ऑफ जियोग्राफी एंड द एनवायरनमेंट, ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय, यू.के. द्वारा आयोजित की गयी।
- काबरा, ए., ''कन्ज़र्वेशन एंड लाइवलीहुड्स एट बायोडायवर्सिटी एशिया 2012'' अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में विचार–गोष्ठी का सह–आयोजन। यह कार्यक्रम 'सोसायटी फॉर कन्ज़र्वेशन बायोलॉजी द्वारा आयोजित किया गया। (अगस्त 2012)।
- काबरा, ए., ''ग्रामीण क्षेत्र कार्य के लिए पीआरए एवं आरआरए की विधियां'' इस कार्यशाला का आयोजन संरक्षण विज्ञान पर छात्र सम्मेलन' के अंतर्गत बैंगलोर में अगस्त 2012 को किया गया।
- नेगी, आर., ''सुंदरवनः वन, समाज, सीमा'' सम्मेलन में चर्चा कर्ता के रूप में उपस्थित। यह कार्यक्रम नेहरू मेमोरियल म्यूजियम एंड लाइब्रेरी में 6–7 जुलाई 2012 को आयोजित हुआ।
- काबरा, ए., ने 46वें पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में अर्थशास्त्र पर व्याख्यान दिया। इस कार्यक्रम का आयोजन अकेडमिक स्टाफ कॉलेज,जेएनयू,नई दिल्ली में नवम्बर 2012 को हुआ।
- काबरा, ए.,''नदियां और बाढ़ के मैदानः ब्रह्मपुत्र जलकुंड में प्राकृतिक परिदृश्य और पहचान' सम्मेलन में चर्चाकर्ता के रूप में उपस्थित। यह कार्यक्रम एनएमएमएल में 26–27 नवंबर 2012 को आयोजित किया गया।
- काबरा, ए., ''सीईएसपी–जेएनयू यंग स्कॉलर्स संगोष्ठी'' में चर्चाकर्ता के रूप में उपस्थित। इसका आयोजन जेएनयू, नई दिल्ली में 3 मार्च 2013 को हुआ।
- देवी, एच.ओ., 2012, ''नृविज्ञान विभाग में पर्यावरण और स्वास्थ्य'' पर संगोष्ठी वार्ता, विद्यासागर विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल में 28 नवंबर को आयोजित हुई।

मानव अध्ययन शिक्षालय (एसएचएस)

- जौहरी, आर., ''वादा तो वादा हैः महिलाओं के खिलाफ हिंसा को समाप्त करने का समय'' विषय पर परामर्श देने के लिए पैनेलिस्ट रूप में उपस्थित। ये कार्यक्रम एचआरएलएन एवं मैत्री द्वारा 18 मार्च को दिल्ली में आयोजित किया गया।
- नगालिया ,एस.,''आवाज़ः ए कॉन्फ्लुएंस ऑफ वॉइसेस ऑफ पेशेंटहुड एंड हीलिंग'' सम्मेलन में चर्चाकर्ता के तौर पर आमन्त्रित। ये कार्यक्रम 'विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस पर 'एहसास साइकोथेरेपी क्लिनिक, मानव अध्ययन शिक्षालय (एसएचएस), अम्बेडकर विश्वविद्यालय, दिल्ली द्वारा 10–11 अक्टूबर 2012 को आयोजित किया गया।
- सेन, आर., ''सोशल प्रैक्टिसेज एंड मेकिंग एंड अनमेकिंग ऑफ लॉस रिलेटेड टू जेंडर'' की पैनल चर्चा में आमंत्रित। ये आयोजन 'अन्वेषण, दिल्ली' द्वारा मार्च 2013 में किया गया।
- सेन, आर., ''समकालीन सामाजिक आंदोलन'', यह कार्यक्रम राजनीतिक विज्ञान विभाग, रामजस कॉलेज', दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा मार्च 2013 को आयोजित किया गया।
- सेन, आर., ''लिंगः कानून, मीडिया और राजनीति'', समाजशास्त्र विभाग, हिन्दू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में पैनल चर्चा, फरवरी 2013 को आयोजित की गयी।
- सेन, आर., ''इनजेंडरिंग डिग्निटीः जेंडर जस्टिस, क्रिमिनल लॉ एंड वर्मा कमेटी रिपोर्ट'', अम्बेडकर विश्वविद्यालय, दिल्ली में पैनल चर्चा फरवरी 2013 को आयोजित की गयी।
- सेन, आर., ''भारतीय महिला आंदोलन और कानून के साथ अपनी वचनबद्धता'', ये कार्यक्रम 'वूमेन्स डेवलपमेंट सेल' कालिंदी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा अक्टूबर 2012 में आयोजित किया गया।
- सिंह, आर., ''आत्म–अवधारणा, सकारात्मक सोच, व्यवहार में परिवर्तन और आक्रामकताः संघर्ष के संकल्प'',अम्बाला में किशोरों के लिए अवलोकन गृह' के अंतर्गत कई सत्रों का संचालन किया गया। यह आयोजन कुरुक्षेत्र विश्वविद्याल द्वारा मई 2012 में हुआ।

ललित अध्ययन शिक्षालय (स्कूल ऑफ लिबरल स्टडीज, एसएलएस)

- आलोक भल्ला ने साहित्य अकादमी के लिए एक संगोष्ठी का आयोजन 2012 में किया, जिसका विषय था ''समकालीन भारतीय सभ्यता और इसके असंतोष''।

- आलोक भल्ला ने साहित्य अकादमी के लिए एक संगोष्ठी का आयोजन 2012 में किया, जिसका विषय था ''आधुनिक भारतीय शास्त्र क्या हैं (व्हॉट इज ए मॉडर्न इंडियन क्लासिक)''।
- आलोक भल्ला ने साहित्य अकादमी के लिए एक संगोष्ठी का आयोजन 2012 में किया, जिसका विषय था ''भारतीय साहित्य में प्यार, विश्वासघात और मौत की दास्तान''.
- तनुजा कोठियाल ने ''वन, समाज, सीमाः डेल्टा बंगाल में पुर्नवलोकन के मुद्दे'' की कार्यशाला में ''विकास, परिदृश्य और भविष्य' के सत्र की अध्यक्षता की। यह कार्यशाला सेंटर फॉर कंटेम्पररी स्टडीज, नेहरू मेमोरियल म्यूजियम एंड लाइब्रेरी,नई दिल्ली द्वारा जुलाई 2012 में आयोजित की गयी थी।
- डेनिस पी.लेइटन को ''मैक्स– वेबर एंड द प्रोटेस्टेंट एथिक्स री–विजिटेड'' पर आख्यान देने के लिए आमंत्रित किया गया। यह कार्यक्रम आई.पी.कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में इतिहास के विद्यार्थियों एवं संकाय के लिए 10 अक्टूबर 2010 को आयोजित किया गया था।
- डेनिस पी.लेइटन को ''आफ्टर नेशन रेस : लेट विक्टोरियन फैंटसीस ऑफ स्टेट एंड एनार्की इन मोरिशस न्यूज़ फ्रॉम नोवेयर (1891) एंड रिचर्ड जेफरीज़'', आफ्टर लंदनः ऑर वाइल्ड इंग्लैंड(1885), विषय पर इतिहास व्याख्यान श्रृंखला में प्रस्तुति देने के लिए 31 अक्टूबर 2012 को आमंत्रित किया गया।
- डेनिस पी. लेइटन ने ''यूरोपीय इतिहास की एक समस्या के रूप में यूरोप की पहचान विषय पर गार्गी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों एवं संकाय के लिए 7,मार्च 2013 को एक व्याख्यान दिया।
- रुक्मिणी सेन ने ''सोशल प्रैक्टिसेज एंड मेकिंग एंड अनमेकिंग ऑफ लॉस रिलेटेड टू जेंडर'' विषय पर व्याख्यान दिया। यह कार्यक्रम (पैनल चर्चा) अन्वेषण, दिल्ली द्वारा मार्च, 2013 को आयोजित किया गया।
- रुक्मिणी सेन ने ''लिंग कानून, मीडिया और राजनीति'', समाजशास्त्र विभाग, हिन्दू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, (पैनल चर्चा) फरवरी 2013 में व्याख्यान प्रस्तुत किया।
- रुक्मिणी सेन ने ''भारतीय महिला आंदोलन और कानून के साथ अपनी वचनबद्धता'', विषय पर वूमेन्स डेवलपमेंट सेल कालिंदी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय ,अक्टूबर 2012 में व्याख्यान दिया।
- सुरजीत मजूमदार ने ''उभरते भारत में राज्य, पूंजी और विकास पर एक विशेष व्याख्यान प्रस्तुत किया। यह कार्यक्रम ''ओकेडी इंस्टिट्यूट ऑफ सोशल चेंज एंड डेवलपमेंट'', गुवाहाटी में 3 जनवरी 2013 को आयोजित हुआ था।

- सुरजीत मजूमदार ने ''उभरते भारत में कॉरपोरेट सेक्टर, वैश्विक संकट और विकास कुछ सवाल और चिंताएं'' शीर्षक पर मुख्य व्याख्यान भारतीय निगम उम्मीद और चुनौती संगोष्ठी में प्रस्तुत किया। यह संगोष्ठी चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ के अर्थशास्त्र विभाग द्वारा 14 दिसंबर, 2012 को आयोजित की गयी थी।
- सुरजीत मजूमदार ''बिग बिजनेस एंड पोलिटिकल क्लास क्रोनिएइस्म दैन एंड नाउ' पैनल में वक्ता के रूप में आमंत्रित थे। यह कार्यक्रम इंस्टिट्यूट फॉर स्टडीज इन इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट में 29 नवंबर 2012 को आयोजित हुआ था।
- सुरजीत मजूमदार ''कौन से कारण हैं कि भारत को अपनी प्रत्यक्ष विदेशी निवेश नीति (एफडीआई) पर एक बार फिर से विचार करना चाहिए'' पैनल चर्चा में वक्ता के रूप में आमंत्रित थे। यह कार्यक्रम 'इंस्टिट्यूट फॉर स्टडीज इन इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट' में 1 मई 2012 को आयोजित हुआ था।
- सुरजीत मजूमदार ने यूजीसी द्वारा प्रायोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी ''इंडियन लाइवलीहुड इन द कंटेक्स्ट ऑफ एफडीआई इन रिटेल सेक्टर'' में मुख्य अथिति के रूप में उद्घाटन व्याख्यान प्रस्तुत किया। इस संगोष्ठी का आयोजन डिपार्टमेंट ऑफ कॉमर्स, खैरा कॉलेज, खैरा एवं ए.बी.कॉलेज, बासुदेवपुर द्वारा खैरा कॉलेज, खैरा, बालासोर में 24 मार्च 2013 को किया गया।
- सुरजीत मजूमदार ने ''विदेशी निवेश और भुगतान संतुलन'' विषय पर व्याख्यान दिया। 'दिल्ली कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड कॉमर्स', दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली में 2 अप्रैल 2012 को यह कार्यक्रम आयोजित किया गया।
- सुरजीत मजूमदार ने 'भारत के व्यापक आर्थिक संकट की संरचना जड़ें ''पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में अर्थशास्त्र पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। इस कोर्स का आयोजन अकेडमिक स्टाफ कॉलेज, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय द्वारा 19 मार्च 2013 को किया गया।
- सुरजीत मजूमदार ने ''उभरते भारत में कॉरपोरेट सेक्टर, वैश्विक संकट और विकासः कुछ सवाल और चिंताएं'' शीर्षक पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। यह कार्यक्रम आईसीएसएसआर द्वारा प्रायोजित 'रिसर्च मेथोडोलोजी एंड प्रोजेक्ट फार्मूलेशन, प्रशिक्षण प्रोग्राम पर आधारित था। इसका आयोजन आईएसआईडी में 9 जनवरी 2013 को हुआ।
- सुरजीत मजूमदार ने ''भारत के वर्तमान आर्थिक संकट'' पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में अर्थशास्त्र पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। इस कोर्स का आयोजन अकेडमिक स्टाफ कॉलेज, जामिया मिलिया इस्लामिया द्वारा 28 जुलाई 2012 को हुआ।

- अमितेश मुखोपाध्याय ने ''वन, समाज, सीमाः डेल्टा बंगाल में पुर्नलोकन के मुद्दे'' विषय पर कार्यशालाका आयोजन किया। यह कार्यशाला नेहरू मेमोरियल म्यूजियम एंड लाइब्रेरी, नई दिल्ली में 6–7 जुलाई 2012 को आयोजित की गयी थी।
- योगेश स्नेही ने इतिहास के सम्भाषण में ''हर दिन का महत्व है'' शीर्षक पर गार्गी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के लिए 18 फरवरी 2013 को एक व्याख्यान प्रस्तुत किया।
- योगेश स्नेही ने ''हिस्ट्रीसिटी ऑरेलिटी एंड सोशल मेमोरीः पॉपुलर पोयेटी, रिचुअल्स, श्राइन्स इन ऐव्रीडे काउंटर–मॉडर्निटीज़ ऑफ कंटेम्पररी पंजाब' विषय पर 'दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स के समाजशास्त्र विभाग के एम. फिल. छात्रों के लिए 17 अक्टूबर 2012 को व्याख्यान प्रस्तुत किया।
- योगेश स्नेही ने ''सूफी श्राइन्स इन पोस्ट–पार्टीशन पंजाब ? ड्रीम्स, मेमोरी एंड कंटीन्यूटीस'' शीर्षक पर व्याख्यान दिया। इस कार्यक्रम का आयोजन डिपार्टमेंट ऑफ हिस्ट्री एंड कल्चर, जामिया मिलिया इस्लमिया द्वारा 18 अक्टूबर 2012 को किया गया।
- चिरश्री दास गुप्ता ने ''संस्थाएं और संचयीकरणः स्वतंत्र भारत में परिवार,व्यापार समूह एवं राज्य'' विषय पर 'साउथ एशिया विश्वविद्यालय, नई दिल्ली में 18 सितम्बर 2012 को व्याख्यान प्रस्तुत किया।
- चिरश्री दास गुप्ता ने ''स्वतंत्र भारत में संस्थाओं की राजनीतिक अर्थव्यवस्था और संचयीकरण'' शीर्षक पर 'अकेडमिक स्टाफ कॉलेज, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय' में 21 मार्च 2013 को व्याख्यान दिया।
- गीता वेंकटरमन ने ''मेन्टल मैथमेटिक्स एंड मैथमेटिक्स एक्टिविटीज फॉर प्राइमरी स्कूल'' कार्यशाला में 'दिल्ली पब्लिक स्कूल' के गणित के शिक्षकों (प्राइमरी स्तरीय) के लिए विशेष व्याख्यान प्रस्तुत किया।
- गीता वेंकटरमन ने ''रामानुजन : द मैन हू न्यू इनफिनिटी'' विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। यह कार्यक्रम ''डिपार्टमेंट ऑफ साइंस एवं टेक्नोलॉजी'' द्वारा प्रायोजित 'डीएसटी –इन्सपायर' श्रृंखला के एक भाग के रूप में माध्यमिक विद्यालयों के उन छात्रों के लिए आयोजित किया गया था जिनकी विज्ञान में विशेष रूचि है। यह कार्यक्रम देशबन्धु कॉलेज और हंसराज कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में दिसंबर 2012 को आयोजित किया गया।
- गीता वेंकटरमन ने ''समूह और समरूपता'' शीर्षक पर 'मैथमेटिक्स फेस्टिवल' के ' इंटीग्रेशन' में उद्घाटन भाषण दिया। यह कार्यक्रम सेंट स्टीफेन कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में फरवरी 2013 को आयोजित किया गया।

- गीता वेंकटरमन ने 'मैथमेटिक्स एंड क्रिप्टोग्राफी' विषय पर 'दिल्ली पब्लिक विद्यालयों' के वरिष्ठ माध्यमिक गणित शिक्षकों के लिए व्याख्यान प्रस्तुत किया। यह व्याख्यान एक प्रशिक्षण कार्यशाला के दौरान फरवरी 2013 में दिया गया। मैथमेटिक्स फेस्टिवल में यही वक्तव्य उद्घाटन सत्र में प्रस्तुत किया गया, जिसका आयोजन मिरांडा हाउस, दिल्ली विश्वविद्यालय में मार्च 2013 को हुआ था।
- गोपालजी प्रधान ने ''डॉ. रामविलास शर्मा शताब्दी समिति'' के संयोजक के रूप में एक दिन की राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन साहित्य अकादमी, नई दिल्ली में 22 जुलाई 2012 को किया।
- सत्यकेतु सांकृत ने ''अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़े वर्गों के विकास में उच्च शिक्षा की भूमिका'' संगोष्ठी में एक सत्र की अध्यक्षता की। इस संगोष्ठी का आयोजन 'सरकारी तिलक कॉलेज', कटनी ,मध्य प्रदेश में 27–28 फरवरी 2013 को किया गया।
- सत्यकेतु सांकृत ने ''दलित अभिव्यक्तिः हिंदी का दूसरा समय'' (दलित एक्सप्रेशंस : द अदर फेज ऑफ हिंदी) विषय पर 'महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय', वर्धा में 2 फरवरी को व्याख्यान प्रस्तुत किया।
- सत्यकेतु सांकृत ने ''अनुसंधान प्रविधियां और पाठालोचन'' विषय पर 'पुनश्चर्या पाठ्यक्रम' के प्रतिभागियों के लिए हिंदी में व्याख्यान प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम का आयोजन यूजीसी–एएससी आरडीवीवी, जबलपुर द्वारा 13 फरवरी 2013 को किया गया।
- सत्यकेतु सांकृत ने ''स्वतंत्रता पूर्व हिंदी उपन्यास में ग्रामीण यथार्थ'' (रिप्रेजेंटेशन ऑफ द रूरल प्री–इंडिपेंडेंस हिंदी नॉवेल) विषय पर व्याख्यान दिया। इस कार्यक्रम का आयोजन हिंदी विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ द्वारा 27 सितम्बर 2012 को किया गया।

आई.टी सेवाएं :–

- दो दिवसीय कार्यशाला ''ई–लर्निंग : मूडल सॉफ्टवेयर'' के लिए विशेषज्ञों को आमंत्रित किया गया। यह कार्यशाला विश्वविद्यालय के शिक्षकों को संबोधित करने के लिए (24–25 अप्रैल 2012) आयोजित की गयी थी। इस कार्यशाला का आयोजन मौलाना आज़ाद उर्दू विश्वविद्यालय, हैदराबाद द्वारा किया गया था।

- कॉलेज व्याख्याताओं के लिए पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में विशेषज्ञों को आमंत्रित किया गया। यह कार्यक्रम उभरते हुए मुद्दों 'टीचिंग एंड लर्निंग टूल्स (शिक्षण और अधिगम के उपकरण)' पर प्रतिभागियों को संबोधित करने के लिए (मई 11–12, 2012) आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन यूजीसी, अकेडमिक स्टॉफ कॉलेज, हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद द्वारा किया गया।
- कॉलेज व्याख्याताओं के लिए ओरिएंटेशन (उन्मुखीकरण) कार्यक्रम में विशेषज्ञों को आमंत्रित किया गया। यह कार्यक्रम उभरते हुए मुद्दों 'ई–लर्निंगः मूडल' पर प्रतिभागियों को संबोधित करने के लिए (जुलाई 5–6, 2012) आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन यूजीसी, अकेडमिक स्टॉफ कॉलेज, हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद द्वारा किया गया।
- कॉलेज व्याख्याताओं के लिए ओरिएंटेशन (उन्मुखीकरण) कार्यक्रम में विशेषज्ञों को आमंत्रित किया गया। यह कार्यक्रम उभरते हुए मुद्दों 'ई–लर्निंगः मूडल' पर प्रतिभागियों को संबोधित करने के लिए (जुलाई 24–25, 2012) आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन यूजीसी, अकेडमिक स्टॉफ कॉलेज, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी द्वारा किया गया।
- कॉलेज व्याख्याताओं के लिए ओरिएंटेशन (उन्मुखीकरण) कार्यक्रम में विशेषज्ञों को आमंत्रित किया गया। यह कार्यक्रम उभरते हुए मुद्दों 'मूडल' पर प्रतिभागियों को संबोधित करने के लिए (अगस्त 24–25, 2012) आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन यूजीसी, अकेडमिक स्टॉफ कॉलेज, हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद द्वारा किया गया।
- दो दिवसीय कार्यशाला' ई–लर्निंगः मूडल सॉफ्टवेयर'' के लिए विशेषज्ञों को आमंत्रित किया गया। यह कार्यशाला सालवन एजुकेशनल ट्रस्ट के माध्यमिक एवं वरिष्ठ माध्यमिक शिक्षकों को सम्बोधित करने के लिए (सितम्बर 15–16, 2012) को आयोजित की गयी थी। इस कार्यशाला का आयोजन सालवन एजुकेशनल ट्रस्ट द्वारा किया गया।
- कॉलेज व्याख्याताओं के लिए 78वें उन्मुखीकरण कार्यक्रम (ओरिएंटेशन प्रोग्राम) में विशेषज्ञों को आमंत्रित किया गया। यह कार्यक्रम उभरते हुए मुद्दों 'रोल ऑफ ओपन सोर्स लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम्स (मूडल)' पर प्रतिभागियों को संबोधित करने के लिए (अक्टूबर 6–7, 2012) आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन यूजीसी, अकेडमिक स्टॉफ कॉलेज, हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद द्वारा किया गया।

- व्यावसायिक विकास कार्यक्रम ''क्वालिटी एश्योरेंस इन हायर एजुकेशन'' के लिए विशेषज्ञों को बुलाया गया। यह कार्यक्रम डिग्री कॉलेज / पोस्ट–ग्रेजुएट डिग्री कॉलेज एवं विश्वविद्यालय के संकाय को सम्बोधित करने के लिए (फरवरी 8–9, 2013) आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन मौलाना आज़ाद उर्दू विश्वविद्यालय, हैदराबाद द्वारा किया गया था।
- मेंबर ऑफ द एम्पॉवर्ड कमेटी टू ओवरसीज टेक्निकल इवेल्यूशन एंड प्रोक्योर्मेंट ऑफ सॉफ्टवेयर फॉर कंप्यूटरलाइज़ेशन ऑफ ऐडमिनिस्ट्रेशन एंड प्रोजेक्ट मैनेजमेंट, हैदराबाद विश्वविद्यालय (20 फरवरी 2013)
- प्रबंधन अध्ययन में कॉलेज व्याख्याताओं एवं पुनश्चर्या पाठ्यक्रम के लिए 80वें उन्मुखीकरण कार्यक्रम (ओरिएंटेशन प्रोग्राम) में विशेषज्ञों को आमंत्रित किया गया। यह कार्यक्रम उभरते हुए मुद्दों ''रोल ऑफ ओपन सोर्स लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम्स (मूडल)'' पर प्रतिभागियों को संबोधित करने के लिए (मार्च 9–10, 2013) आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन यूजीसी, अकेडमिक स्टॉफ कॉलेज, हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद द्वारा किया गया।

पीएचडी शोध–प्रबंध का मूल्यांकन

- डॉ. के. श्रीनिवास ने ''सॉफ्टवेयर रिलायबिलिटी एस्टीमेशन यूज़िंग डाटा क्लासिफिकेशन टेक्निक्स'' पीएचडी शोध–प्रबंध का मूल्यांकन किया। यह शोध–प्रबंध एम.वी.पी. चंद्रशेखर राव द्वारा (फैकल्टी ऑफ कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग जवाहरलाल नेहरू टेक्नोलॉजी, विश्वविद्यालय, हैदराबाद) प्रस्तुत किया गया था।

परिशिष्ट–ज

विश्वविद्यालय के शिक्षक

(31 मार्च 2013 तक)

प्रोफेसर	विषय	शिक्षालय (स्कूल)
आलोक भल्ला	अंग्रेजी	एस.यू.एस / एस.एल.एस
कुरियाकोस मंकूट्टम	प्रबंधन	एस.बी.पी.पी.एस.ई
श्याम बी.मेनन	शिक्षा	एस.ई.एस
सलिल मिश्र	इतिहास	एस.एल.एस
चन्दन मुखर्जी	अर्थशास्त्र	एस.डी.एस / एस.एच.ई
अशोक नागपाल	मनोविज्ञान	एस.एच.एस
शिवाजी के. पणिक्कर	विजुअल आर्ट्स	एस.सी.सी.ई
सत्यजीत सिंह	राजनीति विज्ञान	एस.एच.एस
हनी ओबेरॉय वहाली	मनोविज्ञान	एस.एच.एस
गीता वेंकटरमन	गणित	एस.एल.एस
जतिन भट्ट	डिज़ाइन	एस.डी

एसोसिएट प्रोफेसर	विषय	शिक्षालय (स्कूल)
प्रिया भगोवालिया	अर्थशास्त्र	एस.यू.एस / एस.एल.एस
किरणमयी भुषि	समाजशास्त्र	एस.यू.एस / एस.एल.एस
सुमंगला दामोदरन	अर्थशास्त्र	एस.डी.एस
धीरेन्द्र दत्त डंगवाल	इतिहास	एस.यू.एस / एस.एल.एस
चिरश्री दास गुप्ता	अर्थशास्त्र	एस.यू.एस / एस.एल.एस
अनूप कुमार धर	मनोविज्ञान	एस.एच.एस
रचना जौहरी	मनोविज्ञान	एस.एच.एस
अस्मिता काबरा	पारिस्थितिकी	एस.एच.ई
सुब्रत कुमार मंडल	अर्थशास्त्र	एस.डी.एस

सुरजीत मजूमदार	अर्थशास्त्र	एस.यू.एस / एस.एल.एस
अमितेश मुखोपध्याय	समाजशास्त्र	एस.यू.एस / एस.एल.एस
गोपालजी प्रधान	हिंदी	एस.यू.एस / एस.एल.एस
सत्यकेतु सांकृत	हिंदी	एस.यू.एस / एस.एल.एस
गज़ाला शाहबुद्दीन	पारिस्थितिकी	एस.एच.ई
संजय कुमार शर्मा	इतिहास	एस.यू.एस / एस.एल.एस
डायमंड ओबेरॉय वहाली	अंग्रेजी	एस.यू.एस / एस.एल.एस
दीपन शिवरमन	परफॉर्मिंग आर्ट	एस.सी.सी.ई
सुचित्रा बालसुब्रह्मण्यन		एस.डी
मिलिंद वाकणकर		एस.सी.सी.ई

सहायक प्राध्यापक	विषय	शिक्षालय (स्कूल)
कँवल अनिल	प्रबंधन	एस.बी.पी.पी.एस.ई
गुन्जीत अरोड़ा	अंग्रेजी	एस.यू.एस / एस.एल.एस
सुरेश बाबू	पारिस्थितिकी	एस.एच.ई
अरिंदम बनर्जी	अर्थशास्त्र	एस.यू.एस / एस.एल.एस
राखी बनर्जी	शिक्षा	एस.ई.एस
तपोसिक बनर्जी	अर्थशास्त्र	एस.एल.एस
अभिजीत सुरेशराव बर्डपुर्कर	शिक्षा	एस.ई.एस
मीनकेतन बेहेरा	अर्थशास्त्र	एस.यू.एस / एस.एल.एस
ज्योतिर्मय भट्टाचार्य	अर्थशास्त्र	एस.एल.एस
रचना चौधरी	मनोविज्ञान	एस.एच.एस
सयनदेब चौधरी	अंग्रेजी	एस.यू.एस / एस.एल.एस
बिधान चन्द्र दास	समाजशास्त्र	एस.यू.एस / एस.एल.एस
ओइनम हेमलता देवी	मनोविज्ञान	एस.एच.एस
थोकचोम बिबिनाज़ देवी	मनोविज्ञान	एस.एच.एस
आइवी धर	राजनीति विज्ञान	एस.डी.एस
राधिका गोविन्द	मनोविज्ञान	एस.एच.एस

अंशु गुप्ता	प्रबंधन	एस.बी.पी.पी.एस.ई
मनीष जैन	शिक्षा	एस.ई.एस
लोवितोली जिमो	समाजशास्त्र	एस.एच.एस
गंगमुमेई कामेई	मनोविज्ञान	एस.एच.एस
अपर्णा कपाड़िया	इतिहास	एस.यू.एस / एस.एल.एस
ममता करोल्लिल	मनोविज्ञान	एस.एच.एस
तनुजा कोठियाल	इतिहास	एस.यू.एस / एस.एल.एस
प्रीति मान	नृविज्ञान	एस.डी.एस
अखा कैहरी माओ	शिक्षा	एस.ई.एस
भूमिका मैलिंग	अंग्रेजी	एस.यू.एस / एस.एल.एस
शैलजा मेनन	इतिहास	एस.यू.एस / एस.एल.एस
उर्फत अंजम मीर	समाजशास्त्र	एस.यू.एस / एस.एल.एस
रिक मित्रा	मनोविज्ञान	एस.एच.एस
अरुणा कुमार मोन्डिटोका	राजनीति विज्ञान	एस.डी.एस
उषा मुदिगन्ति	अंग्रेजी	एस.यू.एस / एस.एल.एस
तुहीना मुखर्जी	प्रबंधन	एस.बी.पी.पी.एस.ई
शुभ्रा नागलिया	मनोविज्ञान	एस.एच.एस
मानसी थपलियाल नवानी	शिक्षा	एस.ई.एस
रोहित नेगी	भूगोल	एस.एच.ई
धीरज कुमार नाईट	इतिहास	एस.यू.एस / एस.एल.एस
अंशुमिता पाण्डेय	मनोविज्ञान	एस.एच.एस
अनिल परसाद	इतिहास	एस.यू.एस / एस.एल.एस
विनोद आर.	मनोविज्ञान	एस.एच.एस
दीप्ति सचदेव	मनोविज्ञान	एस.एच.एस
नीतू सरीन	मनोविज्ञान	एस.एच.एस
रुक्मिणी सेन	समाजशास्त्र	एस.यू.एस / एस.एल.एस
अनिर्बान सेनगुप्ता	समाजशास्त्र	एस.डी.एस

गुंजन शर्मा	शिक्षा	एस.ई.एस
प्रवीण सिंह	इतिहास	एस.एच.ई
संतोष कुमार सिंह	समाजशास्त्र	एस.यू.एस / एस.एल.एस
योगेश स्नेही	इतिहास	एस.यू.एस / एस.एल.एस
विक्रम सिंह ठाकुर	अंग्रेजी	एस.यू.एस / एस.एल.एस
संजू थॉमस	अंग्रेजी	एस.यू.एस / एस.एल.एस
कांचरिया वेलेंटिना	प्रबंधन	एस.बी.पी.पी.एस.ई
धरित्री चक्रवर्ती	इतिहास	एस.यू.एस / एस.एल.एस
निधि कैकर	प्रबंधन	एस.बी.पी.पी.एस.ई
बेनिल बिस्वास	साहित्यिक कला	एस.सी.सी.ई
संतोष एस.	विजुअल आर्ट (दृश्य कला)	एस.सी.सी.ई
रमणीक खस्सा	गणित	एस.यू.एस / एस.एल.एस
प्रणय गोस्वामी	गणित	एस.यू.एस / एस.एल.एस
मौशुमि कन्दलि	विजुअल आर्ट (दृश्य कला)	एस.सी.सी.ई
राजन कृष्णन	सिनेमेटिक आर्ट	एस.सी.सी.ई
शेफाली जैन	विजुअल आर्ट (दृश्य कला)	एस.सी.सी.ई
बालचंद प्रजापति	गणित	एस.यू.एस / एस.एल.एस
सुरजीत दास	अर्थशास्त्र	एस.यू.एस / एस.एल.एस
लियोन एंजेलो मोरेनस	डिज़ाइन	एस.डी

अतिथि संकाय	शिक्षालय (स्कूल)
मोनिमलिका डे	सी.ई.सी.ई.डी
विनीता कौल	सी.ई.सी.ई.डी
डेनिस पी लेइटन	एस.यू.एस / एस.एल.एस
सिमोना साहनी	एस.एल.एस

सरोज बी.मलिक	एस.यू.एस / एस.एल.एस
देबब्रता पाल	एस.यू.एस / एस.एल.एस
शाद नावेद	एस.एच.एस
शांतनु डे रॉय	एस.यू.एस / एस.एल.एस
सुरजीत सरकार	सी.सी.के
जोगी पंघाल	एस.डी

अथिति / सहायक संकाय	शिक्षालय (स्कूल)
हेमंत श्रीकुमार	एस.सी.सी.ई
अमित परमेश्वरन	एस.सी.सी.ई
बेलिन्दर धनोवा	एस.सी.सी.ई
बिंदु मेनन मैनिल	एस.सी.सी.ई
सत्यकी रॉय	एस.एल.एस
इन्द्रनील मुखोपाध्याय	एस.एल.एस
रित्तविक चटर्जी	एस.एल.एस
विदेह उपाध्याय	एस.एच.ई
अनीता घई	एस.यू.एस
सौम्याजीत भट्टाचार्य	एस.डी.एस
गोपाला अरीन्द्रन	एस.एच.ई

परिशिष्ट–झ

प्रशासन कार्यालय में कर्मचारी

(31 मार्च 2013 तक)

शिक्षकेत्तर कर्मचारी (2012–2013)

I)	कुलपति कार्यालय	पद
1	कु. सर्मिष्ठा रॉय	विशेष कार्य अधिकारी
2	कु. बिंदु नायर ''	सहायक पंजीयक(रजिस्ट्रार)
3	कु. ममता असवाल	सहायक
4	श्री रुद्रेश सिंह नेगी	कार्यालय परिचारक
5	श्री संदीप	कार्यालय परिचारक

II)	उपकुलपति कार्यालय	पद
1	श्री अजय सिंह डांगी	कार्यालय परिचारक

III)	पंजीयक(रजिस्ट्रार)कार्यालय(निजी प्रभाग)	पद
1	श्री सत पाल	वरिष्ठ सलाहकार
2	कु. नीलिमा घिलदियाल	सहायक
3	श्री महेश कुमार	सहायक
4	श्री भूपेन्दर सिंह	सहायक
5	कु. रीतिका कटारमल	सहायक
6	कु. नीलू शर्मा	सहायक
7	कु.मीनाक्षी सिंह जुगरान	सहायक
8	श्री अशोक कुमार –1	कार्यालय परिचारक
9	कु. सुशीला देवी	कार्यालय परिचारक

IV)	पंजीयक (रजिस्ट्रार) कार्यालय (प्रशासन प्रभाग)	पद
1	श्री बी.बी कौल	वरिष्ठ सलाहकार
2	श्री आर.वी.आर. मूर्ति	वरिष्ठ सलाहकार
3	श्री सुभाष '	कनिष्ठ कार्यकारी
4	श्री बी.के.गुप्ता '	सहायक
5	श्री भूपेन्दर सिंह चौहान	सहायक
6	श्री सीता राम शर्मा	केयरटेकर (अभीक्षक)
7	श्री यतिंदर सिंह	केयरटेकर (अभीक्षक)
8	श्री दीपक	इलेक्ट्रीशियन (विद्युत कारीगर)
9	श्री मेवा लाल	इलेक्ट्रीशियन (अंशकालिक)
10	श्री दया चंद	उद्यान पर्यवेक्षक
11	श्री राज कुमार मौर्य	माली
12	श्री योगेश कुमार	माली
13	श्री रिजवान	माली
14	श्री रंजीत भुइमली	माली
15	श्री के. युधिष्ठिर	कनिष्ठ अभियंता(इंजीनियर)

V)	वित्त नियंत्रक कार्यालय	पद
1	श्री बी.के.सौम्यजुलू '	सहायक पंजीयक
2	श्री हरीश गुरनानी	वरिष्ठ सलाहकार
3	श्री अख्तर हसन	सलाहकार
4	श्री लक्ष्मीकान्त '	कनिष्ठ कार्यकारी
5	श्री अजय कुमार ठाकुर '	कनिष्ठ कार्यकारी
6	श्री संजीव सिंह चौहान '	सहायक
7	श्री मोहित जगोटा	सहायक
8	श्री नरेश कुमार सामरिया	कार्यालय परिचारक

VI)	आई.टी प्रभाग	पद
1	श्री नरेंद्र मिश्रा '	सहायक पंजीयक
2	श्री दीपक बिस्ला	जुनियर सिस्टम एडमिनिस्ट्रेटर
3	कु. प्रियंका पपरेजा	कनिष्ठ कार्यकारी
4	कु.सुनीता त्यागी '	तकनीकी सहायक
5	श्री मुकेश सिंह डांगी	तकनीकी सहायक
6	श्री रमीज़ काज़मी	तकनीकी सहायक
7	श्री मानस रंजन डकुआ	तकनीकी सहायक
8	श्री शम्भू शरण सिंह	तकनीकी सहायक
9	श्री सौरभ	डाटा एंट्री परिचालक
10	श्री रूद्र पाल	कार्यालय परिचालक
11	श्री आशु मान	कार्यालय परिचालक
12	श्री अजय कुमार	कार्यालय परिचालक

VII)	पुस्तकालय	पद
1	डॉ.देबल सी. कार	पुस्तकालयाध्यक्ष
2	श्री रविंदर रावत	प्रोफेशनल असिस्टेंट (वृत्तिक सहायक)
3	कु. मंजू	प्रोफेशनल असिस्टेंट (वृत्तिक सहायक)
4	श्री इदरीश अहमद	पुस्तकालय प्रशिक्षणार्थी
5	श्री ओम प्रकाश मिश्रा	पुस्तकालय प्रशिक्षणार्थी
6	कु. नेन्सी चावला	पुस्तकालय प्रशिक्षणार्थी
7	कु. मीनाक्षी	पुस्तकालय प्रशिक्षणार्थी
8	कु. रज़िया	पुस्तकालय प्रशिक्षणार्थी
9	श्री शशिकान्त मिश्रा	पुस्तकालय प्रशिक्षणार्थी
10	श्री अरुण कुमार	पुस्तकालय प्रशिक्षणार्थी
11	श्री अनवर अहमद	पुस्तकालय प्रशिक्षणार्थी
12	अलका राय	सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष
13	श्री संजय सिंह रावत	कार्यालय परिचारक
14	श्री नेक्सन	कार्यालय परिचारक
15	कु. पिंकी	कार्यालय परिचारक

VIII) योजना प्रभाग		पद
1	श्री पी.मणि	वरिष्ठ सलाहकार
2	श्री समीर खान	कनिष्ठ कार्यकारी
3	कु. अनीता रावत	सहायक
4	श्री शिव चरण	कार्यालय परिचारक

IX) अधिष्ठाता कार्यालय– अकादमिक सेवाएं		पद
1	श्री पी.के. कटारमल	वरिष्ठ सलाहकार
2	श्री मनीष वर्मा '	कनिष्ठ कार्यकारी
3	श्री युसूफ रज़ा नकवी	सहायक
4	श्री राज कुमार	सहायक
5	श्री नवीन कुमार	कार्यालय परिचारक

X) अधिष्ठाता कार्यालय– विद्यार्थी सेवाएं		पद
1	श्री राजीव कुमार ''	सहायक पंजीयक
2	श्री एम.आर. कपूर	सलाहकार
3	श्री अजय तलवार	सहायक
4	श्री मनमोहन सिंह असवाल	सहायक
5	कु. अरुणिमा शुक्ला	सहायक
6	श्री नितिन चौधरी	सहायक
7	अंजना कुमारी	सहायक
8	श्री सुमित सोलंकी	कार्यालय परिचारक

XI) अधिष्ठाता कार्यालय– विकास अध्ययन शिक्षालय		
1	कु. संगीता	सहायक
2	श्री शफीक अहमद	कार्यालय परिचारक

XII) अधिष्ठाता कार्यालय–मानव पारिस्थितिकी अध्यय शिक्षालय		
1	कु. सुमन नेगी	सहायक
XIII) अधिष्ठाता कार्यालय–मानव अध्ययन शिक्षालय		
1	श्री संतोष थॉमस	कनिष्ठ कार्यकारी
2	कु. अनिका कक्कड़	सहायक
3	श्री संदीप कुमार – स	कार्यालय परिचारक
XIV) अधिष्ठाता कार्यालय– स्नातक अध्ययन शिक्षालय		
1	श्री सी.एल.पाल '	कनिष्ठ अधिकारी
2	कु. आशा देवी डी.	सहायक
3	श्री संदीप कुमार –सस	कार्यालय परिचारक
XV) अधिष्ठाता कार्यालय– व्यापार लोक नीति एवं सामाजिक उद्यमिता अध्ययन शिक्षालय		
1	श्री दीपक कुमार	सहायक
XVI) अधिष्ठाता कार्यालय – ललित अध्ययन शिक्षालय		
1	कु. पूनम पेटवाल	सहायक
2	श्री अशोक कुमार – स	कार्यालय परिचारक
XVII) अधिष्ठाता कार्यालय – शिक्षा अध्ययन शिक्षालय		
1	कु. गीता चोपड़ा '	सहायक
2	श्री राजिन्दर सिंह	सहायक अभीक्षक (केयरटेकर)
XVIII) अधिष्ठाता कार्यालय – संस्कृति एवं रचनात्मक अभिव्यक्ति अध्ययन शिक्षालय		
1	कु. रमनजीत कौर '	कनिष्ठ कार्यकारी
XIX) प्रारंभिक बाल शिक्षा एवं विकास केंद्र (सी.ई.सी.ई.डी)		
1	श्री अनिल सिंह रावत	सहायक

XX) अधिष्ठाता कार्यालय – डिजाइन अध्ययन शिक्षालय		
1	श्री निशांत मैसी	सहायक

' प्रतिनियुक्ति पर

'' स्थायी रूप से

कुल = 99	स्थायी = 03	प्रतिनियुक्ति = 11	अनुबंध पर = 85

परिशिष्ट–ञ

31–03–2013 समाप्ति वर्ष के आय और व्यय का बहीखाता :–

विभाग की प्राथमिक जिम्मेदारियाँ हैं विश्वविद्यालय अनुदान और प्राप्तियों (रसीदों) का रख–रखाव, बजट अनुमान की तैयारी, स्टॉफ के सदस्यों का भुगतान, आपूर्ति सामग्री एवं प्रतिपादन सेवाओं के लिए बाहरी एजेंसियों को भुगतान, बाहरी एजेंसियों द्वारा प्रायोजित परियोजनाओं की धनराशि का रख–रखाव, खर्च पर नियंत्रण एवं निगरानी रखना, वार्षिक खातों का संकलन, वित्तीय सहमति का अनुदान, विधिक और सरकारी लेखा परीक्षकों के साथ आंतरिक लेखा परीक्षण और समन्वयन का संचालन करना।

2012–13 समाप्ति वर्ष की प्राप्ति और व्यय का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :–

(रु. कराड़ों में)

विवरण	योजना	गैर –योजना
क. प्राप्ति		
डीएचई से अनुदान सहायता,	20. 00	–
राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार	1. 07	–
से पिछले वित्तीय वर्ष 2011–12 से अधिशेष		
बजट अनुमान 2012–13 के तहत प्राप्त		
आंतरिक स्रोत		
अ. पाठ्यक्रम शुल्क	3.03	
ब. विविध प्राप्तियां	0.06	
ख. व्यय		
वर्ष 2012 –13 के खर्चे	21.70	

वार्षिक बहीखाते का परीक्षण सनदी लेखाकार (चार्टर्ड अकाउंटेंट) द्वारा किया जा चुका है और ईएलएफए का लेखा परीक्षण होना अभी बाकी है।

एयूडी का वित्तिय खर्च (रू. करोड़)

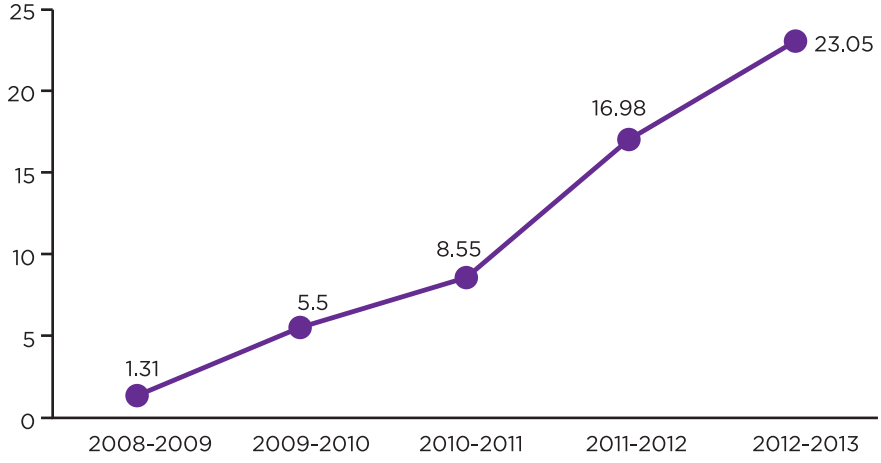

Notes

AUD

Lothian Road, Kashmere Gate, Delhi-110006

www.aud.ac.in